—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
**मासिक सच्चा राही !**
मजलिसे सहाफत व नशरियात
· पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
· e-mail :
nadwa@sancharnet.in

## सहयोग राशि

| | |
|---|---|
| एक प्रति | रु० 9/– |
| वार्षिक | रु० 100/– |
| विशेष वार्षिक | रु० 500/– |
| विदेशों में (वार्षिक) | 25 यूएस डालर |

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
**"सच्चा राही"**
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

हिन्दी मासिक
# सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

फरवरी, 2006 | वर्ष 4 | अंक 12

## सबसे अच्छी ज़िन्दगी

**सबसे अच्छी ज़िन्दगी वह बसर करता है जो अपनी ज़िन्दगी में किसी को शरीक करता है, और सबसे बुरी ज़िन्दगी उसकी है जिसके साथ कोई दूसरा ज़िन्दगी न बसर कर सके।**

(हसन बिन अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका **वार्षिक** चन्दा समाप्त हो चुका है।
कृपया अपना **वार्षिक** चन्दा जल्द भेजिए।

# विषय एक नज़र में


| | | |
|---|---|---|
| ❐ | हज़रत हसन हज़रत हुसैन रज़ि० | सम्पादकीय.....3 |
| ❐ | कुर्आन की शिक्षा | मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) ..... 5 |
| ❐ | प्यारे नबी की प्यारी बातें | अमतुल्लाह तस्नीम ..... 6 |
| ❐ | दीने इस्लाम का मिज़ाज | मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी ..... 7 |
| ❐ | सीरतुन्नबी | अल्लामा शिब्ली नोमानी..... 10 |
| ❐ | संक्षिप्त इस्लामी इतिहास | मौ० अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी..... 14 |
| ❐ | तेज़ होने लगी दिल की धड़कन | राज़ इलाहाबादी ..... 15 |
| ❐ | निकाह आसान था | आमिल सिद्दीकी ..... 16 |
| ❐ | आपके प्रश्नों के उत्तर | इदारा ..... 17 |
| ❐ | जिन्न देखा नहीं जा सकता | अबू मर्गूब ..... 18 |
| ❐ | रूबोट | हबीबुल्लाह आजमी ..... 19 |
| ❐ | धर्म | डा० ..... 20 |
| ❐ | तर्बियत | माख़ूज़..... 21 |
| ❐ | वैदिक काल की सभ्यता | इदारा ..... 23 |
| ❐ | मौजूदा दौर के लीडर और .... | इदारा..... 25 |
| ❐ | सेब का जूस | इदारा ..... 28 |
| ❐ | डा० अब्दुल्लाह अब्बास की वफात | डा० मुईद अशरफ़..... 29 |
| ❐ | इस्लाम में औरत का स्थान | सुरय्या ख़ानम ..... 30 |
| ❐ | नुबूव्वते मुहम्मदी के ख़िलाफ़ मिर्जा····· | मौ० मु० आ़रिफ़ संभली..... 31 |
| ❐ | इस्लाम का अक़ीद-ए-रिसालत और अवतारवाद | अबू मर्ग़ूब..... 37 |
| ❐ | अन्तर्राष्ट्रीय समाचार | हबीबुल्लाह आज़मी..... 40 |


❐❐❐

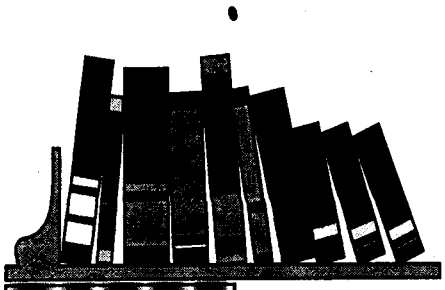

# हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा

*डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी*

अलहसनु वलहुसैनु यय्यिदा शबाबि अहलिल् जन्नति (हदीस) (हसन और हुसैन जन्नत के जवानों के सरदार हैं)

दुन्या में शायद ही कोई मुसलमान हो जो इन दोनों नामों से नावाक़िफ़ (अपरिचत) हो। चाहे उन की सीरतों (जीवनियों) से नाबलद (अनभिज्ञ) हो मगर उनके नामों से उनके कान आशना (अवगत) ज़रूर हैं। यह दोनों हज़रात अल्लाह के नबी, हमारे हुज़ूर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महबूब (प्रिय) नवासे, आपकी चहेती बेटी हज़रत फ़ातिमा और शेरे ख़ुदा हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के लाडले बेटे थे। अल्लाह तआला इन सब से राज़ी हो।

## हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु

हजरते हसन, हज़रते अली व हज़रत फ़ातिमा के पहले बेटे हैं, लक़ब (उपाधि) रैहानतुन्नबी और कुन्नीयत (रिश्ते का नाम) अबू मुहम्मद था। १५ रमज़ान या शअ्बान सन् ३ हिज्री में मदीना तैयिबा में पैदा हुए। हज़रत अली ने बेटे का नाम हर्ब रखा, हर्ब का अर्थ लड़ाई है अतः अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बदल कर हसन रखा हसन का अर्थ है अच्छा, नेक (उपकारी) हज़रत हसन की पैदाइश पर हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बहुत ख़ुश हुए, कान में अजान दी, अपना थूक चटाया, सातवें दिन दो मेंढे जब्ह कर के अकीका किया।

सहीह बुख़ारी में हज़रत अबू बकरह से रिवायत है कि (एक बार) :

"रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मिम्बर पर थे और हसन (रज़ि०) आपके पहलू में बैठे हुए थे, आप एक मर्तबा लोगों की तरफ़ देखते थे एक मर्तबा हसन की तरफ़ (इसी हाल में) फ़रमाया यह मेरा बेटा सय्यिद है (सरदार है) और उम्मीद है कि अल्लाह तआला इसके जरीअे से मुसलमानों के दो गिरोहों के दर्मियान सुल्ह कराएगा।"

यह रिवायत बहुत ही अहम्म और क़ाबिले ग़ौर है। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) के बअ्द हज़रत अबू बक्र फिर हज़रत उमर और फिर हज़रत उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हुम) खलीफ़ा हुए, इन सभी को आप प्रिय रहे और इनके कालों में हर तरह सम्मानित रहे। सन् २६, ३० हिज्री में हज़रत उस्मान (रज़ि०) के ज़माने में जब उनके हुक्म से हज़रत सईद बिन आस ने तबरिस्तान पर लशकर कशी (आक्रमण) की तो मुजाहिदीन में हज़रत हसन (रज़ि०) भी शरीक थे।

जब हज़रत उस्मान (रज़ि०) का घर बाग़ियों ने घेर लियाा और हज़रत उस्मान ने सहाबा (रज़ि०) को उनसे मुक़ाबले की इजाज़त न दी तो कुछ सहाबा ने अपने नवजवान बेटों को हज़रते उस्मान की हिफाज़त के लिए उनके दरवाज़े पर मुक़र्रर किया उनमें अपने छोटे भाई हुसैन के साथ हज़रत हसन (रज़ि०) भी थे। बाग़ियों से मुडभेड़ में हज़रत हसन ज़ख़्मी भी हुए थे और जब बाग़ियों ने पीछे की छत से आकर हज़रते उस्मान (रज़ि०) को शहीद कर डाला और हज़रत अली को ख़बर हुई तो हज़रत अली (रज़ि०) आए और हज़रत हसन को थप्पड़ मारा तो उन्होंने मअ़ज़िरत (आपत्ति) की कि बाग़ी पीछे से आए हम को मअ़लूम न हो सका।

यह वही हज़रत उस्मान हैं जिन के ख़िलाफ़ कुछ लोग बदज़बानी करते हैं हालांकि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आगे पीछे दो–दो बेटियों के शौहर और हज़राते हस्नैन के ख़ालू हैं और जिन की हिफ़ाज़त में हज़राते हस्नैन ने पहरा दिया और ज़ख्म खाए।

सन् ४० हि० में जब बदबख़्त इब्नि मुलजिम ने हज़रत अ़ली को शहीद कर दिया तो उनके कफ़न दफ़न के बअ़द कूफ़े की जामिअ़ मस्जिद में बीस हज़ार से ज़ियादा लोगों ने आप की ख़िलाफ़त की बैअ़त की इस तरह आप पांचवें खलीफ़–ए–राशिद हुए लेकिन हज़रत मुआ़विय़ा (रज़ि०) ने आप की ख़िलाफ़त को न माना यह उनका इज्तिहाद था। दोनों हज़रात सहाबी थे। अगर हज़रत मुआ़विया से इज्तिहाद में चूक भी हुई हो तो एक सवाब तो उनको मिलना ही है।

मुसलसल जंगों और अपने साथियों की कोताहियों से जब हज़रत हसन (रज़ि०) ऊब गये तो हज़रत मुआ़विया से उनके हक़ में सुल्ह़ कर ली।

## यहां दो बातें क़ाबिले ग़ौर हैं।

ह़दीस में आता है कि ख़िलाफते राशिदा ३० साल और ह़ज़रते ह़सन की सुल्ह़ के वक़्त तीस साल पूरे हो रहे थे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि "यह मेरा बेटा सय्यिद है और उम्मीद है कि यह मुसलमानों के दो गिरोहों के दर्मियान सुल्ह़ कराएगा।

चुनांचि ऐसा ही हुआ, ह़ज़रत ह़सन ने ह़ज़रत मुआ़विया से सुल्ह़ करके मुसलमानों के दो बड़े गिरोहों को मिला दिया। सुल्ह़ की शर्तें जो ह़ज़रत ह़सन (रज़ि०) की तरफ़ से पेश की गईं और जिन को ह़ज़रत मुआ़वियां ने मंजूर किया और सुल्ह़ हो गई वह यह थीं।

१. सब लोगों को बिना किसी भेद भाव के अमान (शरण) दी जाएगी और कोई इराक़ी (जो ह़ज़रत ह़सन के सहयोगी थे) मह़ज़ बुग़्ज़ व कीना की बिना पर पकड़ा न जाएगा।

२. सूब–ए–अहवाज़ का कुल ख़िराज (राजस्व कर) ह़ज़रत ह़सन (रज़ि०) के लिए मख़्सूस होगा और ह़ज़रत ह़ुसैन को दो लाख दिरहम सालाना अलग दिये जाएंगे।

३. सिलात और अतीयात (राज्य प्रदान) में बनू हाशिम (ह़ज़रत ह़सन का कुल) को बनू उमय्या (ह़ज़रत मुआ़विया का कुल) पर तरजीह़ (प्राथमिकता) दी जाएगी।

यह सुल्ह़ (सन्धि) जुमादल ऊला सन् ४१ में हुई। सुल्ह़ के पश्चात कुछ लोगों की आपत्ति दूर करने हेतु ह़ज़रत हसन (रज़ि०) ने यह बयान दिया :

लोगो ! हमारे अगलों के जरीअ़े अल्लाह तआ़ला ने तुम को हिदायत दी (सत्य मार्ग दिया) और पिछलों के जरीअ़े तुम्हारी ख़ूंरेजी (रक्तपात) बन्द कराई। दानाइयों में बेहतरीन दानाई तक़्वा (बुद्धिमानियों में उत्तम बुद्धिमानी संयम) और इज्ज़ में सब से बुरा इज्ज़ फुजूर है और यह ख़िलाफत की बात जो हमारे और मुआ़विया के बीच झगड़े की सबब बनी तो या तो वह मुझ से ज़ियादा ह़क़दार हैं या यह मेरा ह़क़ है। जिससे मैं अल्लाह की ख़ुशनूदी (प्रसन्नता) उम्मते मुह़म्मदीया की इस्लाह़ और तुम लोगों को ख़ूंरेजी (रक्त पात) से बचाने की ख़ातिर उससे अलग होता हूं।

सन्धि के पश्चात आप अपने बाल बच्चों के साथ मदीना तय्यिबा आ गये और वहीं जिन्दगी गुज़ारी अहवाज़ के ख़िराज से दस लाख दिरहम सालाना की आमदनी थी जिसे अल्लाह की राह में ख़ूब ख़र्च करते। आप ने बहुत से निकाह़ किये, मुख़्तलिफ बीवियों से आठ लड़के पैदा हुए जिन के नाम यह हैं –

ह़सन मुसन्ना, ज़ैद, उमर, क़ासिम, अबू बक्र, अब्दुर्रह़मान, तलह़ा और उ़बैदुल्लाह। यहां अबू बक्र व उ़मर के नामों से गुरेज़ करने वाले सबक़ लें।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

# क़ुरआन की शिक्षा

मौ० मुहम्मद उवैस नदवी

### *अल्लाह और उसके रसूल की इताअत :*

अनुवाद : ऐ ईमान वालो अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो। (अन्निसाअ : ५६)

जब हम अल्लाह को अपना मअबूद (उपास्य) और रसूलुल्लाहु (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को खुदा का सच्चा रसूल मान चुके हैं तो अब उन की बताई गई किसी बात पर शक न करना चाहिए बल्कि पूरे यकीन के साथ इन हुक्मों पर चलना चाहिए। अगर मुसलमान के दिल में खुदा और रसूल के हुक्म के खिलाफ तंगी है तो यह ईमान की कमी है। कुर्आन में है। अनुवाद : "सो कसम है तेरे रब की वह मोमिन न होंगे, जब तक वह तुझ को अपने आपस के झगड़ों में हकम न मानें, फिर अपने दिलों में तेरे फैसले से तंगी न पावें और मान कर कबूल करें। (अन्निसाअ : ६५)

मुसलमान की शान तो यह है कि जिस चीज के मुतअल्लिक उस को मालूम हो जाए कि इस में खुदा और रसूल की खुशी है उस पर पूरी तरह जम जाए और उसके खिलाफ करने का दिल में खयाल भी न लाए। फरमाया :किसी ईमानदार मर्द या औरत का यह काम नहीं कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी बात पर फैसला कर दें तो भी उस को अपने काम में इख्तियार रहे। और जो उस के और उस के रसूल के बेहुक्म चला वह खुला हुआ गुमराह हुआ। (अहजाब : ३६)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि जिस में तीन चीजें होंगी वह ईमान की लज्जत पाएगा उनमेंसे एक यह है कि खुदा और रसूल उस को हर चीज से जियादा प्यारे हों यानी दूसरों के मुकाबले में उन की बात मानें, उन्हीं की पैरवी करें।

### *हाकिम की इताअत :*

अनुवाद : और (हुक्म मानो) हाकिमों का जो तुम में से हों।(अन्निसाअ :५६)

इस आयत के मतलब को जरा गौर से समझो। मुसलमानों के लिए जरूरी है कि वह जहां भी हों, गांव में हों, कस्बा और शहर में हों या पूरे मुल्क में हों, मुसलमानों की हुकूमत में हो या काफिर की अमलदारी में हों अपने लिए एक मुसलमान सरदार चुन लें और उसी के जरीअे से आम मुसलमानों पर दीन और दुन्या के हुक्म जारी करें। हर मुसलमान पर उस सरदार की पैरवी जरूरी है।

मुसलमानों के दीन और दुन्या के कामों की देख भाल, अम्न का काइम करना इस्लामी कानून जारी करना, इस्लाम की शान बाकी रखना यह सब दीन के काम हैं। इस्लाम यह नहीं चाहता कि मुसलमानों की आबादी का कोई हिस्सा भी जानवरों के रेवड़ की तरह किसी इन्तिजाम के बिना जिन्दगी गुजारे। यह दीनी काम और यह इन्तिजाम किसी हाकिम के बिना पूरा नहीं हो सकता है। इसी लिए अपने ऊपर एक हाकिम बनाना मुसलमानों के लिए जरूरी है अगर वह ऐसा न करेंगे तो गुनाहगार होंगे। उसी हाकिम को खलीफा, इमाम और अमीर कहते हैं।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया तुम में से जो शख्स इस की ताकत रखता हो कि बिना इमाम के न एक रात गुजारे न एक दिन तो वह ऐसा ही करे यानी सम्भव हो तो इमाम मुकर्रर कर ले और बे इमाम के एक सुब्ह या एक शाम भी न गुजारे। फरमाया जब तीन शख्स भी सफर को जाएं तो जरूरी है कि उनमें से एक को अपने लिए अमीर बना लें। देखो एक मामूली सफर में भी अमीर बना लेने का हुक्म है फिर खयाल करो कि मुसलमानों की पूरी आबादी किसी खलीफा या अमीर के बिना कैसे रह सकती है।

उस खलीफा, अमीर और इमाम का फर्ज होगा कि इन्साफ से काम करे मुसलमानों पर दीनी अहकाम जारी करे, उन के हर नफा और नुक्सान का ख्याल रखे, उनके मशवरे से इन्तिजाम करे और मुसलमानों के लिए जरूरी है कि जब तक अमीर गुनाह का हुक्म न दे, उसकी हर बात मानें और उसकी

(शेष पृष्ठ १६ पर)

# प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

## साबित क़दमी

१/७६. हजरत अबू अम्रः सुफयान बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह। मुझको इस्लाम के बारे में ऐसी बात बतला दीजिए कि मैं फिर किसी से न पूछूं। आपने फरमाया – कहो आमन्तु बिल्लाहि और फिर इस पर साबितकदम रहो। (मुस्लिम)

## कोई महज अपने अमल से नजात न पायेगा

२/२०. हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, एतिदाल से काम लो और मियाना रवी इख्तियार करो। याद रखो कि कोई महज अमल की वजह से नजात नहीं पा सकता। उन्होंने कहा न आप? फरमाया न मैं, मगर यह कि अल्लाह तआला मुझको अपनी रहमत व फज्ल से ढांप ले। (मुस्लिम)

## फित्नों से पहले नेक आमाल में जल्दी

१/८१. हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया – नेक आमाल में जल्दी करो, अन्करीब रात के तारीक टुकड़ों की तरह फित्ने होंगे। सुबह को आदमी मोमिन होगा और शाम को काफिर और शाम को मोमिन होगा और सुबह को काफिर। आदमी अपने दीन को दुनिया के थोड़े नफे के लिए बेचेगा। (मुस्लिम)

## आँ हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोना रक्खे रहने से बेकरारी

२/८२. हजरत उकबः (र०) बिन अलहारिस से रिवायत है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे अस्र के वक्त नमाज पढ़ी, आपने सलाम फेरा और जल्दी से लोगों की गर्दनों को फांदते हुए अपनी किसी बीवी के हुजरे की तरफ तशरीफ ले गये। लोग आपकी इस कद्र जल्दी से घबरा गये। जब आप तशरीफ लाये और लोगों को अपनी जल्दी की वजह से तअज्जुब करते देखा तो फरमाया, मैं कुछ सोना रखकर भूल गया था, मुझे उसका रोक रखना नापसन्दा हुआ, उसकी तकसीम का हुक्म देने गया था।

और एक रिवायत में है कि मैंने कुछ सोना सदकः का घर में छोड़ दिया था, मुझे नापसन्द हुआ कि उस पर रात गुजरने दूं।

३/८३. हजरत जाबिर (र०) से रिवायत है कि एक आदमी ने उहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा, यह फरमाइये अगर मैं कत्ल किया जाऊँ तो मेरा ठिकाना कहाँ होगा? आपने फरमाया जन्नत में। पस जो उनके हाथ में खजूरें थीं फेंक दीं, फिर जंग शुरू कर दी यहाँ तक कि शहीद हो गये। (बुखारी, मुस्लिम)

## सदकः का सही वक़्त

४/८४. हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा, या रसूलल्लाह ! कौन सा सदकः अज्र में जियादः बड़ा है। आपने फरमाया, ऐसी हालत में कि तुम तन्दुरूस्त हो, माल की हिर्स रखते हो, फक्र (मुफिलसी) से डरते हो और दौलत की उम्मीद करते हो फिर ढील न दो, ऐसा न हो कि हलक को रूह पहुंच जाये और कहो – यह फुलां के लिए है, यह फुलां के लिए है। हालाँकि वह तो फुलां के लिए हो चुका । (बुखारी, मुस्लिम)

## खैर में एक दूसरे से मुसाबकत

५/८५. हजरत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उहद के दिन एक तलवार ली और फरमाया, यह कौन लेगा? हर आदमी ने अपने हाथ बढ़ाये और हर एक कहता था– मैं, मैं। आपने फरमाया, कौन इसको हक के साथ लेगा? यह सुनकर लोग हट गये। हजरत अबू दुजान (र०) ने कहा मैं इसको इसके हक के साथ लूंगा। फिर उसको लिया और उससे दुश्मनों के सर फाड़ दिये। (मुस्लिम)

## बद से बदतर

६/८६. हजरत जुबैर (र०) बिन अदी से रिवायत है कि हम अनस (र०) बिन मालिक के पास आये और हमने हज्जाज की बदसुलूकियों की शिकायत की। उन्होंने कहा सब्र करो। ऐसा

(शेष पृष्ठ १३ पर)

# दीने इस्लाम का मिज़ाज

## और उसकी ख़ास-ख़ास बातें

मौ० स० अबुल हसन अली हसनी

अहले सुन्नत वलजमाअत के अक़ायद, सही अक़ायद का हक़ीक़ी सरचश्मा।

नबियों के जरिये जो उलूम इन्सानों तक पहुंचे हैं उनमें सब से आला, अहम और जरूरी इल्म खुदा की जात व सिफात का इल्म है। इस इल्म के मरकज सिर्फ अंबियाकिराम हैं क्योंकि इस इल्म के वसायल और इसकी इब्तेदायी मालूमात भी आम इन्सानों की पहुंच से बाहर है। यहां कयास की कोई गुंजाइश नहीं। खुदा का कोई शबीह व नजीर नहीं और वह हर तरह से इन्सानी ख्याल व मुशाहदा और एहसास से परे है। यहां अकल व जेहानत भी कुछ मदद नहीं कर सकती क्योंकि यह वह मैदान नहीं जहां अकल के घोड़े दौड़ाये जायें।

यह इल्म इसलिए सबसे अफजल ठहराया गया कि इसी पर इन्सानों की सआदत और फलाह मौकूफ है और यही अकायद व अखलाक की बुनियाद है। इसके जरिये इन्सान अपनी हकीकत से वाकिफ होता, कायनात की पहेली बुझाता और ज़िन्दगी का राज़ मालूम करता है। इसी लिए हर कौम व नस्ल और हर दौर में इस इल्म को सबसे बुलन्द दर्जा दिया गया है। और हर संजीदा इन्सान ने इस इल्म से गहरी दिलचस्पी रखी है। इस इल्म से नावाकफियत ऐसी महरूमी का सबब है जिस के बाद कोई महरूमी नहीं।

इस सिलसिले में पुराने जमाने में आम तौर पर दो तब्के रहे हैं –

एक तब्का वह है जिसने इस इल्म को पाने के लिए खुदा के नबियों पर भरोसा किया और उनका दामन थामा। नबियों को अल्लाह ने अपनी सही मारिफत अता की और अपनी जात व सिफात की वाकफियत के लिए उन्हें अपने और अपनी मखलूक के दरमियान वास्ता बनाया और उन्हें यकीन व "नूर" की वह दौलत अता की जिससे ज्यादा ख्याल भी नहीं किया जा सकता –

तर्जुमा : और इस तरह हम इब्राहीम को आसमान और जमीन की बादशाहत के जलवे दिखाते थे ताकि वह खूब यकीन करने वालों में हो जायें। (सूर : अनआम –७५)

हजरत इब्राहीम अ० अपनी कौम को जब वह उन से खुदा की जात व सिफात के बारे में टेढ़े मेढ़े सवाल कर रही थी, जवाब देते हैं :– तर्जुमा : "क्या तुम मुझसे अल्लाह के बारे में कटहुज्जती करते हो हालांकि उसने मुझे हिदायत दी है। (सूरः अनआम – ८०)

इस गिरोह के लोगों ने नबियों का दामन थाम कर उनके अता किये हुए अकायद व हकायक की रौशनी में अपने गौर व फिक्र का सफर शुरू किया और उसकी मदद से अमल सालेह, तजकिये नफ्स, और तहजीबे अखलाक का काम सही तौर पर अंजाम दिया। उन्होंने अक्ल से काम लेना छोड़ा नहीं सिर्फ यह किया कि उसको सही रास्ते पर डाल कर उससे वह खिदमत ली जो उसके करने का काम और उसका असली फायदा था। इससे उनके ईमान व यकीन को ताकत हासिल हुई :–

तर्जुमा : "और इससे उनके ईमान व इताअत मैं इजाफा व तरक्की ही हुई।" (सूर : अहजाब – २२)

दूसरा गिरोह वह है जिसने अपनी जेहानत और इल्म पर पूरा पूरा भरोसा किया, अकल की लगाम आजाद छोड़ दी और कयास के घोड़े दौड़ाये और अल्लाह की जात व सिफात का तजजिया इस तरह शुरू किया जिस तरह किसी साइंस की तजरबागाह में किया जाता है। और अल्लाह के बारे में "वह ऐसा है" वह ऐसा नहीं है" के बेधड़क फैसले करने शुरू कर दिये। इनके यहां "वह ऐसा है" के मुकाबले में "वह ऐसा नहीं है" की भरमार है, और यह बात सच है कि जब इंसान यकीन व रोशनी से महरूम हो, तो उसके लिए 'नहीं' 'हां' से अधिक सरल होता है। इसीलिए यूनानी फलस्फये इलाहियात में नतायज, बहस व तहकीक अकसर मनफी है। कोई दीन, कोई तहजीब कोई निजामे हयात "नफी" पर कायम नहीं होता। यह अंबियाकिराम की शान नहीं। वह "मावराये हिस्स व अकल" हकायक के बारे में "दीदये बीना और गोश शुनवा" रखते हैं।

इसीलिए यूनान का इलाहियाती फल्सफा मुतजाद ख्यालात व नजरियात का एक जंगल है जिसमें आदमी गुम हो जाये। यह एक ऐसी भूल भुलैया है जिस में दाखिल होने के बाद निकलने का रास्ता नहीं मिलता। इस गिरोह में सब से आगे वह यूनानी फिलास्फर्स हैं जो पुराने जमाने से अपनी जेहानत, फल्स्फे में नये नये नुक्ते निकालने तथा इल्म व फन के मैदान में अपना एक मकाम रखने के लिए मशहूर रहे हैं। मगर चूंकि इल्मे इलाहियत में इनमें से किसी चीज का दखल नहीं है इसलिए उनकी सारी कोशिशें बेकार गईं। और वह इस अथाह समुद्र में इस तरह गोता लगाते रहे जिसकी तरजुमानी कुरआन की यह आयत करती है –

तर्जुमा : "गहरे समन्दर की अन्धेरी, और समन्दर की लहरों (की चादर) ने ढॉक रखा हो। एक लहर के ऊपर दूसरी लहर, और लहरों के ऊपर बादल छाया हुआ, गोया तारीकियां ही तारीकियां हों, एक तारीकी पर दूसरी तारीकी, आदमी अगर खुद अपना हाथ निकाले तो उम्मीद नहीं कि सुझाई दे, और जिस किसी के लिए अल्लाह ही ने उजाला नहीं किया तो फिर उसके लिए रौशनी में क्या हिस्सा हो सकता है।" (सूर : नूर –४०)

उनके पास न कोई हिदायत थी न रौशनी। न इल्म व इरफान की कोई किरन थी न बुनियादी मालूमात का कोई सहारा था जिसके जरिये (मजहूल) तक पहुंचना मुम्किन होता है; उनके फलस्फे और शेर व शायरी में शिर्क व बुतपरस्ती रची बसी थी जो उनको नस्ल दर नस्ल विरासत में मिलती चली आ रही थी। इसका नतीजा था कि उनका इलाहियाती फल्सफा, ग्रीक माइथालोजी और फल्सफा का एक मिक्सचर बन कर रह गया अगरचे उन्होंने अपने नजरियात के बड़े ऊंचे और शानदार नाम रख रखे थे।

हिन्दुस्तान के अलावा जो अपने खास फल्सफा और देवमाला में मशहूर रहा है, आम तौर पर मुख्तलिफ कौमों के फिलास्फर्स ने उन्हीं की नकल की और हिसाब व इल्मे हिन्दसा में उनकी महारत व फनकारी का लोहा मान कर उन पर आंख बन्द करके ईमान ले आये। हमेशा से इन्सानों की यह कमजोरी रही है कि जब वह किसी एक मैदान में किसी फर्द या जमाअत का लोहा मान लेते हैं तो दूसरे मैदानों में भी उसी की इमामत के कायल हो जाते हैं। और इसमें वह किसी बहस या तहकीक की जरूरत महसूस नहीं करते और जो ऐसा करे वह उनके नजदीक नादान और हठधर्म है।

जहां तक उन कौमों का तअल्लुक है जो पुराने जमाने से अपने दीनी सरमाया को खो बैठीं और हिदायत व नूर से अकसर महरूम हो गईं हैं, उनका यह तर्जे अमल कोई तअज्जुब की बात नहीं। तअज्जुब तो उन "मुसलमान दानिशवरों।" पर है जिन को अल्लाह ने नबूवते मोहम्मदी और किताबे इलाही की दौलत से नवाजा है। वह किताब जिसके बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है।

तर्जुमा :, "उस पर गलती का दख्ल न आगे से हो सकता है न पीछे से (यह) दाना और खूबियों वाले (खुदा) की उतारी हुई है।" (सूर : सज्दा – ४२)

पिछली सदियों में इस्लामी दुनिया के बहुत से इल्मी व दरसी हल्कों ने इस फल्सफा को ज्यों का त्यों तसलीम कर लिया और उसपर संजीदा बहसें शुरू कर दीं। और इनमें से बहुतों ने कुरआनी आयात को इसका ताबे बनाया और इनकी बेमाना तावीलें की और उनकी इस तरह तफसीर की कि वह कानूनी इलाहियाती फल्सफा से मेल खा जायें। ऐसा करने में उनसे अक्सर गल्तियां हुई क्योंकि वह खुदा को इन्सान और अपने महदूद तजरबात पर कयास कर रहे थे। वह भूल गये कि वह सिफाते इलाही हैं जिन का वजूद इन "लवाजिम" (जिस्मियत) का मुहताज और पाबन्द नहीं है।

मुसलमानों को एक मुतकल्लिम (बात करने वाला) की जरूरत थी जो किताब व सुन्नत और सलफ के अकायद पर अपने गौर व फिक्र की बुनियाद रखे, और फल्सफा व इल्मे कलाम को बहस के काबिल समझे जिसकी कुछ बातें मानी जा सकती हैं। और कुछ नहीं भी मानी जा सकती हैं। यूनानी फलसफा का सिर्फ वह हिस्सा कबूल करे जो सही दलील से साबित हो। वह अरस्तू वगैरा को खुदाये अलीम व खबीर का दर्जा न दे न उन्हें खता से महफूज अंबियाये मासूमीन समझे। उन्हें कुछ ऐसे बड़े आलिमों की जरूरत थी जो फल्सफा पर पूरी दस्तरस रखते हों और यूनानी फिलास्फरों से आंखें मिला कर बातें कर सकें। उनका कुरआन पर पूरा पूरा ईमान हो और जो फलस्फा और उसके भारी भरकम इस्तेहालात की गुलामी से हर तरह आजाद हों। वह इस हदीस की तरजुमानी करते हों–

तर्जुमा : "वह ग़ाली लोगों की

तहरीफ़ बातिल परस्तों के गलत इंतेसाब और जाहिलों की तावीलात से दीन की हिफात करते हैं।"

ऐसे उल्माये इस्लाम से कोई दौर खाली नहीं रहा। इन नुमायां शखसियतों में आठवीं सदी हिज्री के आलिमे जलील शेखुलइम्लाम हाफिज इब्न तैमियां हर्रानी र० (मुतवफ्फा ७२८ हिज्री) हैं। वह किताब व सुन्नत पर पूरा पूरा ईमान रखते थे। उन्होंना यूनानी फलस्फा का गहरा मुतालेआ किया था वह फलस्फा के बेबाक नाकिद थे। उनको खुदा ने एक ऐसा शागिर्द अता फरमाया जो उनके नक्शे कदम पर चलते रहे। यह थे अल्लामा इब्न कैयिम जोजीया (मुतवफ्फी ७६१ हिज्री)।

इनके बाद अगर किसी का नाम पूरे एतमाद से लिया जा सकता है तो वह 'हुज्जतुल्ला हिलबालेगा" के मुसन्निफ हकीमुल इस्लाम हजरत शाह वलीयुल्लाह देहलवी र. (मुतवफ्फा ११७६ हि०) हैं उन्होंने हिन्दुस्तान में इल्मेहदीस को रिवाज दिया और इब्न तैमिया और मुहद्दिसीन का उस वक्त बचाव किया जब उनका नाम लेना मुश्किल था। और इस्लामी शरीअत पर ऐसी किताबें लिखीं जिनकी नजीर आसानी से नहीं मिल सकती। उनकी किताब "अलअकीदतुलहसना" में अहले सुन्नत के अकायद का वह निचोड़ आ गया है जिससे हर पढ़े लिखे मुसलमान को वाकिफ होना चाहिए, जो उनके अकाइद को अपना शिआर बनाना चाहता हो। इसलिए कि इस बाब में इसी को बुन्याद बनाया गया है।

●●●

(पृष्ठ ४ का शेष)

सन् ४६ या ५० हि० में आप की वफ़ात किसी के ज़हर देने से हुई इस तरह आप को शहादत भी मिली और मदीना तय्यिबा में वफ़ात व दफ़न की फ़ज़ीलत भी मिली।

नमाज़े जनाज़ा में इतनी भीड़ थी कि इससे पहले मदीना तय्यिबा में ऐसी भीड़ कम देखी गई। (रज़ियल्लाहु अन्हु)

## सय्यिदुश्शुहदाए कर्बला हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु –

सय्यिदुना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु जो बदबख़्त उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद की नाआक़िबत अन्देशी से मैदाने कर्बला में १० मुहर्रम सन् ६१ हि० को ७२ साथियों के साथ मज़लूमाना शहीद किये गये। उन सभी शुहदा के दरजात बुलन्द हैं और ज़ालिमों का ठिकाना जहन्नम है। यज़ीद भी इस जुर्म से बरी नहीं है। यह बयान इसी पर्चे में हज़रत मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई के क़लम से आया है। वहीं पढ़ लें यहां हम इतना बताना ज़रूरी समझते हैं कि यज़ीद की इस ग़लती पर सहाबिये रसूल हज़रत मुआविया (रज़ि०) के ख़िलाफ़ ज़बान खोलना अपनी आक़िबत ख़राब करना है। यहां हज़रत मुआविया (रज़ि०) की वह वसीयत पढ़ लेना ज़रूरी है जो आपने आख़िर वक़्त में अपने बेटे यज़ीद को की थी :

मेरे बअ्द इराक़ वाले हुसैन को तुम्हारे मुक़ाबले पर ज़रूर लाएंगे। जब वह तुम्हारे मुक़ाबले खड़े हों और तुम को उन पर क़ाबू हासिल हो जाए तो दर गुज़र से काम लेना क्योंकि वह क़राबतदार, बड़े हक़दार और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अज़ीज़ हैं ।

हज़रत उमर (रज़ि०) के अहद (काल) में हज़रत हुसैन का वज़ीफ़ा पांच हज़ार दिरहम माहाना था जो हज़रत उस्मान (रज़ि०) के ज़माने तक मिला। हज़रत मुआविया से उनको दो लाख दिरहम सालाना मिलता था यह आमदनी बहुत ज़ियादा थी लेकिन अल्लाह की राह में ख़र्च करके फ़क्र की ज़िन्दगी बिताते रहे। आप ने कई शादियां कीं जिन से कई औलादें हुई। अली अक्बर, अली असगर, अब्दुल्ला मैदाने कर्बला में शहीद हुए। अली औसत (ज़ैनुलआबिदीन) हादिस–ए–कर्बला के वक़्त बीमार थे। उनही से आप की औलाद चली। बेटियों में सकीना, फ़ातिमा और ज़ैनब के नाम आते हैं। हज़रत हुसैन रज़ियल्लाह अन्हु से महब्बत ईमान का जुज़्व है। जब उनका नाम लें, अदब से नाम लें रज़ियल्लाहु अन्हु ज़रूर लगाएं। जब अल्लाह तौफ़ीक़ दे अल्लाह की राह में ख़र्च करके, भूखों को खिलाकर प्यासों को पिलाकर हाजतमन्दों की हाजतें पूरी करके, ग़रीबों की मदद करके, क़ुरआन शरीफ़ पढ़ के नफ़ली इबादतें कर के अल्लाह तआला से दुआ करें कि ऐ अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से हमारे इस नेक काम को क़बूल कर और इस का सवाब हज़रत हुसैन उन के बड़े भाई हज़रत हसन, उनके वालिदैन और सहाब–ए–किराम की रूहों को बख़्श दे लेकिन याद रहे कि हज़रत हुसैन की याद में बांस कागज़ का तअ़ज़िया बना कर उस की रस्में अदा करना बड़ा गुनाह है।

11वीं किस्त

# सीरतुन्नबी

## हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक

अल्लामा शिबली नोमानी

### दुश्मनों को क्षमा व दरगुजर और सद्व्यवहार

मानव आचरण के भण्डार में सब से अधिक दुलर्भ चीज दुश्मनों पर रहम और उनको क्षमा व दरगुजर है। लेकिन आं हजरत सल्ल० में इस जिन्स की भरमार थी। दुश्मन से बदला लेना इन्सान का कानूनी फर्ज है, लेकिन अखलाक के शरीअत के दायरे में आकर यह फर्जीयत मकरूह तहरीमी (वह काम जिसे शरीअत में मना किया गया है और जिसका करने वाला गुनहगार होता है) बन जाती है। तमाम रिवायतें इस बात पर सहमत हैं कि आप ने कभी किसी से बदला नहीं लिया।

दुश्मनों से बदले का सबसे बड़ा मौका फतेह मक्का का दिन था जब कि वह बुरा चाहने वाले सामने आये जो आंहजरत सल्ल० के खून के प्यासे थे। और जिन के पापी हाथों से आपने तरह तरह की यात्नायें झेली थीं, लेकिन उन सब को यह कह कर छोड़ दिया, "तुम पर कोई मलामत नहीं, जाओ तुम सब आजाद हो।"

वहशी, जो इस्लाम के बाहुबल और आंहजरत सल्ल० के प्रियतम चाचा हजरत हम्जः का कातिल था, मक्का में रहता था। जब मक्का में इस्लाम का बोल बाला हुआ, वह भाग कर ताइफ आया ताइफ भी विजय हुआ और वहशी के लिए ताइफ भी अमन की जगह न रही। लेकिन उसने सुना कि आँहज़रत सल्ल० सफर करने वालों से कभी सख्ती से पेश नहीं आते। नाचार स्वयं आप की शरण में पनाह ली और इस्लाम कुबूल किया। आप सल्ल० ने सिर्फ इतना कहा कि मेरे सामने न आया करना कि तुम को देखकर मुझे चाचा की याद आती है। (बुखारी)।

अबूसुफ़ियान की पत्नी हिन्द, जिसने हजरत हम्जः का सीना चाक किया और दिल व जिगर के टुकड़े किये, फतेह मक्का के दिन नक़ाब पोश आई कि आँहज़रत सल्ल० पहचान न सकें और बेख़बरी में इस्लाम कुबूल कर के अमन की हक़दार बन जाये, फिर इस मौक़ा पर गुस्ताखी से बाज़ न आई। आँहज़रत सल्ल० ने हिन्द को पहचान लिया लेकिन इस वाक्यः का जिक्र तक न फरमाया। हिन्द इस चमत्कार से प्रभावित होकर बोल उठी, या रसूलल्लाह! आप के खेमा से गज़बनाक खेमा मेरी निगाह में न था, लेकिन आज आप के खेमा से कोई प्यारा खेमा मेरी निगाह में दूसरा नहीं। (बुखारी)।

इक्रमः इस्लाम के दुश्मन अबूजहल के बेटे थे और इस्लाम से पहले बाप की तरह आँहजरत सल्ल० के घोर दुश्मन थे फ़तेह मक्का के समय भाग कर यमन चले गये। उनकी पत्नी मुसलमान हो चुकी थीं, वह यमन गईं और इक्रमः को तस्कीन दी और उनको मुसलमान किया और साथ लेकर आप की ख़िदमत में हाज़िर हुईं। आँहजरत सल्ल० ने जब उनको देखा तो खुशी के मारे फौरन उठ खड़े हुए और इस तेजी से उनकी तरफ बढ़े कि आप के शरीर पर चादर तक न थी। और फरमाया "ऐ हिज्रत करने वाले सवार! तुम्हारा आना मुबारक हो।"

सफ़वान बिन उमैयः कुरैश के रईस काफिरों में से और इस्लाम के घोरतम दुश्मन थे। इन्ही नें उमैर बिन वहब को इनाम के वादे पर आँहज़रत सल्ल० के कत्ल पर लगाया था। जब मक्का फ़तह हुआ तो इस्लाम के डर से जद्दा चले गये और इरादा किया कि समुद्र के रास्ते से यमन चले जायें। उमैर बिन वहब ने आप सल्ल० की ख़िदमत में हाजिर होकर अर्ज़ की कि रसूल्ललाह! सफ़वान इब्न उमैयः अपने कबीले के रईस हैं वह डर से भाग गये हैं कि अपने को समुद्र में डाल दें। इरशाद हुआ कि उसको अमान है। दोबारा अर्ज की या रसूलल्लाह! अमान की कोई निशानी दीजिये जिसको देखकर उनको मेरा ऐतबार आये। आप ने अपनी पगड़ी उनको दी जिसको लेकर वह सफ़वान के पास पहुंचे। सफ़वान ने कहा "मुझे वहां जाने में अपनी जान का डर है"। उमैर ने जवाब दिया, सफ़वान! अभी तुम्हें मुहम्मद की क्षमा और दरगुज़र का हाल मालुम नहीं। यह सुनकर वह उमैर के साथ नबी के दरबार में हाजिर हुए और सबसे पहला

सवाल यह किया कि उमैर कहते हैं कि तुम ने मुझे अमान दिया है? फ़रमाया सच है। सफ़वान ने कहा तो मुझे दो महीने की मोहलत दो। इरशाद हुआ कि दो नहीं तुम को चार महीने की मुहलत दी जाती है। इस के बाद वह अपनी खुशी से मुसलमान हो गये। (इब्नहिशाम)।

हिबार बिन अलअसवद वह व्यक्ति था जिसके हाथ से आँहजरत सल्ल० की बेटी ज़ैनब को सख्त तकलीफ पहुंची थी। हज़रत ज़ैनब हामिला थीं और मक्का से मदीना हिज्रत कर रही थीं। कुफ्फार ने रोड़ा डाला। हिबार बिन अलअसवद ने जान बूझ कर उनको ऊंट से गिरा दिया जिससे उन को सख्त चोट आई। और हमल साक़ित (गर्भपात) हो गया। इस के अलावा उसने और भी कुछ अपराध किये थे और इसी कारण फ़तेह मक्का के समय हिबार का नाम उन लोगों में था जिन के कत्ल की मुशतहरी की गयी थी। चाहा कि भाग कर ईरान चला जाये कि हिदायत के दायी ने खुद आस्तान–ए–नबूवत की तरफ झुका दिया। आँहज़रत सल्ल० की खिदमत में हाजिर होकर अर्ज की या रसूलल्लाह! मैं भाग कर ईरान चला जाना चाहता था लेकिन फिर मुझे आप के एहसानात और दरगुजर व क्षमा याद आये। मेरी निस्बत आप को जो खबरें पहुंची थीं वह सही थीं। मुझे अपनी नासमझी और कुसूर पर अफ़सोस है। अब मुसलमान होने आया हूँ। अचानक दया का द्वार खुला था और दोस्त–दुश्मन का अन्तर एकदम समाप्त था। (इब्न इसहाक़)

अबू सफ़ियान इस्लाम से पहले जैसे कुछ थे, ग़ज़वाते नबवी का एक एक शब्द इसका गवाह है। बद्र से लेकर फ़तेह मक्का तक जितनी लड़ाईयां इस्लाम को लड़नी पड़ी उनमें से अक्सर में उसका हाथ था। लेकिन फ़तेह मक्का के मौक़े पर जब वह बन्दी बनाकर लाये गये और हज़रत अब्बास उनको लेकर आप सल्ल० की खिदमत में हाजिर हुए तो आप उनके साथ मुहब्बत से पेश आये। हज़रत उमर ने पिछले अपराधों की पदाश में उनके कत्ल का इरादा किया, लेकिन आप ने मना फ़रमाया और न सिर्फ यह बल्कि उनके घर को अमन व आमान का हरम बना दिया। फ़रमाया कि जो अबसुफ़ियान के घर में दाख़िल हो जायेगा उसका कुसूर माफ़ होगा। क्या दुनिया के किसी विजेता ने अपने दुश्मन के साथ यह बर्ताव किया है?

अरब का एक एक क़बीला ताबेदारी में इस्लाम के झंडे के नीचे जमा हो रहा था। अगर किसी क़बीले ने आखिर तक सरताबी (अवज्ञापालन) की तो वह बनू हनीफा का क़बीला था जिसमें मुसैलमा ने नबूवत से दुश्मनी की थी। समामा इब्न आसाल इस क़बीला के रईसों में था। इत्तेफ़ाक़ से वह मुसलमानों के हाथ लग गया। गिरफ्तार करके मदीना ले आये। आँहज़रत सल्ल० ने हुक्म दिया कि इसको मस्जिद के खम्भे में बान्ध दिया जाये। इसके बाद आप मस्जिद में तशरीफ लाये और उससे पूछा कि क्या कहते हो? उसने कहा, ऐ मुहम्मद! अगर तुम मुझे कत्ल करोगे तो एक खूनी को करोगे, और अगर एहसान करोगे तो एक शुक्रगुजार पर एहसान होगा। और अगर फ़िदिया की रक़म चाहते हो तो तुम मांगो मैं दूंगा। यह सुन कर आप ख़ामोश रहे। दूसरे दिन भी यही तक़रीर हुई। तीसरे दिन भी जब उसने यही जवाब दिया तो आपने हुक्म दिया कि समामा की रस्सी खोल दो और आज़ाद कर दो। समामा पर इस अप्रत्याशित इनायत का यह असर हुआ कि करीब एक पेड़ की आड़ में जाकर गुस्ल किया और मस्जिद में आकर कलमा पढ़ा और मुसलमान हो गया। और अर्ज़ की या रसूलल्लाह! दुनिया में कोई व्यक्ति मेरी नज़र में आप से ज्याद गज़बनाक न था और अब आप से ज्यादा दुनिया में मुझे कोई प्रिय नहीं। कोई मज़हब आपके मज़हब से ज्यादा मेरी आंखों में बुरा न था और अब वहीं सबसे ज्यादा प्यारा है। कोई शहर आपके शहर से ज्यादा नापसन्द न था, और अब वही पसन्दीदः है।

कुरैश की सितमगरी और जफ़ागरी की दास्तान दोहराने की ज़रूरत नहीं। याद होगा कि शाब अबी तालिब में तीन वर्ष तक इन जालिमों ने आपको और आपके खानदान को इस तरह घेरे में कर रखा था कि ग़ल्ला का एक दाना अन्दर पहुंच नहीं सकता था। बच्चे भूख से रोते और तड़पते थे और यह बेदर्द उनकी आवाजें सुनकर हंसते और खुश होते थे। लेकिन मालूम है कि रहमते आलम ने इसके बदले में कुरैश के साथ क्या बर्ताव किया? मक्का में ग़ल्ला यमामः से आता था। यमामः के रईस भी समामा बिन आसाल थे। मुसलमान होकर जब मक्का गये तो कुरैश ने मज़हब बदलने पर उनको ताना दिया। उन्होंने गुस्सः से कहा कि खुदा की कसम! अब रसूलुल्लाह सल्ल० के बिना गेहूं का एक दाना भी नहीं

मिलेगा। इस बन्दिश से मक्का में अनाज का काल पड़ गया। आखिर घबराकर कुरैश ने उस आस्ताना की तरफ रूख किया जिस से कोई साइल कभी महरूम नहीं गया। हुजूर को रहम आया और कहला भेजा कि बन्दिश उठा लो फिर पूर्ववत् ग़ल्ला जाने लगा। (बुखारी)

## कुफ्फार और मुशरिकीन के साथ बर्ताव

कुफ्फार के साथ आप के सदव्यवहार की बहुत सी घटनायें बयान की गयीं हैं। यूरोप के इतिहासकारों का दावा है कि यह उस समय तक की घटनायें हैं जब तक इस्लाम कमजोर था और नेकी व लुत्फ़ व आशती के सिवा कोई चारा न था। इसलिस हम इस उनवान के नीचे सिर्फ वह घटनायें नकल करेंगें जो उस ज़माने की हैं जब कि विरोध करने वालों की शक्तियां पामाल हो चुकी थीं और आँहजरत सल्ल० को पूरी सत्ता प्राप्त हो चुकी थी।

अबू बसरा ग़िफ़ारी का बयान है कि जब वह काफ़िर थे, मदीना में आँहज़रत सल्ल० के पास आकर मेहमान रहे रात को तमाम बकरियों का दूध पी गये, लेकिन आपने कुछ न फ़रमाया रात भर तमाम नबी का घराना भूखा रहा। इसी तरह एक और घटना हज़रत अबू हुरैरः बयान करते हैं। रात को एक काफ़िर आँहज़रत सल्ल० का मेहमान हुआ। आपने एक बकरी का दूध उसके सामने पेश किया। वह पी गया फिर दूसरी बकरी दूही गयी। वह दूध भी बेताम्मुल पी गया। (निःसंकोच पी गया) फिर तीसरी, फिर चौथी यहां तक की सात बकरियां दूही गयीं और वह दूध सब पीता गया। आप सल्ल० ने कोई खिन्नता न जताई। शायद इसी सद्व्यवहार का असर था कि वह सुबह को मुसलमान था और सिर्फ एक बकरी के दूध पर सन्तुष्ट हो गया।

हज़रत असमा बयान करती हैं कि सुलह हुदैबिया के ज़माने में उनकी मां जो मुशरिकः थीं, मदीना के मददगार हज़रत असमा के पास आयीं। उनको ख्याल हुआ कि मुशरिकीन के साथ क्या बर्ताव किया जाये। आप सल्ल० के पास आकर पूछा आपने फरमाया उन के साथ नेकी करो। हज़रत अबू हुरैरः की मां काफिरः थीं। और बेटे के साथ मदीना में रहती थीं। जेहालत से आँहज़रत सल्ल० को गालियां देती थीं अबू हुरैरः ने आप सल्ल० से अर्ज़ की। आपने गुस्सा करने के बजाये दुआ के लिए हाथ उठाये। (बुख़ारी)

आँहज़रत सल्ल० के घर का तमाम कारोबार हज़रत बिलाल के सिपुर्द था। रूपया पैसा जो कुछ आता था उनके पास रहता, नादारी की हालत में वह बाजार से सौदा सुल्फ़ कर्ज़ लाते और जब कहीं से कोई रकम आ जाती तो उससे अदा किया करते। एक दफा बाजार जा रहे थे। एक मुशरिक ने देखा, उन से कहा तुम कर्ज़ लेते हो तो मुझसे ले लिया करो। उन्होंने ने कुबूल किया एक दिन अज़ान देने के लिए खड़े हुए तो वह मुशरिक चन्द सौदागरों के साथ आया और उन से कहा, ओ हब्शी! उन्होंने इस असभ्यता के जवाब में कहा हाँ। बोला कुछ खबर हे! वादा के सिर्फ चार दिन रह गये हैं। तुम ने इस मुद्दत में क़र्ज़ा अदा न किया तो तुम से बकरियां चरवा के छोडूंगा। यह इशा पढ़कर आप सल्ल० के पास आये और सारा हाल बयान करके कहा कि खजाना में कुछ नहीं है। कल वह मुशरिक आकर मुझ को फजीहत करेगा। इसलिए मुझको अजाजत हो कि मैं कहीं निकल जाऊँ। फिर जब कर्ज़ा अदा करने का सामान हो जायेगा तो वापस आ जाऊँगा। गर्ज़ रात को जाकर सो रहे। और सफ़र का सामान अर्थात थैला, जूती, ढाल, सर के नीचे रखली। सुबह उठ कर सफर का सामान कर रहे थे कि एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया और कहा आँहजरत सल्ल० ने याद फरमाया है। यह गये तो देखा कि चार ऊंट गल्ला से लदे हुए दरवाजे पर खड़े हैं। आँहज़रत सल्ल० ने फरमाया, मुबारक हो, यह ऊंट फिदक के रईस ने भेजे हैं। उन्होंने बाजार में जाकर सब चीजें बेच दीं, और आँहज़रत से अर्ज़ की कि सारा कर्ज़ अदा हो गया। (अबूदाउद)

यह घटना फिदक के फतेह के बाद की है जो हिज्रत का सातवां साल है। हज़रत बिलाल आँहजरत सल्ल० के खास नजदीकी और घर के मुंतजिम थे। एक मुशरिक उनको हब्शी कहकर पुकारता है और कहता है कि तुम से बकरियां चरवा के छोडूंगा। हज़रत बिलाल उस के तंग करने के डर से भाग जाने का इरादा करते हैं, आँहजरत सल्ल० यह बातें सुनते हैं, लेकिन मुशरिक की निस्बत एक शब्द नहीं फरमाते, न बिलाल की दिलदेह की तदबीर करते इत्तेफाक से गल्ला आ जाता है और मुशरिक का कर्जा अदा किया जाता है और उसकी बदजबानी और सख्तगीरी से दरगुजर किया जाता है। यह दर गुजर, यह क्षमा, यह मुकम्मल रहमते आलम के सिवा किस से हो सकता है?

सबसे मुश्किल मामला मुनाफ़िकीन का था। यह कुफ्फार का एक गिरोह था जिसका रईस अब्दुल्ला बिन अबी था। आप सल्ल० जिस जमाने में मदीना में तशरीफ लाये उससे कुछ पहले तमाम शहर ने इस पर इत्तेफाक कर लिया था कि वह मदीना का शासक बना दिया जाये। जंगे बद्र के बाद उसने इस्लाम का एलान किया, लेकिन दिल से काफिर था। उसके अनुयायी भी इसी प्रकार का मुनाफ़िकाना इस्लाम लाये और मुनाफ़िकीन की एक जमाअ़त काइम हो गयी। यह लोग अन्दर अन्दर इस्लाम के खिलाफ हर प्रकार की तदबीरें करते थे। कुरैश और दूसरे मुखालिफ कबाइल से साजिश रखते। उनको मुसलमानों के भेद बताते रहते, देखने में इस्लाम की रस्में अदा करते। जुमा जमाअत में शरीक होते और लड़ाइयों में साथ जाते थे। आं हजरत सल्ल० उनके हालात और एक एक के नाम व निशान से वाकिफ थे। लेकिन चूंकि शरीअत और कानून के अहकाम दिलों के भेद से नहीं बल्कि जाहिरी आमाल से सम्बन्धित हैं इस लिए आप उन पर कुफ्र के अहकाम जारी नही फरमाते थे। यहां तक तो शरीअत और कानून का मामला था लेकिन उदारता और क्षमा व दरगुजर के तकाजे से आप उन से हमेशा सदव्यवहारा ही का बर्ताव करते थे।

एक दफा एक गजवा में एक महाजिर ने एक अन्सारी को थप्पड़ मारा। अन्सारी ने कहा 'अन्सार की दुहाई'। महाजिर ने भी महाजिर की दुहाई दी। करीब था कि दोनों में तलवार चल जाये। आंहजरत सल्ल० ने फरमाया, 'यह क्या जाहिलियत की बातें हैं? दोनों रूक गये। अब्दुल्ला बिन अबी ने सुना तो कहा, मदीना चल कर जलील मुसलमानों को निकाल दूंगा। साथियों ने कहा आसान बात यह है कि तुम लोग महाजिरीन की खबरगीरी से हाथ उठा लो। यह खुद तबाह हो जायेंगे। कुर्आन में इस घटना का उल्लेख है :–

"यही लोग हैं जो कहते हैं कि पैगम्बर के साथियों पर खर्च न करो ताकि वह बिखर जायें।" (अलमुनाफिकीन–८)

आंहजरत सल्ल० ने अब्दुल्ला बिन अबी को बुला भेजा कि तुमने यह अल्फाज कहे थे। उसने साफ इनकार किया। हजरत उमर मौजूद थे। बोले या रसूलुल्लाह ! इजाजत दीजिए कि इस मुनाफिक की गर्दन उड़ा दूं। आपने फरमाया कि लोग चर्चा करेंगे कि मुहम्मद अपने साथियों को कत्ल करते हैं। ओहद की लड़ाई में अब्दुल्ला बिन अबी ऐन लड़ाई के पेश आने के समय तीन सौ आदमियों के साथ वापस चला आया जिससे मुसलमानों की ताकत को बड़ा झटका लगा, फिर भी आप सल्ल० ने दरगुजर फरमाया। (और वह जब मरा तो इस एहसान के बदले में कि हजरत अब्बास को उसने अपना कुर्ता दिया था, मुसलमानों की नाराजगी के बावजूद आपने अपनी कमीज उसको पहना कर दफन किया) (बुखारी) (जारी)

प्रस्तुति : हसन अन्सारी

(पृष्ठ ६ का शेष)

जमाना आयेगा कि शर ही शर होगा यहां तक कि अपने परवरदिगार से मिलो, मैंने इसको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है। (बुखारी)

## इन्तिजार किस बात का है ?

७/८७. हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लहा सल्लल्लाहुल अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सात चीजों से पहले अच्छे आमाल में जल्दी करो। अगर ऐसा नहीं करते तो ऐसे फक्र का इन्तिजार करते हो जो भुला देने वाला हो, या ऐसी दौलत का जो सरकश बना देने वाली हो, या ऐसे मर्ज का जो बिगाड़ देने वाला हो, या ऐसे बुढ़ापे का जो सठिया देने वाला हो, या ऐसी मौत का जो काम तमाम कर देने वाली हो, या दज्जाल का जो निहायत बुरी गैर मौजूद चीज है जिसका इन्तिजार किया जाये, या कियामत का। पस कियामत बहुत सख्त और निहायत कड़वी चीज है।

## दीनी शरफ की ख्वाहिश और अरमान

८/८८. हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खैबर के दिन फरमाया–अल्बत्ता यह निशान मैं ऐसे आदमी को दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल को चाहता है। अल्लाह उसके हाथ पर फतेह देगा। हजरत उमर (र०) ने कहा कि मैंने सरदारी की ख्वाहिश उसी रोज की। मैं इस उम्मीद पर अपने को बुलन्द करता था कि मैं बुलाया जाऊँ। आपने हजरत अली (र०) को बुलाया, उनको वहीं निशान दिया और फरमाया, जाओ और किसी तरफ मुतवज्जिः न होना, यहां तक कि अल्लाह तुमको फतह दे। हजरत अली (र०) कुछ दूर चले और फिर ठहरे और किसी तरफ मुतवज्जिः नहीं हुए, वहीं से आवाज दी या रसूलुल्लाह! मैं किस बात पर लोगों से जंग करूं? आपने फरमाया, उनसे जंग करो हत्ता कि वह गवाही दें 'ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्ररसूलुल्लाहि पस, अगर उन्होंने गवाही दे दी तो उन्होंने तुमसे अपनी जानों और मालों को महफूज कर लिया। हां जान व माल के मुतालबः में उनसे दारोगीरू की जा सकती है, और उनका हिसाब अल्लहा के जिम्मः है। (मुस्लिम)

तेरहवी किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

# हज़रत इमाम हुसैना रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

हज़रत मुआविया (रज़ि०) के बाद यज़ीद बादशाह हुआ। हजरत इमाम हुसैन (रज़ि०) आदि के विरोध का हाल जान चुके हो। उधर कूफा के लोग भी विरोधी थे। वह हजरत इमाम हुसैन रजिअल्लाहु अन्हु को खलीफा बनाना चाहते थे। इस गरज से उन्हों ने एक दो नहीं पूरे डेढ़ सौ पत्र लिखे। हजरत इमाम हुसैान रजियल्लाहु अन्हु यजीद की बादशाहत नापसन्द करते थे और केवल नापसन्द ही नहीं बल्कि उसे इस्लाम के सिद्धान्तों के खिलाफ समझते थे लेकिन अभी तक इस से बचाव की सूरत समझ में नहीं आई थी। अब कूफा से जो इस तरह की खबरें आनी शुरू हुईं तो आप ने सोचा मौका अच्छा है। उन लोगों की मदद सेफिर सही इस्लामी हुकूमत कायम की जा सकती है। लेकिन हजरत अली (रज़ि०) के साथ उन कूफियों का व्यवहार आप को अच्छी तरह याद था। आप ने अपने चचेरे भाई हजरत मुस्लिम को कूफा रवाना किया। मुस्लिम कूफा पहुंचे तो अटठारह हजार आदमियों ने तुरन्त बैअत (भक्ति प्रतिज्ञा) कर ली। यह सूरत देखकर आपं ने हजरत इमाम हुसैन (रज़ि०) को लिखा कि यहां के हालात अच्छे हैं। आप तशरीफ़ लाएं।

इस खत के बाद अब कोई संदेह न रहा और हजरत इमाम हुसैन रज़ि० कूफा रवाना हो गए। यजीद को यह हाल मालूम हुआ तो उसने उबैदुल्लाह बिनजियाद को उधर रवानाकिया। इब्ने जियाद ने आते ही सख्ती शुरू की नतीजा यह हुआ कि दो हीचार दिन में सारे कूफी उसके साथ हो गए और बेचारे हजरत मुस्लिम अकेले रह गए और जिन लोगों ने बुलाया था, वही उन्हें पकड़ कर इब्ने जियादा के पास ले गए जहां आप शहीद कर दिये गये।

इमाम हुसौान (रज़ि०) अभी रास्ते ही में थे कि यह सूचना मिली लोगों की राय हुई कि वापस चलें लेकिन हजरत मुस्लिम के सम्बन्धी किसी तरह राजी न हुए और कहने लगे कि या तो मुस्लिम का बदला लेंगे या खुद भी उन्हीं की तरह जान दे देंगे। थोड़ी दूर और आगे पहुंचे तो हुर एक हजार सवारों के साथ मिला। अब कूफा की हालत बिल्कुल जाहिर हो चुकी थी। आपने वापस होना चाहा लेकिन हुर ने रोका। मजबूरन आगे बढ़ना पड़ा। करबला के स्थान तक पहुंचे थे कि अमरू बिन सअद एक दूसरी फौज के साथ मिला और बैअत (भक्ति प्रतिज्ञा) तलब की। हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने वापस जाना चाहा लेकिन इब्ने जियाद ने कहला भेजा कि बिना बैअत के छुटकारा नहीं हो सकता। आप ने बहुतेरा समझाया लेकिन इब्ने जियाद कब मानने वाला था। अन्त में आप ने फरमाया कि अच्छा अगर तुम नहीं मानते हो तो मुझे यजीद के पास ले चलो। उससे मिलकर मैं खुद तय कर लूंगा लेकिन इब्न जियाद का दिमाग बिगड़ चुका था। उसकी समझ में यह बातें कैसे आतीं। वह वही रट लगाए रहा कि बस यहीं बैअत कर लो।

अब हजरत ईमाम हुसैन (रज़ि०) बिल्कुल मजबूर थे। उनसे यह कैसे हो सकता था कि बैअत करके इ्स्लाम की रूह हमेशा के लिए समाप्त कर दें। उनकी बैअत का अर्थ यह था कि यह गलत शासन व्यवस्था इस्लामी सिद्धान्तों के खिलाफ नहीं है। ज़ाहिर है कि हजरत इमाम हुसैन (रज़ि०) यह कभी भी नहीं कर सकते थे चुनानचः आप ने इन्कार कर दिया।

अब इब्न जियाद ने आदेशि भेजा कि जंग शुरू कर दी जाए और हजरत इमाम हुसैन (रज़ि०) और उनके साथियों पर दाना पानी बन्द कर दिया जाए। इस आदेश पर इस सख्ती से अमल हुआ कि नन्हें–नन्हें बच्चों तक प्यास से बिलक बिलक कर रोते थे लेकिन क्या मजाल कि पानी की एक बूंद भी उनकी हलक में पड़ सके। सामने दरिया बह रहा था और पशुओं तक पानी पीपी कर अपनी प्यास बुझा रहे थे लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवासे और उनके खान्दान वाले एक–एक बूंद के लिए तरस रहे थे लेकिन इस पर भी जालिमों को रहम नहीं आया। १० मुहर्रम सन् ६१ हि० को लड़ाई शुरू हुई। हजरत इमाम

हुसैन रज़ि० और आपके साथी बड़ी हिम्मत और बहादुरी से लड़े। चार हज़ार दुश्मनों के मुकाबले में बहत्तर आदमी क्या कर सकते थे। चन्द घंटों में सब के सब शहीद हो गए। केवल इमाम ज़ैनुलआबदीन बीमार थे इसलिए बच गए।

दुश्मनों ने सिर काट कर बरछियों पर चढ़ाए, औरतों को बन्दी बनाया और पहले कूफ़ा फिर वहां से शाम रवाना हो गए। जब यह लुटा फुटा क़ाफ़िला दमिश्क पहुंचा तो दुश्मन तक यह हाल देखकर रो पड़े।

यज़ीद भी ज़ब्त न कर सका और बेइख़्तियारा रो दिया। और इब्ने ज़ियादा को बहुत बुरा भला कहा और अहले बैअ़त को अति अधिक आराम से रख कर चन्द दिनों के बाद बहुत सा सामान देकर सवारों की सुरक्षा में मदीना वापस कर दिया।

## मदीना मुनव्वरा पर चढ़ाई

ऊपर मालूम हो चुका है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि०) भी यजीद के विरोधी थे। वह लड़ाई का रंग देखकर मदीना छोड़ कर मक्का चले आए थे। यजीद को उनकी ओर से बड़ा खतरा था। मदीना वाले भी यजीद के खिलाफ हो गए। इसलिए इमाम हुसैन (रज़ि०) के बाद उस ने इब्ने जुबैर (रज़ि०) और मदीना वालों पर ध्यान दिया और मुस्लिम बिन अक़बा को बारह हजार फौज देकर मदीना रवाना किया। मदीना वालों की प्राजय हुई और तीन दिन तक ऐसी लूट मार रही कि खुदा की पनाह। बड़े–बड़े लोग मारे गए और सारा मदीना करीब करीब उजाड़ हो गया।

मदीना को इस तरह लूट घसोट कर तबाह कर के यह फौज अब्ने जुबैर(रज़ि०) से बैअत लेने के लिए मक्का की तरफ बढ़ी। मुस्लिम बिन अकबा रास्ते में ही मर गया। हुस्सैन इब्ने नमीर फौज का सरदार हुआ २६ मुहर्रम को यह लशकर मक्का मुअज्जमा पहुंचा। हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि०) मुकाबले के लिए निकले लेकिन हारकर फिर शहर में आ गए। शामियों ने चारों तरफ से घेर लिया और पत्थर बरसाने शुरू किये। अभी लड़ाई हो ही रही थी कि यजीद के मरने की सूचना आई और जंग खत्म हो गई। (१४ रबी अव्वल स० ६४ हिजरी)

## मरवान

यज़ीद के मरने के बाद लोगों ने उसके बेटे माअ़विया को खलीफ़ा बनाया। यह बड़ा ही नेक स्वभाव का था। यज़ीद के अत्याचारों को देख कर उस का दिल हुकूमत की तरफ से फिर गया था। चन्द महीना हुकूमत करने के बाद उस ने सिंघासन छोड़ दिया और कहा मुझे हुकूमत और सलतनत से कोई गरज़ नहीं। तुम जिसे चाहो बादशाह बना लो। यह कह कर घर चला गया और तीन महीने बाद देहान्त हो गया। उसके बाद मरवान ही बादशाह हो गया।

उधर मक्का में हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि०) पहले से ही खलीफा बना लिए गए थे। यजीद के मरने के बाद दूसरे इस्लामी देशों ने भी उन्हीं के हाथों पर बैअत कर ली। शाम का बड़ा भाग उन्हीं के अधिकार क्षेत्र में आ गया और केवल फ़िलिस्तीन (बैतुल मुक़द्दस का इलाक़ा) मरवान के पास बाकी रह गया। २० मुहर्रम सन् ६५ हि० को मर्जे राहित के स्थान पर ज़हाक बिन क़ैस (हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० के सहयोगी) और मरवान से मुकाबला हुआ बीस दिन लड़ाई होती रही। अन्त में ज़हाक मारा गया और शाम बनी उमैया के कब्जे में आ गया। कुछ दिन के बाद मिस्र पर भी उनका कब्जा हो गया।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

## तेज़ होने लगी दिल की धड़कन

राज़ इलाहाबादी

वह खुदा का, खुदा उस का दुश्मन।
जिसने छोड़ा मुहम्मद का दामन।।

जब से देखा खजूरों का झुरमुट।
हेच हैं मेरी नज़रों में गुलशन।।

इश्के अहमद में आंसू बहाकर।
भर लिया मैंने फूलों से दामन।।

याद आने लगा फिर मदीना।
तेज होने लगी दिल की धड़कन।।

नारे दोजख से बचना हो जिसको।
थाम ले कम्लीवाले का दामन।।

बारिशे नूर होती है पैहम।
अल्ला अल्ला रे तैबा का सावन।।

राज मिलता न क्या उनके दर से।
तंग खुद हो गया अपना दामन।।

# निकाह आसान था

आमिल सिद्दीकी (सुलतानपुर)

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हैसियत रखने वाले हर बालिग नौ जवान को निकाह का हुक्म दिया है और लड़कियों के मं बाप पर जिम्मेदारी डाली है कि बालिगहोने के बाद जल्द उनका निकाह किसी दैनदार लड़के से करा दिया जाए,रसूले अकरम (स०अ०) ने अपने जमाने में बहुत से मर्द और औरतों को शादी के रिश्ते में जोड़ा, और साथ ही यह भी फ़रमाय कि मैने निकाह को इतना आसान बना दिया कि हराम कारी मुशकिल हो गई, रसलुल्लाह (स०अ०) के इस क़ौल (कथन) के पीछे ज़रूर उस वक्त के समाजी हालात रहे होगें, जहां निकाह करना अर्थात जाएज़ तौर पर शादी के रिश्ते में बंधना मुशकिल रहा होगा, अगर मौजूदा ज़माने में मग़रबियत (पच्छिमी सभ्यता) पर नज़र डाले तो यूरोप और अमरीका के समाज में लोग जिन्दगी भर के लिये एक दूसरे से जुड़ने और बीवी, बच्चों का खर्च व जिम्मेदारी उम्र भर उठाने मे बोझ महसूस कर रहे है और अपने समाज में हरामकारी फैलाई है। लेकिन अगर हम उस समाज पर नज़र डालें जिसकी बुनयाद हुजूर अकरम सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने डाली तो उसमें न तो औरतों को कमतर समझा जाता है और न उनको बोझा ख़ियाल किया जाता है, इस्लामी उसूलों (नियमों) के मुताबिक़ शादी विवाह इतना आसान है कि अगर उस पर आमिल (कार्यकर्ता) हो जांए ता दूसरी कौमे खास तौर पर बिरादराने वतन हमारे इसी अमल को देखकर दाखिल इस्लाम हों लेकिन अफ़सोस कि जब यह वक्त आता है तो हम भी उन्हें कौमों के रीति रिवाजों को अपना लेतें है, जिसका नबी (स०अ०) की शिक्षाओं से दूर दूर तक संबंध नहीं, अगर उनके यहां तिलक में रक़में चढ़ाई जाती है तो हमारे यहां भी मंगनी में मोटी रकम, कपड़े और दूसरे सामान लड़के वालों को दिये जाते है बारात का कोई तसव्वुर (कल्पना) इस्लाम में नही लेकिन आज सौ से डेढ़ सौ लोगों की बारात ले जाए बग़ैर निकाह का तसव्वुर ही नही रहा हमें मालूम होना चाहिए कि नबी करीम (स०अ०) के ज़माने मे मदीने की आबादी व रक़बा (एरिया) इतना था कि अगर जोर से किनारे पर खड़े होकर आवाज़ लगाई जाए तो पूरा मदीना सुन लेता लेकिन हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ (रज़ियल्लाहु अन्हु) का निकाह होता है तो आं हजरत (स०अ०) को बाद मे पता चलता है तो आप(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वलीमे के लिये कहते कि वलीमा कर लो सहाबा किराम की वह जमाअत जो रसुलुल्लाह (स०अ०) पर मर मिटने के लिये तैयार थी वह भी रसूल को बरात नहीं ले जाती । इस से तो यही साबित होता है कि बारात का कोई तसव्वुर (कल्पना) हमारे यहाँ नहीं, जहेज़ की मुरव्वजह (प्रचलित) शकल लीजिए तो इसकी भी कोई मिसाल रसूलुल्लाह (स०अ०) के अमल या फिर हजराते सहाबा के यहां नही मिलती। जहेज़ फ़तिमी का ढिंढोरा कुछ लोग पीटते हैं तो उनको मालूम होना चाहिए कि रसूलुल्लाह (स०अ०) के और बेटियां भी थीं, दूसरी बेटियों को जहेज़ न देकर नऊज़ु बिल्लाह (अल्लाह की पनाह) आप (स०अ०) ने बेटियों में फ़र्क किया यह जहरत अली की ज़िरह (कवच) थी जो बेची गई, आधे मे धरेलू सामान की ख़रीदारी की गई और आधे से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने महर की रकम अदा की।

आज शादी व्याह के मौकों पर वीडियो, रिकार्डिग का अमल शुरू हो गया है, होता यह है कि दूसरे धरों की जो परदानशीं औरते दावत में शरीक रहती है। बाद में परदे पर उनकी तसवीरें नामहरम मर्द भी देखते है जो बिलकुल दुरूस्त नही है। अफ़सोस तो यह है कि जो क़ौम के इमाम (आगे चलने वाले) है वह भी कुछ कहने से कतराते है बल्कि वह खुद मंगनी और बारात जैसी रस्मों मे ज़ाती तौर पर शरीक होते है ज़रूरत इस बात की है कि हमारे उलमा व रहबर इस बात की अमली दावत दें कि इस्लाम मे जहेज़ जैसी किसी रस्म का काई मुकाम नहीं कुरआन ने विरासत मे लड़कियों का भी हक़ रखा है बारात जैसी कोई रस्म हमारे यहां नहीं, नबी ने वलीमा करने की तालीम दी है। हैसियत के मुताबिक अपने दरवाजे बुलाइये और उनकी ख़ातिर कीजियें।

●●●

# आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

**प्रश्न:** दुन्या में लोग अपने लीडरों की पैदाइश और वफात के दिन उन की याद ताजा करके उन से अकीदत (श्रद्धा) का इज़्हार करते हैं तो क्या मुसलमान लोग हज़रत इमाम हुसैन की याद में तअ़जिया दारी और १० मुहर्रम को उन की याद में मजलिसों का इनअ़िकाद कर सकते है?

**उत्तर:** हमारे पेश्वा हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु हमारे हुजूर सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम के प्रिय नवासे थे। वह अपने ईमान व नेक अअ़माल के सबब अल्लाह के भी महबूब थे और अल्ला के रसूल के भी, वह अल्लाह के रसूल के सहाबी थे और तमाम सहाबा को महबूब थे (रजियल्लाहु अन्हुम) पूरी उम्मते इस्लामियां उनकी महब्बत अपना जुज्वे ईमान समझती है, इस सब के बावजूद उनकी याद में तअ़जिया दारी नाजाइज है इसका फत्वा सभी बेरलवी उलमा खास तौर से मौलाना अहमद रज़ा खाँ, मौलाना हशमत अली, मौलाना अमजद अली (बहारे शरीअ़त वाले) इन सबने भी तअ़ज़िया दारी को बुरी बिदअत कहकर हराम कहा है देवबन्द और नदवे के उलमा भी यही कहते हैं। दुन्या के लोग अपने लीडरों की याद अपनी अक्ल से मनाते हैं लेकिन हम तो शरीअत के पाबन्द हैं। हमारे हुजूर (सल्लल्लाहू अ़लैहि व सल्लम) की शरीअ़त में हर साल किसी गम की याद मनाना जाइज नहीं बेशक कर्बला का वाक़िआ बड़ा ही गमनाक है मगर उसकी याद मनाना जाइज नहीं। किसी मजलिस में इस बाहमी लड़ाई का जिक्र इस्लामी हमीयत के भी खिलाफ है और शरीअत के भी अगर्चि कातिलीने सय्यिदना हुसैन रजियल्लाहु अन्हू, जहन्नमी हैं लेकिन बद् किर्दार यजीद की जानिब के दूसरे लोग भी कल्मा गो थे पस यह लड़ाई जिस सबब से भी हुई आपसी थी लिहाजा यादगार के तौर पर इस का बयान दूरूस्त नहीं। अलबत्ता तारीख पढ़ाते वक्त इहतियात से वाकिअ़े को बयान किया जा सकता है।

**प्रश्न:** हमारे इलाके में जहां मुसलमान लोग तअ़ज़िया रखते हैं वहीं ६ मुहर्रम की शाम को पायक बन्ते हैं वह इस तरह कि जो लोग पायक बनना चाहते हैं कुर्ता, पाएजामा, और साफा मुहय्या करते हैं। फिर मग्रिब बाद तअ़जिया के चबूतरे के पास हाजिर होते हैं। एक सूफी नुमा साहिब उनको वह कपड़े पहनवा कर साफा लपेटकर छड़ी हाथ में देते हैं। कमर में घुंघरू बान्धते हैं। और नजराने के बहाने अपनी मुकर्ररा उजरत लेते हैं। अब पायक साहिबान रात भर तअ़ज़ियों की जियारत में या हुसैन का नअ़रा लगाते हुए दोड़ते रहते है। बैठ नहीं सकते। दूसरे रोज तअ़ज़िया दफ्न के बअ़द मअ़मूल के कपड़े पहनते है। इस पायक बनने का क्या हुक्म है?

**उत्तर:** पायक मअ़ना पैदल चलने वाला और पैक मअना दूत, यहां पायक से तातपर्य हजरत हुसैन का पैदल सिपाही है। यह पायक बनने की रस्म न जाने कहां से निकल आई। यह शीआ़ लोगों के यहां भी नहीं हैं। इसमें बड़ी खराबियां हैं। पहली बात तो यह देखी गयी कि पायक लोग नमाज़ नहीं पढ़ते। हज़रत हुसैन (रजि०) ने यजीद की बैअ़त से जिन कारणों से इन्कार किया था उनमें से एक बात यह भी थी कि वह नमाज़ में बड़ी कौताही करता था और कभी कभी नमाज छोड़ ही देता था। तो भला बेनमाजी अपने को हज़रत हुसैन (रजि०) का पायक (सिपाही) कैसे कह सकता है। फिर यह पायक कमर में घुघंरू बान्धता है जो नाजाइज है। हर वक्त चलता रहता है। शरीअत ने ऐसी तक्लीफ किसी को नहीं दी। रात भर तअ़जियों की ज़ियारत करता रहता है। ऐसी कब्र की जियारत करना जिसमें कोई ईमान वाला दफ्न न हो जाइज नहीं तअ़ज़िया ऐसी ही झूठी कब्र है। पायक बनना, बनाना, पायक बनाकर उजरत लेना सब नाजाइज उजरत हराम, यह कोई इख्तिलाफी मसअला नहीं है बरेलवी उलमा भी इसे नाजाइज और हराम कहते हैं।

**प्रश्न:** हमारे यहां लोग तअ़ज़िये पर हलवों के थाल चढ़ाते हैं फिर उसे तबर्रूक समझ कर खाते हैं। इसका क्या हुक्म है?

**उत्तर:** तअ़ज़िया रखना बिदअ़त है और तअ़ज़िये पर चढ़ावा चढ़ाना हज़रत हुसैन (रजि०) के नाना की लाई हुई शरीअत में शिर्क है, और वह चढ़ावा ईमान वालों के लिये हराम है। ऐसा चढ़ावा अगर हजरत हसन या हजरत हुसैन को पेश किया जाता तो वह नाराजगी का इज्हार करते और हरगिज हरगिज न खाते।

# जिन्न देखा नहीं जा सकता

अबू मर्गूब

जिन हों या शयातीन जब तक वह अपनी अस्ली शक्ल बदलकर कोई माद्दी शक्ल न इख़्तियार करें देखे नहीं जा सकते और वह जिस शक्ल में आएंगे मार दिये जाने पर मर जाएंगे जैसे एक सहाबी ने एक सांप को मारा तो वह मर गया जब कि वह जिन्न था गुमाने ग़ालिब है कि जिन्न किसी मजबूरी ही पर शक्ल बदलते होंगें इस ख़तरे से कि कहीं वह शक्ल बदलें तो कोई उन को मार दे जब कि वह अपनी अस्ली शक्ल में हों तो इन्सान या किसी जानवर के लिए आसान नहीं कि उनको मार सके।

## पुराणों और रामायण के लोग

रामायण और पुराण में जो अनगिनत लोगों के आश्चर्यजनक हालात मिलते हैं जैस शक्ल बदल लेना, हवा में उड़ना, वृक्ष उखाड़ फेंकना, पहाड़ उठा लेना जैसे सुग्रेव बालि, रावण, कूम करण, मैघनाथ, बन्दरों, भालूओं की फौज वगैरह लगता है यह सब जिन्न रहे होंगे। इन में जो राक्षस कहलाते हैं वह शयातीन होंगे, दूसरे आम जिन्न होंगे। इन्सानों से पहले दुन्या में जिन्नों का वजूद कुर्आन से सिद्ध है, हो सकता है यह वही जिन्न हों और बहुत मुम्किन है कि संस्कृत भाषा भारतीय जिन्नों की भाषा हो जो इन्सानों से मिलने जुलने से इन्सानों तक पहुंची हो। (वल्लाहु अअ्लम)

## खजाना:

कुछ आ़मिल अपने वज़ाइफ़ के जरीओ़ जिन्नों के वास्ते से ज़मीन में दफ़्न ख़ज़ानों के पता देने का दअ़्वा करते हैं यह निरा धोखा है ऐसे आ़मिलों के चक्कर में आकर धोखा नहीं खाना चाहिए।

## जिन्नो में रसूल:

कुछ इ़ल्म वालों (विद्वानों) का मत है कि जिन्नों में रसूल नहीं गुज़रे, इन्सानों के रसूलों द्वारा ही उन तक ख़ुदाई पैगाम पहुंचाया गया और कुछ विद्वानों का कहना है कि नहीं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पहले उन में उनके रसूल भी होते थे। शैख़ यासीन अह्मद ने अपनी किताब " कश्फुस्सितार अन अबातीलिल अर्राफीनल्अश्रार के पृष्ठ ७१ पर हज़रत इब्नि अ़ब्बास का क़ौल नक़्ल किया है कि "हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से पहले जिन्नों में भी अपनी क़ौम के लिए रसूल होते थे, चुनांचि जिन्नों ने युसुफ़ नाम के एक रसूल को क़त्ल किया था।

सूर–ए–अन्आम की आयत १३१ का अनुवाद इस प्रकार है।

"ऐ जिन्नात और इन्सानों की जमाअ़त क्या तुम्हासरे पास तुम ही में के पैग़म्बर नहीं आए थे जो तुम से मेरे अह्काम (आदेश) बयान किया करते थे और तुम को इस आज के दिन की ख़बर दिया करते थे।" इस से भी इशारा मिलता है कि जिन्नों में रसूल भेजे गये होंगे विशेषकर इन्सानों से पहले वाले जिन्नों में जिन्नी रसूल ज़रूर भेजे गये होंगे।

(पृष्ठ २० का शेष)

ने उपासना करार दिया है।

६ इस्लाम ने बताया है कि खुदा के नजदीक दुन्या के सब मनुष्य बराबर हैं। कोई छोटा–बड़ा नहीं है। बड़ा वही है जो सबसे ज्यादा नेक व॰चरित्रवान हो।

७. इस्लामी शिक्षा के अनुसार दिल का सच्चा होना और नियत साफ होना, ये दो बाते इस्लाम का निचोड़ और सारतत्व है।

८ खुदा ने आदेश दिया है कि बेईमानी, छलकपट धरोहर में काट–कपट जुआ खेलना और व्यापार में हर प्रकार की धोखेबाजी और लालच हराम है।

९ इस्लाम का आदेश है कि गरीब और कमजोर बन्दों को कर्ज चुकाने में समय दें। पूरे कर्ज अथवा थोड़ा बहुत कर्ज माफ कर दें।

१० किसी भी दुखी और बीमार की हालत देखकर उस पर दया करना उसके प्रति हमदर्दी से पेश आना और कुसूरवार के कुसूर माफ करने की शिक्षा इस्लाम देता है।

११ दीन के मामले में अपने से बेहतर और दुनिया के मामले में अपन से कमतर लोगों को देखने तथा मन में घमण्ड न आने देने की सीख इस्लाम देता है।

# रूबोट

जिन्दगी के धारे में कम्प्यूटर की एक शक्ल रूबोट है जो इंसान का मशीनी सेवक है। आज यह मशीनी सेवक निर्माण और विकास के स्टेजेज़ तय कर रहा है। रूबोट पर काम करने वाले वैज्ञानिक विभाग रूबोनेक्स कहलाते हैं। आज कल गाड़ियां बनाने वाले कारखानों में रूबोट का खूब इस्तेमाल हो रहा है। वह विभिन्न हिस्सों को जोड़ते हैं और बाज का काम सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर लेजना होता है। कुछ रूबोट गाड़ी को रंगते हैं। बहुत सी दूसीर कम्पनियां भी विभिन्न कार्यों के लिए रूबोट का प्रयोग कर रही हैं।

भविष्य में मशीनी नौकर हमारे घरों में पहुंच जाएंगे। बल्कि वैज्ञानिक कहानियों और फिल्मों की तरह स० २०३० तक यह अधिक क्षमता वाले हो चुके होंगे और बड़े बड़े कामों में हाथ बटाया करेंगें। पौधों की सिंचाई और गाड़ी धुलाई और घर की सफाई जैसे कामों से लेकर जीवन के अन्य कार्यकलापों में अपनी बुद्धि का भरपूर प्रयोग करते नजर आयेंगें। घर के बाहर दुकानों, होटलों और अस्पतालों में भी रूबोट अपनी उपयोग्यता और महत्व का सिक्का जमा लेंगे। कहीं तो यह खाने का आर्डर ले रहे होंगे और कहीं बीमारों के गले में दवा टपका रहें होंगे। कहीं ऐटमी बिजली घरों का ऐटमी कूड़ा करकट उठाने पर तैनात होंगे और कहीं समुद्र की गहराइयों में उतर कर ज्ञान के खजाने निकाल रहे होंगे। रूबोट अंतरिक्ष में आज से अधिक कार्य करते नजर आयेंगे।

निकट भविष्य के रूबोट कृत्रिम (मसनूई) बुद्धि से मालामाल और फैसला करने की क्षमता भी रखते होंगे यह परिस्थितियों से खुद निपटने के योग्य होंगे। अब तक रूबोट को प्रोग्रामर और कन्ट्रोलर की आवश्यकता थी जो इस के हाथ पैर को कन्ट्रोल करता था। फैसले की क्षमता हासिल कर लेने के बाद यह जीवन के हर पक्ष में इन्कलाबी बुद्धिमानी का कार्य करते नजर आयेंगे।

कृत्रिम बुद्धि पर १९५० की दहाई से लेकर अब तक बेतहाशा काम हुआ है खूब धूम धडक्के से हुआ है। इसे देख कर शोध करने वालों (तहकीक़कारों) को यह पूरी आशा है कि वह बहुत जल्द अपने लक्ष तक पहुंच जायेंगे और ऐसे रूबोट इजाद कर लेंगे जिस में इंसानी दिमाग की तरह सोचने समझने और फैसला करने की क्षमता मौजूद होगी।

दूसरे शब्दों में वह ऐसा कम्प्यूटर बनाना चाहते हैं जो इंसानी दिमाग का स्थान लेसके। आज इन प्रयासों का नतीजा "आंशिक सफलता" के रूप में तो सामने आया है लेकिन पूरी सफलता का लक्ष हम से और अधिक मेहनत और शोध की मांग करता है। भविष्य में वर्तमान युग के बुद्धिमान रूबोट बालिग होने की स्टेज तक पहुंच चुके होंगे। इनकी बदौलत अतिअधिक बुद्धिमान, स्वंतत्र और अपनी गलतियों से सबक हासिल करने वाले रूबोट तैयार होने शुरू हो जाएंगे। इन कर्मचारियों को वेतन भी नहीं देना पड़ेगा और उनके खाने और वस्त्र के खर्च से भी छुटकारा मिल जायेगा, बैटरी डालिये या बैटरी चार्ज कीजिये और वर्षों चलाईये। घर पर रूबोट का राज होगाऔर घर के लोग पिछले समय के बादशाहों के समान ऐश व आराम से रहा करेंगे।

अनुवाद-- हबीबुल्लाह आज़मी
(राष्ट्रीय सहारा उर्दू के सौजन्य से)

जनाब मौलाना सय्यिद अ़ब्दुल्लाह अ़ब्बास नदवी के निधन पर इदारा शोकमय है। सच्चा राही अपने एक अहम रहनुमा से महरूम हो गया। हम सब मौलाना की मग़्फ़िरत की दुआ करते हैं। हम सब उनके बेटों ज़िया अ़ब्दुल्लाह, ताहा अ़ब्दुल्लाह और सभी घर वालों के ग़म में बराबर के शरीक हैं। (हारून रशीद)

(पृष्ठ ५ का शेष)

पैरवी करें।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) ने फरमाया, मुसलमानों ! अल्लाह से डरो पांचो वक्त की नमाज पढ़ो, रमजान के रोजे रखो, अपने माल की जकात दो, जब किसी को अमीर बनाओ तो उसकी इताअत करो नतीजा यह होगा कि अपने रब की जन्नत में दाखिल होगे।

**Mohd. Saleem**
Mob. : 9415782827
(R) 268177, 254796

**New King Shoes**

Shop No. 8-9, New Market,
Nishat Ganj, Lucknow-226006

# धर्म

*नोटः डाक्टर अब्दुल लतीफ साहिब ने इस्लाम के विषय में जो कुछ लिखा यह उनका पैतृक ज्ञान नहीं खुद का अध्ययन है अतः बहुमूल्य है।*

धर्म मनुष्य को सही दिशा का ज्ञान कराता है। धर्म का तात्पर्य है ईश्वर के आदेशों को मानना और उसके आदेशों पर चल कर अपनी जिन्दगी गुजारना। यह आदेश हमे समय समय पर धर्म ग्रन्थों से मिले है जो धर्म ग्रन्थों में संकलित हैं। यह धर्मग्रन्थ हमें ईश्दूतों द्वारा पहुंचे जो अनुयायियों द्वारा संकलित है और जो ऋग्वेद, सामबेद, अथर्वेद, यजुबेद, तौरेत, जबूर, इन्जील, गीता और कुरआन इत्यादि के नाम से प्रसिद्ध हैं।

## *धर्म क्या है?*

धर्म एक अलौकिक शक्ति से सम्बन्ध समस्त विश्वासों, भावनाओं और क्रियाओं के सम्मिलित रूप का नाम है। यह सभी लोग मानते हैं। विद्वानों ने अपने ढंग से धर्म की परिभाषा अपने अपने ढंग से की हैं।

धर्म एक अलौकिक शक्ति (ईश्वर) द्वारा बनाया गया कानून है। जो समस्त मानव जाति के लिये एक सही मार्ग का निर्देशक है। इसका ज्ञान समय समय पर ऋषियों, मुनियों, पैगम्बरों के माध्यम से होता रहा है। मानव समाज को बुराईयों से बचाने के लिए इश्वरीय कानून का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। धर्म ही वह फार्मूला है जो मनुष्य को अच्छाईयों और बुराईयों में यानी अच्छे और बुरे कर्मों में फर्क करने की शक्ति देता है वरना पशु और मनुष्य में फर्क ही क्या है।

## *सच्चा व पसन्दीदा धर्म ''इस्लाम''*

कुरआन में अल्लाह ने फरमाया है :

''इन्न्द्दीन इन्दल्लाहिल इस्लाम'' यानी निःस्संदहेह अल्लाह के यहा पसन्दीदी दीन इस्लाम ही है। पिछले तमाम धर्मों में जब फेर बदल हो गया तो अंत में अल्लाह ने इस्लाम धर्म भेजा और इस की सुरक्षा का एअलान कर दिया अतः अब जिसने इस्लाम के अलावा कोई धर्म दूसरा अपनाया वह हरगिज स्वीकार नहीं किया जायेगा क्योंकि तमाम नबियों के सरदार और इन्सानों के आखिरी पेशवा हजरत मुहम्मद (सल्ल०) करार दिये गये है। इस्लाम पवित्र कुरान पर आधारित धर्म है। कुरआन ईश्वरी ग्रन्थ है और हजरत मुहम्मद (सल्ल०) पर अवतरित हुआ है। (हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की जिन्दगी न केवल मुसलमानों के लिए बल्कि सारी दुन्या के लिए अनुकरणीय रहमत है।

## *इस्लाम की विशेषताऐं*

इस्लाम सिर्फ ईश्वर और मनुष्य के बीच सम्बन्ध स्थापित करने का साधन मात्र नहीं है बल्कि यह ऐसा तरीका बताता है जो इन्सान को जिन्दगी के हर क्षेत्र में नैतिकता और चरित्र की उचाईं पर पहुंचने और इन्सान को इन्सान से जोड़ने में सहायक होता है

२. इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसमें जोर जबरदसती अथवा दबाव की कोई गुन्जाइश नहीं है। कुरआन के स्पष्ट शब्दों में अल्लाह ने कहा है "ला–इकराह–फिद्दीन" अर्थात धर्म के मामले में कोई जोर जबरदस्ती की गुन्जाइश नहीं है।

३. इस्लाम अपने मानने वालों को स्पष्ट रूप से कहता है कि ऐसी बात मत कहो जिससे किसी दूसरे का दिल दुख जाए अथवा उसकी आत्मा में कष्ट हो। इसलिये किसी के झूठे खुदाओं को भी बुरा कहने की मनाही की गयी है क्योंकि हो सकता है आवेश वश नाराज होकर कहीं तुम्हारे सच्चे खुदा को बुरा न कहे।

४ मनुष्य को जीवन में सबसे पहला वास्ता माता पिता से पड़ता है। इस्लाम में उनके आज्ञापालन को अनिवार्य कर्तव्य करार दिया है। यहां तक आदेश दिया गया है कि यदि माता पिता नास्तिक भी हो तो धार्मिक मामले को छोड़कर तमाम दूसरे मामलों में उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाए।

५ माता पिता के बाद मनुष्य का वास्ता बीवी बच्चों से पड़ता है। इस्लाम के अनुसार जो मुसलमान सुबह से शाम तक मेहनत करके जायज तरीके से अपने बाल बच्चों का पालन पोषण करता है वह उन लोगों से उत्तम है जो केवल उपासना में लीन रहते है। इस्लाम यह नही चाहता कि मनुष्य संसार से अलग रहकर उपासना करे बल्कि सांसारिक कार्यों को भी इस्लाम

(शेष पृष्ठ १८ पर)

# तर्बियत

माखूज

आपने उस बच्चे पर भरोसा करके बहुत गलत काम किया मैंने आपसे कहा था कि जिसको एक बार चोरी की आदत पड़ गई सो पड़ गई अब उसका नतीजा भुगतये, खुरशीद बुरी तरह नाराज थे।

यह आप कैसे कह सकते है कि पैसे उसी बच्चे ने लिये हैं, कोई और भी तो यह काम कर सकता है....." खदीजा समझाते हुवे बोली " और कोई का क्या मतलब है। इस घर में आप, हमारे बच्चे और शकील के अलावा और कौन रहता है, न ही नौकर चाकर है और न, ही कल से कोई मेहमान आया है। अगर शकील ने यहां से दस हजार रूपये नहीं लिये तो क्या हमारे बच्चे चोर हैं या फिर तुम या मैं.....? खुरशीद का पूरा पूरा शक शकील पर था। "देखये रूपये न तो आप ने लिये है और न मैंने.....? और मुझे पूरा यकीन है कि रूपये शकील ने भी नहीं उठाये हैं।" खदीजा ने कहा तो खुरशीद का पारा जैसे आसमान को छू गया, उनकी आवाज़ ऊंची हो गयी "आप कहना क्या चाहती हैं, अगर शकील चोर नहीं तो क्या मेरे बच्चे उज़ैर सुहैल चोर हैं? आप कैसी मां हैं, एक गैर लड़के की तरफदारी कर रही हैं और अपने बच्चों को चोर साबित करने पर तुली हैं। आप क्या भूल गयी हैं कि किन हालात में आप शकील को इस घर में लाई थीं, मैंने उस वक्त आपको बहुत समझाया था लेकिन सब बेसूद.. ..... बात दस हजार की नहीं है..... ..... मैं बस आपसे यह कहना चाहिता हूँ कि आप शकील से कहें कि वह अपना बन्दोबस्त दूसरी जगह कर ले.. ..... और हां एक बात और ध्यान में रखये कि आइन्दा मेरे मासूम बच्चों पर इस तहर का इल्जाम लगाने से पहले दस बार सोच लीजियेगा" खुरशीद कहते हुवे दरवाजे से निकल गए।

खदीजा सर पकड़ कर वहीं कुर्सी पर बैठ गयी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह इस परेशानी को कैसे हल करे, वह इस बात को मानती थी कि इसमें खुरशीद का कोई कुसूर नहीं है क्योंकि जिन हालात में वह शकील को अपने धर लाईं थी, वह हालात खुरशीद को इस तरह सोचने पर मजबूर कर रहे थे।

शकील उनकी मरहूम (स्वरगीय) बहन उज़मा का लड़का था। उसके बाप ने दूसरी शादी कर ली तो सौतेली मां के जुल्म व सितम से बचाने के लिए उसके नाना उसे घर ले आए थे बेटी का गम उनसे बरदाश्त न हो सका और वह भी चल बसे।

शकील सौतेली मां के जुल्म व जियादती से तो बच गया लेकिन अपनी मुमानियों के जाल में फंसता चला गया, मुमानियां उसे एक मुहरे की तरह इस्तेमाल करने लगी, आपसी रंजिश वह इस बच्चे से गलत काम करवाकर निकालती थीं। किसी दिन छोटी मामी ने शकील से कहा " मेरा प्यारा बच्चा जरा बड़ी मामी के कमरे में शीशे को जो खूबसूरत सा घर है, वह उठा लाओ, शकील भागा भागा गया और वह खूबसूरत घर लेकर उनके कमरे में आ गया, बड़ी मामी ने उसे इस बात के पांच रूपये दिये और बोली बेटा यह बात किसी को न बताना। शकील मुहब्बत का पियासा, मुमानियों की साजिशों (षडयंत्रों) की दलदल में ऐसा फंसता गया कि एक दिन उस पर चोरी का इल्जाम लगा। अब वह कैसे कहे कि यह काम मैंने किया तो है लेकिन बड़ी मामी के कहने पर छोटी मामी की चैन उन्हें लाकर दी है। मामुओं ने जिन्होंने कभी अपने भांजे की खबर न लीा कि वह क्या कर रहा है क्या नहीं कर रहा है। क्योंकि मामियों के इतने जुल्म व जियादती के बावजूद एक बात थी कि उन्होंने उसे स्कूल में दाखिल करा रखा था। इस वक्त वह आठवीं किलास में पढ़ता था, यह मेहरबानी भी इस लिये कि मामुओं को एहसास रहे कि उनकी बीवियां भांजे की काफी देखभाल करती हैं। शकील बच्चा तो था लेकिन इतना भी नहीं कि वह यह न समझ सके कि उसके साथ क्या हो रहा है, वह हर गलत काम करने के बाद अपने आप को समझाता कि अब अगर उससे कोई भी मुमानी कहे वह कोई गलत काम नहीं करेगा लेकिन जब मामियां उससे मां की तरह लहजे में मिठास लेकर सामने आतीं तो वह अपने आप से किया हुआ अहद

(प्रतिज्ञा) भूल जाता और मजबूर हो जाता एक और गुनाह करने के लिए। अब तो यह हाल था कि शकील को इस दुन्या में कोई भी अपना महसूस नहीं होता था। सभी लोगों ने शकील को चोर मान लिया था लेकिन सिर्फ और सिर्फ खाला तनहा हस्ती थीं जिन्होंने शकील पर एतिबार किया कि उसके पास कोई चैन नहीं है।

मांमुओं ने अपना फैसला सुना दिया कि वह इस चोर को अपने घर में नहीं रखना चाहिते क्योंकि उसकी देखा देखी उनके बच्चों में भी बुरी आदतें पड़ सकती हैं। आखिरकार खदीजा खाला अपनी मरहूमा बहन की निशानी को अपने साथ ले आईं और बिल्कुल अपने बच्चों की तरह परवरिश करने लगीं। खुरशीद साहब ने यह मुआमला सुना तो वह भी इस हक (पक्ष) में नहीं थे कि इस बच्चे को अपने घर रखा जाए। लेकिन बीवी के समझाने पर राजी हो गए। अब शकील उस घर का सदस्य था जो चीज खदीजा खाला अपने बच्चों के लिए लातीं, वही शकील के लिए लातीं, खुरशीद भी शकील के साथ अपने बच्चों जैसा सुलूक करते, जब शकील को पूरा भरोसा हो गया कि यह मुहब्बत वाक़ई सच्ची मुहब्बत है तो एक दिन वह खदीजा खाला के पास पहुंचा और सारी हकीकत (वास्तविकता) बता दी और साथ में खाला से यह भी वादा लिया कि खालू जान से इस बाबत कोई बात न करें, इन चार सालों की मुहब्बत ने उसकी शिकायत को दूर कर दिया था।

खदीजा को शकील पर एतिमाद (विश्वास) तो था लेकिन दिल में एक फास थी कि वह कुछ बोलता क्यों नहीं? और आज उनकी महब्बत ने उस से वह सारी बातें अपने आप उगलवा दी थीं। वह खुश थीं कि उनका एतिमाद (विश्वास) गलत साबित नहीं हुआ।

अम्मी आप कहां खो गईं, इतनी देर से मैं आप को आवाजें दे रहा हूं। उजैर ने खदीजा के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा – "हां, बोलो बेटा क्या काम है?" खदीजा बोलीं।

"अम्मी, वह शकील भाई घर छोड़ कर जा रहे हैं।" उजैर ने कहा तो खदीजा दौड़ती हुई शकील के कमरे में पहुंची तो वहां पहले से ही मौजूद सुहैल उसे रोकने की कोशिश कर रहा था, "भाईआप क्यों जा रहे हैं, मत जाइये ..... गलती मेरी है, मैंने चोरी की है तो सजा आप क्यों भुगतें। मैं अभी जाकर पापा से कहे देता हूं कि चोरी मैंने की थी।"

सुहैल और शकील की पीठ दरवाजे की ओर थी, इसलिए दोनों ही कमरे में दाखिल होते उजैर और खदीजा को न देख सके।

"नहीं सुहैल, यह गलती मत करना, तुमने एक गलती की और दूसरी बड़ी गलती अपने मां बाप के एतिमादा (विश्वास) को ठेस पहुंचाकर करोगे, मैं जानता हूं कि तुमने यह कदम नासमझी से उठाया तुम्हें किसी की मदद करनी थी तो तुम खाला जान और खालू जान से बात कर सकते थे। मैं जानता हूं कि वह दोनों बहुत अच्छे इनसान हैं बल्कि इन्सान की शकल में फरिश्ता हैं। अगर मुझे खालू जान धक्के देकर भी इस घर से निकालें तो मैं यहां से कहीं नहीं जाऊंगा, क्योंकि मैं यह महसूस करता हूं कि यहां से जाने के बाद मेरे लिये इस घर ने और इस घर के रहने वालों ने जो कुछ किया है, सब पर पानी फिर जाएगा और मैं नहीं चाहिता मेरी वजह से इन बुजुर्ग हस्तियों का सर कभी नीचा हो।

इन दोनों की वजह से ही मैंने आज यह मुकाम हासिल किया है कि स्कालरशिप पर मुझे बाहर पढ़ने के लिए भेजा जा रहा है, मैं यह घर इसलिए छोड़ कर नहीं जा रहा हूं कि मुझे खालू जान का कहना बुरा लगा बल्कि इसलिए जा रहा हूं ताकि एक दिन जब मैं बड़ा आदमी बनकर आऊं तो मेरी इस गलती को जो मैंने नहीं की, इसको फरामोश करके (भुला करके) मुझे अपने गला से लगा लें ..... सुहैल तुमसे अगर मैं कुछ मांगूं तो दोगे।" शकील ने उससे नजरें चुराते हुये कहा –

"बोलिये भाई जान, अगर आप मेरी जान भी मांगेंगे तो हाजिर हैं ..... ..... सुहैल रोते हुए बोले,

"शुकरिया मेरे भाई, मैं तुम्हारे जज़्बात (मनोभाव) की क़द्र (आदर) करता हूं ..... मैं चाहिता हूं कि तुम इस बात का जिक्र किसी से न करना, अगर खाला जान की निगाह में मैं चोर हूं तो यही सही ..... उन्हें हकीकी (वास्तिविकता) का पता नहीं चलना चाहिए। मैं अपने खालू जान का अपने मोहसिन (उपकारी) का सर हमेशा इज्जत से ऊंचा देखना चाहिता हूं।" शकील की आवाज भर्रा गई।

दरवाजे पर सामने खड़े उजैर खदीजा और उनके पीछे खड़े खुरशीद की आंखों में आंसू थे लेकिन चेहरे पर इत्मीनान और बहुत कुछ पा लेने की ऐसी चमक थी, जिससे उनके घर के दरोदीवार तक रोशन हो गए।

(राष्ट्रीय सहारा उर्दू के शुकरिये के साथ)

# वैदिक काल की सभ्यता

## इतिहास के पन्नों से

इदारा

राजनीतिक दशा — उत्तर वैदिक काल में आर्यों की राजनीतिक स्थिति में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया था, जो निम्नलिखित दशाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

१. शासन क्षेत्र में परिवर्तन— ऋग्वैदिक आर्यों की राज–सत्ता केवल सप्त सिन्धु तक ही सीमित थी, परन्तु अब वे सप्त–सिन्धु से कुरूक्षेत्र में पहुंच गये और यही उनके शासन का केन्द्र बन गया था। परन्तु उनकी राज–सत्ता कुरूक्षेत्र तक ही सीमित न रही। वे धीरे–धीरे पूर्व की ओर बढ़ते गये और विदेह अथवा उत्तरी बिहार उनका कार्य केन्द्र बन गया कालान्तर में वे अनार्यों के भी घनिष्ठ सम्पर्क में आ गये और दक्षिण भारत में भी अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का प्रचार उन्होंने आरम्भ कर दिया।

२. राजा की शक्ति में वृद्धि — ऋग्वैदिक काल में राज्य का आकार बहुत छोटा होता था परन्तु अब बड़े–बड़े राज्यों की स्थापना की गई और राजा लोग पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली हो गये। अब वीर, विजयी, राजा, सार्वभौम एकराट आदि उपाधियों से अपने को विभूषित करने लगे और राजसू, वाजपेय, अश्वमेघ आदि यज्ञ करने लगे जो उनकी सत्ता के सूचक होते थे। अब राजा देवता स्वरूप समझा जाने लगा था और उनकी आज्ञा का पालना करना आवश्यक था। यद्यपि राजा का पद भी वंशानुगत था परन्तु निर्वाचन–प्रणाली भी आरंभ हो गई थी। निर्वाचन राजवंश तक ही सीमित था।

३. सीमित राजतंत्र — यद्यपि इस काल में राजा ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा अधिक स्वेच्छाचारी तथा निरंकुश हो गया था परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि राजा मनमाना–कार्य करता था और उस पर कोई नियंत्रण नही रहता था। राजा मानता था कि वह राजा की सभी आज्ञाएं मानने के लिए बाध्य न था। कभी–कभी पुरोहित राजा के विरूद्ध विद्रोह भी कर देता था। राजा को यह शपथा लेनी पड़ती थी कि पुरोहित के साथ वह कभी धोखा न करेगा। राज्य के नियमों तथा ब्राहमणों की रक्षा करना राजा का परमधर्म होता था। राजा पर धर्म का भी बहुत नियंत्रण रहता था। अतः उसे धर्मानुकूल ही शासन करना पड़ता था।

४. पदाधिकारियों में वृद्धि : उत्तर वैदिक काल में ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा पदाधिकारियों की संख्या तथा उनके अधिकारों में बड़ी वृद्धि हो गयी थी परन्तु अब स्थापित, निषाद–स्थापित, शतपति आदि नये पदाधिकारी भी उत्पन्न हो गये थे। स्थपति संभवतः राज्य के एक भाग का शासक होता था औरउसे शासन के साथ–साथ न्याय के भी कार्य करने पड़ते थे। निषद–स्थपति संभवतः उस पदाधिकारी को कहते थे जो उन आदि–निवासियों पर शासन करता था, जिन पर आर्यों ने विजय प्राप्त कर ली थी। शतपति नाम पदाधिकारी के अनुशासन में संभवतः सौ गांव रहते थे। पुराने पदाधिकारियों के अधिकारों में वृद्धि हो गयी थी। सिंहासन से उतर कर राजा पुरोहित को प्रणाम करता था और उसके साथ धोखा न करने की शपथ लेनी पड़ती थी। अब राजा रण–क्षेत्र में कम ज़ाया करता था, अतएव रण क्षेत्र में सेनानी ही सेना का संचालन करता था। फलतः उनके प्रभाव में भी वृद्धि हो गयी थी। ग्रामीण के अधिकार तथा प्रभाव में भी वृद्धि हो गयी थी। ग्रामीण के अधिकार तथा प्रभाव में तो इतनी वृद्धि हो गयी थी कि उसे राजकृत अर्थात राजा का बनाने वाला कहते हैं।

५. सभा तथा समिति की शक्ति में कमी — यद्यपि सभा तथा समिति का अस्तित्व उत्तर वैदिक काल में भी बना रहा परन्तु अब उनके अधिकार तथा प्रभाव में बड़ी कमी हो गयी थी। यह ध्यान देने की बात है कि समिति बड़ी संस्था थी और सभा छोटी। अब राज्य विस्तार बढ़ जाने के कारण समिति का जल्दी जल्दी बुलाना संभव न था। अतएव राजा उसके परामर्श की अपेक्षा करने लगा और अपने निर्णय से अधिकांश कार्य करने लगा। सभा का भी महत्व घट गया और वह केवल न्याय के कार्यों में थोडा भाग लेती थी।

६. न्याय–व्यवस्था में सुधार — उत्तर वैदिक कालीन न्याय–व्यवस्था ऋग्वैदिक काल की न्याय–व्यवस्था की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ तथा व्यापक हो

गई थी। अब राजा पहले से अधिक न्याय के कार्यों में रूचि लेने लगा। परन्तु अपने न्याय के अधिकारों को वह प्रायः अपने पदाधिकारियों को दे दिया करता था। गांवों के झगड़ों का निर्णय ग्राम्यवादिन करता था जो गांव का न्यायधीश होता था। ब्राह्मण की हत्या बहुत बड़ा अपराध समझा जाता था। ब्राह्मण को प्राण–दण्ड नहीं दिया जाता था। सोने की चोरी तथा सुरापान की बहुत बड़ा अपराध समझा जाता था। दीवानों के मुकदमों का निर्णय प्रायः पंचों द्वारा कर दिया जाता था।

सामाजिक दशा – यद्यपि उत्तर–वैदिक काल के आर्यों के गृह–निर्माण, वेश–भूषा, खान–पान, मनोरंजन आदि से कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, परन्तु सामाजिक जीवन के कई क्षेत्रों में बहुत बड़े परिवर्तन हुए। यह परिवर्तन निम्नलिखित थे :–

(१) नगरों का प्रादुर्भाव : ऋग्वैदिक आर्य केवल गांवों में ही निवास करते थे। उन्होंने नागरिक जीवन को नहीं अपनायाा था। ऋग्वेद में कहीं पर भी नगर का उल्लेख नहीं मिलता। परन्तु जब आर्य लोग गंगा–यमुना के उपजाऊ मैदान में आ गये तब उन्होंने बड़े–बड़े नगरें को बसाया तथा उनमें निवास करना आरम्भ कर दिया। अब यही नगर राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन के केन्द्र बन गये।

(२) भोजन में परिवर्तन : उत्तर वैदिक काल के आर्यों ने अपने भोजन में भी थोड़ा बहुत परिवर्तन कर दिया। अब मांस–भक्षण घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा और ब्राह्मणों के लिए इसका निषेद हो गया। अथर्वेद के एक सूक्त में मांस–भक्षण को सुरापान के साथ पाप बतलाया गया है इससे स्पष्ट है कि अहिंसा का बीजारोपण इस काल में हो गया था। अब सोम के स्थान पर मासर, पूतिका, अर्जुनानी आदि अन्य पेय पदार्थों का प्रयोग होने लगा था।

(३) मनोरंजन के साधनों में वृद्धि– उत्तर वैदिक काल में कुछ नये मनोरंजन के साधन निकल आये थे। इस युग में शैलूष अर्थात नाटक करने वालों का उल्लेख मिलता है। इससे पता लगता है कि नाटक का खेल भी मनोरंजन का एक प्रधान साधन बन गया था। वीणा–गायिन तथा शत–तन्तु का भी उल्लेख मिलता है। वीणा–गायिन लोग वीणा बजाकर वीरों की गाथाएं गाया करते थे। शत–तन्तु एक प्रकार का बाजा होता था जिसमें सौ तार लगे होते थे।

(४) स्त्रियों की दशा में परिवर्तन– उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की दशा पहले से अधिक बिगड़ गई थी। अब राजवंशों तथा सम्पन्न परिवारों में बहु–विवाह की प्रथा प्रचलित हो गई थी। अतएव इनके घरों की स्त्रियों का जीवन बड़ा कलहपूर्ण हो गया था। अब कन्याओं को दुःख का कारण समझा जाता था और उनके जन्म से लोग दुखी होते थे। परन्तु कन्याओं की शिक्षा पर अब भी ध्यान दिया जाता था क्योंकि गार्गी, मैत्रेयी आदि बड़ी ही विदुषी कन्याओं के नाम लिखते हैं जो वैदिक वाद विवादों में भाग लिया करती थीं। यद्यपि यज्ञादि धार्मिक अवसरों पर स्त्रियों को भाग लेने का अधिकार था, परन्तु सार्वजनिक सभाओं आदि में अब वे नहीं आ जा सकती थीं। अब बाल–विवाह की प्रथा आरम्भ हो गयी और स्त्रियों का आचरण तथा आदर्श भी गिर गया था।

(५) वैवाहिक सम्बन्ध में जटिलता: उत्तर–वैदिक काल में विवाह सम्बन्धी नियम काफी कठोर हो गये थे। अब सगोत्री विवाह अच्छा नहीं समझा जाता था और भिन्न गोत्र में विवाह करना अधिक अच्छा समझा जाता था। अथर्ववेद से पता चलता है कि विधवा विवाह प्रचलित था। बहु–विवाह की प्रथा का प्रचलन हो गया था क्योंकि मनु के दस पत्नियां थीं। उच्च–वर्ण की कन्या का विवाह निम्न वर्ण में नहीं हो सकता। कन्याओं का विक्रय यदा–कदा हुआ करता था और दहेज प्रथा प्रचलित थी।

(६) वर्ण–व्यवस्था में जटिलता: ऋग्वैदिक काल की वर्ण–व्यवस्था ने अब जाति–प्रथा का रूप धारण कर लिया। अब व्यवसाय के स्थान पर जन्म उसका आधार हो गया। अब ऋग्वैदिक काल की चार जातियों के अतिरिक्त दो और जातियां बन गई थीं। इनमें से एक निषाद कहलाती थी और दूसरी वात्य। निषाद लोग अनार्य थे। सम्भवतः यह लोग भील जाति के थे। व्रात्य लोग सम्भवतः वह अनार्य थे जो ब्राह्मण धर्म को नहीं मानते थे। विभिन्न व्यवसायों के अनुसार अब वैश्यों में बढई लोहार, मोची आदि की उपजातियां बन गई थीं अब जाति–परिवर्तन अत्यन्त कठिन हो गया और अन्तर्जातीय विवाह को घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा।

(७) अस्पृश्यता का प्रादुर्भाव : जाति–प्रथा के बन्धन धीरे–धीरे जटिल होते जा रहे थे और रक्त की पवित्रता पर बहुत अधिक ध्याना दिया जाने लगा था। अब आर्य लोग अनार्यों के अत्यन्त

(शेष पृष्ठ २८ पर)

# मौजूदा दौर के लीडर

# और सातवीं शताब्दी के आदर्श शासक

इदारा

## वर्तमान लीडर

कभी लोग राजनीति में सेवा की भावना से आते थे, मगर आजादी के पचास बरस गुंजरते–गुजरते राजनीति पूर्ण रूप से धंधे में तब्दील हो चुकी है। हमारे जनप्रतिनिधि चाहे वे सांसद हो या विधायक उनके शाही ठाठ–बाट देखते ही बनते हैं। अभी पिछले दिनों रहस्योद्घाटन हुआ कि देश के प्रत्येक सांसद पर जनता की खून–पसीने की कमायी का मासिक छह लाख रूपया खर्च होता है। विधायकों के ठाठ–बाट को भी बरकरार रखने के लिए औसतन एक लाख से पांच लाख रूपये हर महीने फूंके जाते हैं। यह खर्च प्रत्यक्ष की बजाय परोक्ष रूप से अधिक किया जाता है।

वर्तमान में भारत की दो तिहाई आबादी गरीबी रेखा से नीचे अपना जीवन–यापन कर रही है। इस देश में ४० करोड़ लोग बेरोजगार हैं जिनमें से छह करोड़ तो शिक्षित बेरोजगारों की श्रेणी में आते हैं। इसके बावजूद हमारे जनप्रतिनिधियों को शिकायत रहती है कि उनके वेतन और अन्य भत्ता बहुत कम है। हालांकि पिछले एक दशक में पांच बार सांसदों ने अपने वेतन और भत्तों में खुद ही बेतहाशा वृद्धि कर ली है। मजेदार बात यह है कि पांचों बार यह फैसला सर्व सम्मति से बिना किसी विरोध के हुआ। गत वर्ष दिल्ली राज्य के मंत्रियों और विधायकों के वेतन में तीन गुना वृद्धि हुई। राजस्थान में भी मंत्रियों और विधायकों के वेतन में तीन गुना वृद्धि हुई। राजस्थान में भी मंत्रियों और विधायकों ने अपने भत्ते और वेतन चार गुना बढ़ा लिए।

आपको यह जानकर हैरानी होगी कि गर्मियां शुरू होते ही हमारे सांसद निरीक्षण की आड़ लेकर हिल स्टेशनों या विदेशों के भ्रमण पर निकल जाते थे। उनकी इन मौज–मस्ती पर सालाना ५० करोड़ रूपये फूंकते थे। संसद में ३० मंत्रालयों की संसदीय समितियां हैं। प्रत्येक में लोक सभा के २१–२१ और राज्य सभा के ११–११ सदस्य होते हैं। ये समितियां साल में कई–कई बार किसी न किसी बहाने की आड़ लेकर देश और विदेश के दौरों पर निकल जाती थी। यही सिलसिला विभिन्न राज्यों की विधान सभाओं में चलता था।

हरियाणा, पंजाब राज्यों के विधायक तो इसी बहाने विदेशों में भी घूम आते हैं। लेकिन भला हो लोक सभा अध्यक्ष भैरो सिंह शेखावत से मिलकर इन पर रोक लगा दी है। अब ये समितियां साल में दो बार से ज्यादा दौरे नहीं कर सकती और ठहरना भी सरकारी गेस्ट हाउस या सरकारी होटल में ही होगा। इससे सांसदों के मुंह का जायका बिगड़ गया है।

स्वाधीन भारत के निर्माताओं को यह आशा थी कि अंग्रेजों के जाने के बाद देश में जनता का राज होगा। लेकिन आज देश की राजनीति पर परिवारवाद, धन–दौलत और बाहुबल का शिकंजा पूरी तरह कस चुका है। एक समीक्षा के अनुसार भारत की राजनीति साठ परिवारों के कब्जे में हैं। देश की आम जनता का सरोकार राजनीति से खत्म होता जा रहा है। वह तो वोट अगर डालती भी है तो बुझे मन से। राजनीति अब धनवानों की दासी बन चुकी है। लोक सभा का चुनाव लड़ने के लिए आप के पास पांच से दस करोड़ रूपये होने चाहिए। जाहिर है देश के १० लाख में से केवल एक व्यक्ति ही यह जुआ खेल सकता है।

स्वाभाविक है कि जीतने के बाद ये जनप्रतिनिधि दोनों हाथों से दौलत बटोरते हैं। इसके लिए वह हर प्रकार का हथकंडा भी अपनाते हैं और तो और हमारे सांसद अपने सरकारी आवास गैर–कानूनी ढंग से किराये पर भी देते हैं। इनके सरकारी बंगलों में ढाबे, ब्यूटी पार्लर व प्लेसमेंट एजेंसियां चलायी जाती हैं।

वर्तमान संसद का स्वरूप भी बदल गया है। इस समय लोकसभा में ५५ प्रतिशत सांसद करोड़पति हैं। इनमें से १६० कानून बनाने वाले सांसद ऐसे भी हैं जिनका पुलिस के पास आपराधिक रिकार्ड है। इनमें से नौ मंत्री हैं। इनमें भी छह पर अदालतें फर्देजुर्म भी लगा चुकी हैं। हमारे ३०६ सांसदों को केन्द्र या राज्य सरकार ने ऐसा सुरक्षा कवच प्रदान कर रखा है, जिस पर हर साल २५० करोड़ रूपये खर्च होते हैं। अब जरा इनके बंगलों के

बारे में सुनिए—पं. नेहरू जिस तीन मूर्ति भवन में रहते थे उसका क्षेत्रफल ३० एकड़ था और उसमें ४२ कमरे थे। वर्तमान प्रधानमंत्री निवास भी २७ एकड़ में फैला हुआ है। इसमें ३० से अधिक कमरे हैं। दर्जनों कमरे स्टाफ व सुरक्षाकर्मियों के लिए हैं। कांग्रेसाध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी का बंगला दस जनपद में २० एकड़ में फैला है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी भी १३ एकड़ के बंगले में रहते हैं। अर्जुन सिंह का बंगला ८ एकड़ का है, तो शरद पवार का ७ एकड़ का है लेकिन मुरली मनोहर जोशी को ११ एकड़ का बंगला अलॉट है।

कमलनाथ भी ८ एकड़के बंगले में रहते हैं। जॉर्ज फर्नांडीज व जसवंत सिंह ६—६ एकड़ के बंगले में रहते हैं तो दलित नेता राम विलास पासवान के बंगले का क्षेत्रफल १४ एकड़ है। यही स्थिति अन्य नेताओं की भी है।

बात यहीं खत्म नहीं होती। इन नेताओं के बंगलों में लाखों रूपये का फर्नीचर भी होता है। एक—एक सोफा चालीस हजार से एक लाख तक का खरीदा जाता है।

मंत्रियों के पास ६ से १५ तक सरकारी कारें होती हैं जिनमें उनका स्टाफ सब्जियां तक खरीद कर लाता है। इसके अलावा मंत्रियों के घरों पर ५ से लेकर ११ तक एयर कंडीशनर लगे हुए हैं। इसके अलावा इन बंगलों में हर रोज शाही दावतें भी होती रहती हैं जिनमें नाना प्रकार के वेज और नान वेज खाद्य पेय पदार्थों पर जनता की गाढ़ी कमायी का धन पानी की तरह बहाया, उड़ाया जाता है। बिजली पानी का भी सारा खर्च जनता के सिर पर। गत वर्ष इन मंत्रियों और स्टाफ के विदेशी दौरों पर ७०० करोड़ के लगभग खर्च हुए।

शाहखर्ची व फिजूलखर्ची की यह तस्वीर उस देश की है जहां के नेता लोकतांत्रिक उपलब्धियों व जन सेवा का दम भरते नहीं अघाते।

## और अब सातवीं सदी ईसवी के आदर्श शासक

### हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हु)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वफ़ात के बाद मुसलमानों ने हज़रत अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) को ख़लीफ़ा चुना आप ने दो साल तीन महीने नौ दिन ख़िलाफ़त की और ख़िलाफत का हक़ अदा कर दिया। २२ जुमादल उख़रा १३ हिज्री को वफ़ात पाई।

इस इस्लामी हुकूमत के सब से बड़े सरबराह का हाल यह था कि एक रोज़ अहलिया (पत्नी) ने कहा कि कुछ मीठा पकाने को जी चाहता है। फ़रमाया मैं बैतुलमाल (इस्लामी हुकूमत का ख़जाना) से जितना लेता हूं उस में मीठा खाने की गुंजाइश नहीं है। अहलिया ने कहा मैं थोड़ा—थोड़ा रोज़ाना बचाकर कुछ जमा कर लूं। हज़रत अबू बक्र ने इजाज़त दे दी और जब इतना बच गया कि अब मीठा पकाने का इन्तिज़ाम हो सकता है तो बचाई हुई रक़्म हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) को पेश की कि बाज़ार से मीठा पकाने का सामान ला दें।

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने बाज़ार से मीठे का सामान लाने के बजाए उस रक़्म को बैतुल माल (इस्लामी कोष) में यह कह कर जमा कर दिया कि बरतने से मालूम हुआ कि इतनी रक़म बैतुलमाल से हम ज़ियादा ले रहे हैं इतना कम कर देने पर भी हमारा गुज़र हो सकता है और हम को उतना ही लेना चाहिए जिस में हमारा गुज़र हो जाए और बहुत ही हैरत की बात यह है कि आख़िर वक़्त वसीयत की कि मेरा फुलां बाग बेचकर क़ीमत बैतुलमाल में दाख़िल कर देना, इस लिए कि मुझे बैतुलमाल (इस्लामी ख़ज़ाने) से वज़ीफ़ा लेना पसन्द न था।

### हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०)

हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) ने अपने आख़िरी वक़्त में सहाब—ए—किराम की राय मालूम करके हज़रत उमर (रज़ि०) को ख़िलाफत के लिए नामज़द (नामांकित) कर दिया था, आप ने दस बरस छः महीने पांच दिन ख़िलाफ़त की। २७ ज़िल्हिज्जा २३ की सुब्ह को फ़ज्र की नमाज़ में मेहराब में छुपे अबू लूलू मजूसी ने ज़हरीले खंजर से आप को ज़ख़्मी किया। नमाज़ हो रही थी भागने का रास्ता न था, अबू लूलू हर सामने वाले पर वार करता हुआ भाग रहा था यहां तक कि सात सहाबा और शहीद हो गये और छः को ज़ख्म लगे जब तक नमाज़ ख़त्म हुई अबू लूलू ने जान लिया कि पकड़ जाऊंगा चुनाचि उस ने उसी खंजर से अपनी जान ख़त्म कर ली।

**हज़रत के जख़्मी हो जाने पर** — अबदुर्रहमान बिन औफ़ ने आगे बढ़कर नमाज़ पढ़ाई हज़रत उमर (रज़ि०) का बहुतेरा इलाज किया गया मगर वह पहली मुहर्रम स० २४ हिज्री को अपने रब से जा मिले। ऐसे जलाल वाला दूसरा कोई हाकिम (शासक) तारीख़ में नज़र नहीं आता

लेकिन उन की ज़ाती ज़िन्दगी में ज़रा झांकिये :

बैतुल माल से अपना वज़ीफ़ा (वेतन) बहुत कम रखवाया। कुछ व्यापार भी था लेकिन अब आप उस में वक़्त लगा न सकते थे। ख़र्च कम पड़ जाता क़र्ज़ लेने की नौबत आजाती उनका ज़ियादा ख़र्चा सरकारी मेहमानों पर होता। वह उनका ख़र्च बैतुलमाल से ले सकते थे लेकिन उनको यह अपनी आमदनी ही से खिलाते थे।

वह बैतुलमाल से अपने ख़र्च के लिए रोज़ाना सिर्फ दो दिरहम (६ ग्राम चांदी) लेते थे और साल में दो जोड़े कपड़े एक गर्मी का दूसरा सर्दी का, हज्ज के सफ़र के लिए सवारी। (तबकाते इब्नि सअ़द–३)

हज़रत मूसा अशअ़री का बयान है कि तीन रोटियां आप के लिए आतीं जिन में कभी ज़ैतून का तेल लगा होता कभी घी और कभी ख़ुश्क रोटियों के साथ दूध होता कभी गोश्त भी होता।

सालाना जो दो कपड़े लेते मोटे और खुर्रे होते फट जाते तो उनमें पेवन्द लगा लेते। एक बार दोनों कांधों के बीच कुर्ते में चार पैवन्द थे और लुंगी में बारह।

एक बार बैतुल मुक़द्दस में थे कि पीठ की तरफ़ आप का कुरता फट गया आप ने उतार कर किसी से पैवन्द लगवा कर धुलवाया, उसके साथ आप को एक नया कुरता भी पेश किया गया आपने नये वाले को यह कहकर वापस कर दिया कि वह बहुत नर्म है और पुराना खुर्दुरा ही पहन लिया।

फ़रमाया : मेरे दो साहिब थे मैं ने उनको जिस हालत में देखा है अगर मैं उस हालत के ख़िलाफ़ चलूं तो फिर मुझ को उनका साथ नसीब नहीं हो सकता।

एक रोज़ आप के बेटे अ़ब्दुल्लाह ने घी डालकर गोश्त पकाया तो आपने खाने से इन्कार कर दिया यह कहकर कि घी अलग सालन है और गोश्त अलग, फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को देखा है कि जब दो खाने जमअ़ (एकत्र) हो जाते तो एक को ख़ुदा की राह में दे देते।

यह हाल था उस ख़लीफ़ा का जिसके जलाल से आलम के सरकश हुक्मरां थर्राते थे।

## तीसरे खलीफा हज़रत उ़स्मान (रज़ि०)

हज़रत उ़मर (रज़ि०) की शहादत के बाद उन के आख़िर वक़्त के इशारे और सहाब–ए–किराम के मश्वरे से हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दामाद जिन को एक के बाद दूसरी बेटी व्याही गई जुन्नूरैन हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) ख़लीफ़ा हुए। बारह दिन कम बारह–साल ख़िलाफ़त का बोझ संभाले रहे। आख़िर में शैतानी ताकतों ने आप की मुख़ालफ़त शुरूअ़ की। घर घेर लिया गया, खाना पानी बन्द कर दिया गया चालीस दिनों से ज़ियादा यही हाल रहा । घर घेरने वाले मिस्री थे मदीने के लोगों ने मुक़ाबले की इजाज़त मांगी आपने इजाज़त न दी, तो कई नवजवान हथियारों के साथ आप की हिफ़ाज़त के लिए आप के दरवाज़े पर आ बैठे लेकिन शैतानी कुकर्मी १८ ज़िल्हिज्जा ३५ हि० को घर के पिछवाड़े से कोठे पर चढ़कर घर में उतर आए और आप को रोज़े की हालत में कुर्आन पढ़ने की हालत में शहीद कर दिया। (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून) उस अ़ज़ीम इस्लामी हुकूमत के सरबराह की ज़ाती ज़िन्दगी इस तरह की थी ।

जान देदी लेकिन मुख़ालिफ़ पब्लिक के ख़िलाफ़ लड़ने की इजाज़त मांगने वालों को भी इजाज़त न दी। शायद इस की नज़ीर दुन्या न पेश कर सके। इस्लामी शरीअ़त में उनको इस का हक़ था। लेकिन पब्लिक की जानें बचाने के लिए अपना शरअ़ी हक़ छोड़कर खुद क़ुर्बान हो गये।

हराम (अवैध) दिनों को छोड़कर पूरा साल रोज़ा रखते? हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद कहते हैं कि मैंने उन की ख़िलाफ़त के ज़माने में जुमे का ख़ुत्बा देते हुए उनको देखा उनके जिस्म पर पांच दिरहम से ज़ियादा के कपड़े न थे।

हज़रत हसन बसरी (रह०) कहते हैं कि मैंने हज़रत उ़स्मान को उनकी ख़िलाफत के ज़माने में देखा वह मस्जिद में बिछी ककरीयों पर बिना कुछ बिछाए लेटे थे और कंकरियों के निशानात उनके पहलू में बन गये थे। लोग कहते थे कि यह अमीरूलमोमिनीन हैं और इस हालत में रहते हैं।

## चौथे ख़लीफ़ा हजरत अ़ली (रज़ि०)

हज़रत उ़स्मान की शहादत के बाद ३५ हि० में आप ख़लीफ़ा हुए। आप हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के चचेरे भाई और आपकी सबसे छोटी और लाडली बेटी हज़रत फ़ातिमा के शौहर है। तीन दिन कम पांच साल आप ने खिलाफ़त का काम किया। १८ ज़िल्हिज्जा सन् ४० हिजरी को सुब्ह मस्जिद जाते अ़ब्दुर्रहमान बिन मुल्जिम ख़ारिजी ने आप को शहीद कर दिया। (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून)

हज़रत अ़ली के साथ रहने वाले ज़िरारा असदी बयान करते हैं कि : लिबास उन को वही पसन्द था जो सस्ता हो, खाना उनको वही पसन्द था जो सब से कम दर्जे का हो।

मुक़ाबला करो आज के लीडरों का उन आदर्श शासकों से जिन्हों ने फ़कीराना ज़िन्दगी के साथ आदर्श शासन चलाया। तफ़्सील (विस्तार) से पढ़ने के लिए देखें उर्दू में "मिसाली हुक्मरां और हिन्दी में" आदर्श शासक

(पृष्ठ २४ का शेष)

घनिष्ठ सम्पर्क में आ गये थे जिन्हें अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखते थे अत:एव छुआछूत की भावना उत्पन्न होने लगी। उच्च–वर्ण वाले अब शूद्रों के साथ–साथ खान–पान नहीं करते थे और उन्हें स्पृश्यता समझने लगे थे।

(८) आश्रम–व्यवस्था की दृढ़ता : उत्तर वैदिक काल में आश्रम व्यवस्था अर्थात ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास अत्यन्त सुदृढ़ हो गयी थी और उच्च वर्ण वालों का इनका निश्चित रूप से पालन करना पड़ता था।

(९) वंशानुगत उद्योग–धन्धे : अब व्यवसाय वंशानुगत हो गया था और एक परिवार के लोग एक ही व्यवसाय करने लगे। यही कारण था कि उपजातियों की संख्या धीरे–धीरे बढ़ने लगी।

(१०) शिक्षा के महत्व में वृद्धि : वैदिक यज्ञों में वृद्धि हो जाने के कारण शिक्षा के महत्व में वृद्धि हो गयी। यद्यपि शिक्षा का मुख्य विषय वेदों का अध्ययन ही था परन्तु वैदिक मन्त्रों के साथ–साथ विज्ञान, गणित, भाषा, युद्ध–विद्या आदि की भी शिक्षा दी जाने लगी।

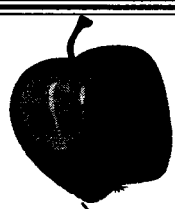

# सेब का जूस
## स्वास्थ के लिए लाभदायक

सेब का जूस रोजाना पीने से चेहरा तरोताजा होता है और दिल के रोगों की सम्भावना समाप्त हो जाती है। (आहार विशेषज्ञ)

यूनिवर्सिटी डेविस स्कूल आफ मेडिसिन के अनुसार सेब का एक गिलास जूस रोज पीने से चेहरा तरोताजा होता है। चेहरे पर सुर्खी छा जाती है। आंखों के चारों तरफ काले धब्बे न केवल कम बल्कि पूर्णरूप से समाप्त हो जाते हैं। झुर्रियां भी नहीं पड़तीं तथा हृदय रोगों से भी सुरक्षित रहा जा सकता है।

अमरीकी आहार विशेषज्ञ डबाए हाएसन ने अपनी एक रिसर्च रिपोर्ट में लिखा है कि सेब और सब्जियों को हृदय रोगों से बचाने में सहायक करार दिया जा चुका है, तब भी सेब के जूस के प्रेमी होने का पहली बार क्लिनीकल विश्लेषण दिसम्बर २००४ से अगस्त २००५ तक लिया गया।

इस अवध में दो सौ स्वस्थ बालिग मर्दों और महिलाओं को खालिस जूस दवाओं की मात्रा में बीस हफतों तक इस्तेमाल कराया गया। उनमें से आधे लोगों ने खालिस बिना छिलकों के पिया और आधे लोगों ने छिलकों समेत विभिन्न प्रकार के सेब खाए। उसके बाद उन के शरीर में कोलेस्ट्रो, चिकनाई, मांस, प्रोटीन और दूसरे आहार अंशों का विश्लेषण किया गया तो जूस पीने वालों के शरीर में आहार अंशों को सन्तुलित पाया गया और उन के हृदय भी बेहतर ढंग से काम कर रहे थे और सेब खाने वालों के मुकाबले में जूस पीने को दिल की बीमारी से ग्रस्त होने की भावना कम हो गई। जवान लड़कियों के जूस पीने से चेहरे पर सुर्खी छलक आई और रंग साफ हो गया। जिल्द में खिंचाव हुआ। आहार विशेषज्ञों के अनुसार झुर्रियों के खातमे के लिए विभिन्न क्रीमों के प्रयोग से अच्छा होगा कि रोजाना एक गिलास सेब का जूस अवश्य पीएं और एक सेब छिलकों सहित खाएं तथा बच्चों को एक आउंस जूस रोजाना पिलाएं या एक छोटे साइज का सेब खिलाएं।

(राष्ट्रीय सहारा के सौजन्य से)

**लेखकगणों से अनुरोध**

कृपया पन्ने के एक ओर लिखें, स्वच्छ तथा सुन्दर लिखें, एक लाइन छोड़ कर लिखें, हर शब्द पृथक लिखें और सरल लिखें।

— सम्पादक

Mob: 9415006053
Mohd. Irfan
Proprietor
न्यू करीम ज्वैलर्स
NEW KAREEM JEWELLERS
Shop No. 1 Balad Market, Opp. Ek Menara Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

# डा० अब्दुल्लाह अब्बास नदवी की वफ़ात

डा० मुईद अशरफ नदवी

१ जनवरी २००६ को अस्र की अजान के बाद जद्दा से हजरत मौलाना डाक्टर अब्दुल्लाह अब्बास नदवी (रह०) के इन्तिकाल की खबर उनके साहबजादे जनाब जिया अब्दुल्लाह साहब ने हजरत मौलाना राबे हसनी नदवी (नाजिम नदवतुल उलमा) को फोन पर दी। इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिअून।

बाद नमाज मगरिब दारूल उलूम नंदवतुल उलमा की मस्जिद में एक तअजियती जलसा नाजिम साहब की अध्यक्षता में हुआ।

तअजियती जलसे की कार्रवाई कुर्आने करीम की तिलावत पाक से हुई। जिस वक्त कारी ने "फदखुली फी इबादी वदखुली जन्नती" पर तिलावत पूरी की तो सामिअीन की आखें नम हो गईं। सबसे पहले हजरत मुहतमिम साहब मौलाना सईदुर्रहमान साहब नदवी ने अपनी तकरीर में कहा कि डाक्टर अब्दुल्लाह अब्बास साहब नदवी (रह०) के इन्तिकाल से नदवा में एक बड़ा इल्मी खला पैदा हो गया है। अल्लाह तआला उसको पुर करे। मौलाना का तअल्लुक नदवे से बहुत कदीम रहा है। नदवे में तालीम हासिल करने के बाद से अब तक इस तअल्लुक में कोई फर्क नहीं आया। यह तअल्लुक उनका तालिबे इल्मी की हैसीयत से भी रहा और बाद में उस्ताद की हैसियत से भी। दोनों को बहुस्नुखूबी अन्जाम दिया। नदवे को जब भी उनकी जरूरत महसूस हुई उन्होंने अपनी खिदमात पेश की और इस में उनका बुलन्द अखलाक नुमाया तौर पर नजर आया।

उन्होंने दारूल उलूम नदवतुल उलमा में माहिरीन फन असातिजा से कसबे इल्म किया था। उनमें से अक्सर मुल्कगीर शुहरत के हामिल थें हजरत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) उनके असातिजा में से थे। हजरत मौलाना से उनका तअल्लुक जज़बाती इरादत व अकीदत का था।

वह एक अर्से से बीमार थे लेकिन अपनी बीमारी लोगों पर जाहिर नहीं करते थे। उनके अमराज मअमूली न थे लेकिन इन बीमारियों में भी उन्होंने अपनी कूवते ईमानी, हौसला व हिम्मत से बड़े वकीअ़ इल्मी काम अंजाम दिये। वह जब मक्का मुकर्रमा से नदवा तशरीफ लाते तो यहां की इल्मी फजा में चार चांद लगा देते। कभी हुज्जतुल्लाहिल बालिगा, कभी एजाजे कुर्आनी और कभी बलागत पर मुहाजरे देते, तलबा और असातिजा की इल्मी रहनुमाई फरमाते। अदब व इन्शा की मश्क के लिए तलबा में तरबीयती कैम्प करते।

हजरत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी से बड़ा नयाजमन्दाना तअल्लुक रखते थे, अल्लाह तआला उनकी मगफिरत फरमाए, आमीन!

मौलाना बुरहानुद्दीन संभली (उस्ताद हदीस व तफसीर दारूल उलूम नदवतुल उलमा लखनऊ) ने अपनी तअजियती तकरीर (शोक भाषण) में कहा कि इमाम गज्जाली का कौल है कि जब आप अपना सब कुछ दे देंगे तो इल्म आप को कुछ देगा तो मौलाना मरहूम ने इल्म के लिए अपना सक बुछ दे दिया तब उनको इल्म मिला, वह एक आलिमे दीन ही नहीं थे बल्कि दुन्या देखे हुए जहां दीदा शख्स थे, उनको एक वक्त में तीन जबानों पर कुदरत हासिल थी, वह एक इल्मी शखसीयत थे इसलिए उनकी मजालिस में दिल लगता था, बरवक्त के इल्मी अशआर व लताएफ और इल्मी गुफतगू से मजलिस को बाग़ व बहार कर देते, उनकी नजर इल्म व अदब दोनों पर थी। जिसका बरमला इजहार उनकी गुफतगू और मजामीन में होता था, इस्मत चुगताई के इन्तिकाल पर जब एक तबका ने उनके अदब को इल्मियात की छाप दे कर शाएअ करने लगा तो मौलाना मरहूम ने उनके नाविल "लिहाफ" पर आतशी लिहाफ के उन्वान से एक मजमून बतौर इदारिया "तामीर–हयात" में लिखा और उनके अदब का अस्ल चेहरा बेनकाब किया।

मौलाना मरहूम तकरीबन चालीस साल उर्दू अदब से अलग रहे, अंग्रेजी और अरबी अदब से तअल्लुक रहा लेकिन अब उर्दू पर कलम उठाया तो लग नहीं रहा था कि इतने तवील अर्से के बाद लिख रहे हैं, उर्दू में ऐसे मजामीन और किताबें लिखी जो उर्दू अदब के लिये बेशकीमत साबित हुई।

प्रोफेसर वसी अहमद सिद्दीकी मोअतमदमाल नदवतुल उलमा लखनऊ ने अपनी तअजियती तकरीर में फरमाया कि हजरत मोहतमिम साहब और

मौलाना बुरहानुद्दीन साहब जो कह चुके हैं वही मेरी तरफ से भी समझ लिया जाये, इस लिये कि इस वक्त दिल भरा हुआ है, मेरे लिये बहुत बड़ा हादिसा है अल्फाज में उन जज्बात की अक्कासी मुमकिन नहीं। जो चला जाता है उसकी जगह लेने वाला कोई नहीं दिखता, मौलाना अब्दुल्लाह अब्बास साहब मरहूम की शखसियत इल्म व अदब और नदवतुल उलमा के मोतमद तालीमात रूक्न मजलिसे इन्तिजामिया तक महदूद न थी वह राबते अदब इस्लाम के मुशीर और उम्मुल कुरा यूनीवर्सिटी मक्का मुकर्रमा सऊदी अरब के उस्ताद और दीगर बहुत से इल्मी तहकीक व तालीमी इदारों के रूक्न और सरपरस्त थे। मेरा उनका तअल्लुक बचपन से था, मैं असरी उलूम का तालिब इल्म वह मजहबी उलूम के तालिब इल्म थे, वह तअल्लुक आज तक काएम रहा, उनकी फरमाइश मैंने पूरी की जिसकी उन्होंने कद्र की – लोग चले जाते हैं मगर यादें ही बाकी रहती हैं, अब उनका हक मेरे ऊपर जियादा है, उनके लिए ईसाले सवाब करें, अल्लाह तआला से दुआ करें उनको जन्नत फिरदौस में जगह दे, आमीन।

सबसे आखिर में हजरत नाजिम साहब ने अपने जजबात पर काबू रखते हुए थोड़े तवक्कुफ के बाद "इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़ा और कहा कि मेरा तअल्लुक उनसे तिरसठ साल का है, वह मुझसे बड़े थे और तअलीम में भी आगे थे, वह मेरे बड़े भाई के साथी थे मगर मेरे साथ उनका तअल्लुक गैर मामूली था, जिसका वह हर वक्त लिहाज रखते नदवतुल उलमा और उसके असातिजह से बड़ा तअल्लुक रखते जिसका इजहार भी करते रहते थे असातिजा व तलबा को इल्मी फाइदा पहुंचाने की फिक्र में रहते थे जब भी मौका मिलता दर्स देते और असातजा को फन्ने तअलीम के उसूल बताते– उन्होंने अगरचि लन्दन यूनीवर्सिटी से नदवा की सनद की बुन्याद पर पीएच.डी. की और वहां काफी अरसा रहे लेकिन इसके बावजूद कुरआन हदीस और उर्दू जबान व अदब से कभी अलग नहीं रहे। इधर कुछ अरसे से अरबी जबान व अदब और हदीस की किताबों से तअल्लुक जियादा हो गया था। नाजिम साहब ने फरमाया कि मौलाना को इल्म से इश्क के दर्जे का शगफ था, रातों में नीन्द न आती तो कागज कलम लेकर लिखने बैठ जाते वह नदवे के गुले सरसब्द अल्लामा सय्यद सुलैमान के हम वतन थे, उन्हीं की तरह इल्म के रस्या और शौकीन थे। मौलाना किताबों के मुसन्निफ थे, उनमें खास तौर पर अदब, हदीस, सीरत और कुरआनियात पर उनकी किताबें जियादा वकीअ और अहमियत की हामिल हैं, मसलन लुगातुल कुरआन कामूस लुगातुल कुरआन, रिदाए रहमत (तरजुमह व तशरीह कसीदह बुरदह) अरबी का नअतिया कलाम, मुअल्लिमे अखलाक व इन्सानियत, निगारिशात, तदवीने सीरतुन्नबी की इब्तितदाई तारीख, सीरत व तर्जुमा अल अदबुल मुफरद, एजाजे कुरआन, मीरे कारवान, शमाएल नबवी का तर्जुमा, काबिले जिक्र हैं, दो किताबें"इरादात व मुशाहिदात" और मुजक्किराते कुरआनी जेर तबअ हैं।

हजरत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०) से महब्बत ही नहीं बल्कि उन पर फरेफता थे, जिसका इजहार हजरत की मजलिसों में अक्सर देखने को मिला – नाजिम साहब ने फरमाया कि जाने वाला चला जाता है। मगर उसकी खूबियां बाकी रहती हैं ताकि उसको बयान करें और उसपर अमल करें अल्लाह तआला मरहूम की बाल बाल मगफिरत फरमाए उनका जाना नदवे का बहुत बड़ा खसारा है अल्लाह तआला इसे पुर करे, आमीन। हजरत नाजिम साहिब की दुआ पर जलसे का इख्तिताम हुआ।

## तेरी रहमत की कुछ नहीं तअदाद

अमतुल्लाह तस्नीम

लाई हूं आज शिक्व–ए–बीदाद।
सुन ले फर्यादरस मेरी फर्याद।।
देख हम उम्मते मुहम्मद हैं।
कर बहक्के नबी मेरी इम्दाद।।
हाले दिल जाके हम कहें किससे।
कौन तेरे सिवा सुने फर्याद।।
हम गुनहगार हैं बहुत लेकिन।
तेरी रहमत की कुछ नहीं तअदाद।।
जाल फिक्रों का हर तरफ फैला।
फिक्रें मेरे लिये बनी सय्याद।।
रोजों शब मुस्लिमों पर सख्तीये दहर।
दिले सितमकश जहां सितम ईजाद।।
देख बरबाद हो न जाए दिल।
तेरा मस्कन है रख इसे आबाद।।
हम तो अल्लाह तेरे बन्दे हैं।
गैर की बन्दगी से कर आजाद।।
दोस्ती ऐसी कर अता मुझ को।
कि इताअत के सिवा न हो कुछ याद।।
जान जाए तेरी महब्बत में।
मौत आए तो न आए दुन्या याद।।
मर के पा जाए चैन वह तस्नीम।
आखें ठन्डी हों और दिल शाद।।

# इस्लाम में औरत का स्थान

सुरय्या ख़ानम, जौनपुर

इस्लाम में औरत अपने करीबी रिश्तेदार के मरने पर जैसे बाप, मां, पति, औलाद आदि, उन की छोड़ी हुई सम्पत्ति में एक नियुक्त हिस्सा पाती है जो मर्द के मुकाबले में कम होता है।

मर्द मूलतः अपनी पत्नी, अपने परिवार और अपने आश्रित रिश्तेदारों के भरण पोषण का जिम्मेदार है। यह भी कर्तव्य उसी का है कि अपने समाज के भले कर्मों में आर्थिक सहायता भी करे। इस प्रकार अकेले ही मर्द को तमाम आर्थिक बोझ को सहन करने पड़ते हैं। जबकि औरत पर कोई आर्थिक जिम्मेदारी नहीं होती। अधिक से अधिक वह अपना निजी खर्च, साज–सज्जा में सम्बन्धित सहन करती है यदि वह चाहे तो। वह व्यवहारिक खर्च से मुक्त रहती है बल्कि उसे मिलता है। यदि वह पत्नी है तो पति, मां है तो उस का बेटा,बेटी है तो उसका बाप वहन है तो उसका भाई खर्च सम्भालता है क्योंकि उसके खर्च की जिम्मेदारी उसी की होती है। एक औरत की जिम्मेदारी हर हाल में सीमित होती है लेकिन मर्द की असीमित।

औरत को अगर हिस्सा कम मिला तो इसका मतलब यह नहीं कि वह महरूम कर दी गयी। विरासत किसी मर्द या औरत की कोशिश मेहनत या कमाई के नतीजे में नहीं मिलती यह तो रिश्तेदारों से मिली अतिरिक्त आय है। इसके लिए न मर्द ने कोशिश की है न औरत ने। यह तो एक प्रकार की सहायता है और सहायता हमेशा जरूरत और जिम्मेदारी को देखकर की जाती है। मुख्य रूप से जबकि वह अल्लाह के कानून के तहत हो। एक मर्द सारी जिम्मेदारी से लदा है औरत पर कोई जिम्मेदारी नहीं है। है तो नाम मात्र। यदि औरत वारिस को पूरी तरह महरूम कर दें तो यह अन्याय होगा। इसलिए कि वह मरने वाले की वारिस है। अगर औरत को मर्द के बराबर दे दें तो यह मर्द के साथ अन्याया होगा। इससे बचने के लिये इस्लाम ने मर्द को औरत से जियादा हिस्सा दिलाया है ताकि वह अपने परिवार की जरूरत और समाज की जिम्मेदारी को निभा सके। औरत को उसकी निजी जरूरतों को दृष्टि में रख कर उसका हिस्सा निर्धारित किया है बल्कि मर्द के मुकाबले में औरत पर इस्लाम अधिक मेहरबान दिख पड़ता है। आपसी समझौते के मामले पर एक मर्द और दो औरतों की गवाही मांगी गयी है। इसका अर्थ यह नहीं कि औरत को मर्द के मुकाबले हीन समझा गया है यह तो पार्टियों के अधिकारों की सुरक्षा की बात है। औरत मर्द से अधिक व्यवहारिक जीवन का अनुभव नहीं रखती इसलिए कानून चाहता है कि कम से कम दो औरतें एक मर्द के साथ गवाही दे क्योंकि एक गवाह औरत कुछ भूलती है तो दूसरी उसे याद दिला देगी या अनुभव की कमी की वजह से एक गलती करती है तो दूसरी उसे सही करा देगी। लोगों के दर्मियान ईमानदारी के साथ सही मामले की गारन्टी देने का यह ऐतिहासिक कदम है। औरत को कुछ धार्मिक कर्तव्यों में भी छूट दी गयी है। जैसे माहवारी के समय नमाज रोजा तथा जुमा की फर्ज नमाज और जमाअत से छूट मिली है। परन्तु याद रहे रोजे दूसरे दिनों में पूरा करने होंगे। अल्लाह ने मां के रूप में उनका दर्जा बढ़ा दिया है। प्यारे नबी सल्ल० ने यह घोषणा की कि मां के कदमों तले जन्नत है।

नमाज में औरत को पीछे खड़ा होने का अर्थ यह नहीं कि औरत मर्द से कम हैं। औरत को छूट भी है कि वे मर्द की तरह फर्ज नमाजें जमाअ़त से अदा करें या न करें अगर वह जमाअ़त से नमाज पढ़ती है तो उन्हें अलग पंक्ति में जो औरतों की ही होती है, खड़ा होना पड़ता है बिल्कुल ऐसे ही जैसे बड़ों के पीछे बच्चे अपनी अलग पंक्ति में खड़े होते हैं यह नमाज के अनुशासन की बात है न कि किसी प्रकार की दर्जेबन्दी।

अब यह बात स्पष्ट हो गयी कि इस्लाम में औरत का स्थान अति उच्च और उसके स्वभाव को देखते हुए अतिव्यवहारिक है उकसे अधिकार और कर्तव्य मर्दों ही की तरह है लेकिन अनिवार्यतः समरूप नहीं है। अगर किसी पहलू से वह किसी मामले में महरूम है तो दूसरे बहुत से पहलुओं से उसे बहुत कुछ दे दिया गया है।

और उन स्त्रियों को भी सामान्य नियम के अनुसार वैसे ही अधिकार है जैसे कि स्वयं उन पर है। हां पुरूषों

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

# नुबुव्वते मुहम्मदी के ख़िलाफ़
# मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी का एअ़लाने जंग

मौ० मुहम्मद आरिफ़ संभली

अंग्रेज़ों ने मुसलमानों से हिन्दोस्तान की हुकूमत छीनी और इस्लाम और मुसलमानों को हिन्दोस्तान से बिल्कुल ही मिटा डालने का मन्सूबा (योजना) तय्यार किया तो उ़लमा (धार्मिक विद्वानों) ने गवर्नमेंट के ख़िलाफ़ जिहाद का फ़त्वा (इस्लामी निर्णय) दिया और अ़मली तौर (क्रियात्मक ढंग) से जिहाद शुरूअ़ कर दिया जिस का नतीजा यह हुआ कि उ़लमा गोलियों से उड़ाए गये और फांसियों पर लटकाए गये। आफ़्रीं (धन्यवाद) है उनको कि उन्होंने अपने वजूद (अस्तित्व) को मिटाया जाना तो गवारा कर लिया लेकिन दीन का मिटाया जाना एक पल के लिए भी उन को गवारा न था। परन्तु मुसलमान कहे जाने वाला एक बदकिरदार (कुकर्मी) वह भी था जिसने अंग्रेज से मिलने वाले रूपयों और हासिल होने वाली जाइदाद के बदले अपना दीन व ईमान अंग्रेजी हुकूमत पर चढ़ा दिया और अपनी ज़िन्दगी का बड़ा हिस्सा बल्कि सारी ज़िन्दगी अंग्रेज़ी हुकूमत की हिमायत (सहयोग) के लिये वक़्फ़ (अर्पण) कर दी थी। इस आदमी का नाम था, "मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी" उम्र भर मिर्जा गुलाम अहमद अंग्रेजी हुकूमत की हिमायत (समर्थन) करते रहे। इस का सुबूत कहीं और ढूंढने की ज़रूरत नहीं इस लिए कि मिर्ज़ा ने अपनी ईमान फ़रोशी (ईमान बेचने) और मिल्ली ग़द्दारी का हाल बड़ी तफ़्सील (विस्तार) के साथ ख़ुद ही अपनी किताबों में लिख दिया है जिनको यहां नक़्ल किया जा रहा है। मिर्ज़ा लिखते हैं : "मेरी उ़म्र का अक्सर हिस्सा इस सलतनते अंग्रेज़ी की ताईद और हिमायत में गुज़ारा है और मैंने मुमानअ़ते जिहाद और अंग्रेज़ी इताअ़त के बारे में इस क़दर किताबें और इश्तिहार शायअ़ किये हैं कि अगर वह रसाइल और किताबें इकट्ठा की जाएं तो पचास अलमारियां उन से भर सकती हैं। (तिर्याक़ुल क़ुलूब पृष्ठ २७)

दूसरी जगह उन्होंने लिखा :

मैं यक़ीन रखता हूं कि जैसे–जैसे मेरे मुरीद बढ़ेंगे वैसे वैसे जिहाद के मुअ़तक़िद (मानने वाले) कम होते जाएंगे, क्योंकि मुझे मसीह और महदी मान लेना ही जिहाद के मसअले का इन्कार है। (तब्लीग़े रिसालत जि० ७ पृ० १७)

मिर्ज़ा जी अगर्चि सच बहुत कम और झूठ बहुत ज़ियादा बोलते थे मगर यह उन्होंने बिल्कुल सच कहा कि "मुझे मसीह और महदी मान लेना ही जिहाद के मसअले का इन्कार है।" यअ़नी हक़ीक़त वही है कि अंग्रेज़ी हुकूमत ने इनको नबी बनाया ही इस ग़रज़ से था कि वह मुसलमानों को अंग्रेज़ी हुकूमत की ग़ुलामी पर तय्यार करें और उन के दिल व दिमाग़ में बिठाएं कि अंग्रेज़ तुम्हारे मुहसिन (उपकारी) हैं, उन से जिहाद करना हराम है। यही समझाने के लिए मिर्ज़ा ने कहा था :

"दुशमन है वह ख़ुदा का, करता है जो जिहाद।"

और अपने रसूल होने की गरज़ यह ज़ाहिर की थी कि–

"अब आ गया रसूल जो इस दीं का है इमाम।
दीं की तमाम जंगों का अब इख़्तिमाम है।।

इसी लिए जिन उ़लमाए किराम ने अपनी जान और माल और अहल व अ़याल सब को शदीद ख़तरात में डाल कर अंग्रेज़ी हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत और जिहाद पर मुसलमानों को उभारा था, ईमान फरोश मिर्ज़ा ने इन्तिहाई मलऊ़नियत का मुज़ाहरा (प्रदर्शन) करते हुए उन पर गालियों की बौछार की थी। मिर्ज़ा के नीचे लिखे बयान में मिर्ज़ा की बकी हुई गालियों का नमूना पढ़िये–

"जब हम १८५७ की सवानिह को देखते हैं और उस जमाने के मौलवीयों के फत्वों पर निगाह डालते हैं जिन्होंने आ़म तौर पर मुहर लगा दी थीं कि अंग्रेज़ों को क़त्ल कर देना चाहिए, तो हम बहरे नदामत में डूबे जाते हैं कि यह कैसे मौलवी थे और कैसे इनके फ़त्वे थे जिन में न रहम था न अ़क़्ल थी, न अ़ख़लाक़ न इन्साफ़, इन लोगों ने चारों ओर क़ज़्ज़ाक़ों और हरामियों की तरह अपनी मुहसिन (उपकारी) गवर्नमेंट पर हमला करना शुरूअ़ किया और उसका नाम जिहाद रखा।" (इज़ाल–ए–औहाम पृ. २५६ पांचवा प्रकाशन)

मिर्ज़ा का यह बयान यक़ीनन इन्तिहाई ग़ैरमुहज़्ज़ब और ख़ालिस बाज़ारी है, मगर इस में भी किसी शुब्हे की गुंजाइश नहीं कि इसे लिख कर मिर्ज़ा ने अंग्रेज़ों की नमक ख़्वारी का पूरा पूरा हक़ अदा कर दिया।

मिर्ज़ा जी अपने काले कर्तूतों का अंग्रेज़ी हुकूमत से हक़्क़े ख़िदमत मांगते हैं।

मिर्ज़ा अंग्रेज़ हाकिमों को अर्ज़ियों (प्रार्थना पत्र) भेजा करते थे कि आक़ा मुझ ख़ादिम पर और मेरे ख़ान्दान पर कुछ नज़रे इनायत (कृपा दृष्टि) हो जाए। नमूने के तौर पर मिर्ज़ा जी की वह दरख़्वास्त जो उन्होंने अंग्रेज लफ्टीनेंट गवर्नर की ख़िदमत में भेजी थी नक़्ल की जाती है। इसे बग़ौर पढ़िये और देखिये कि झूठा नबी किस तरह इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मन से नज़रे इनायत (कृपा दृष्टि) की भीख मांगता था। मिर्ज़ा ने लिखा :

यह इल्तिमास है कि सरकार

दौलतमदार ऐसे ख़ान्दान की निस्बत जिस को पचास बरस के मुतवातिर तजरिबे से एक वफ़ादार, जां निसार ख़ान्दान साबित कर चुकी है और जिस की निस्बत गवर्नमेंट आलिया के मुअज़्ज़ज़ (सम्मान प्राप्त) हुक्काम ने हमेशा अपनी मुस्तहकम (सुदृढ़) राए से अपनी चिट्ठियात में यह गवाही दी है कि वह क़दीम से सरकार अंग्रेज़ी के ख़ैरख़्वाह और ख़िदमत गुज़ार हैं। इस ख़ुद काश्ता पौदे की निस्बत निहायत इह्तिराम, इह्तियात और तवज्जुह से काम ले और अपने मातहत हुक्काम को इशरा फ़रमाए कि वह इस ख़ान्दान की साबित शुदा वफ़ादारी और इख़्लास का लिहाज़ रख कर मुझे और मेरी जमाअ़त को एक ख़ास इनायत और मिहरबानी की नज़र से देखें। हमारे ख़ानदान ने सरकारे अंग्रेज़ी की राह में अपने ख़ून बहाए और जान देने से फ़र्क़ नही किया और न अब फ़र्क़ है, लिहाज़ा हमारा हक़ है कि हम ख़िदमते गुज़श्ता के लिहाज़ से सरकार दौलतमदार की पूरी इनायत और ख़ुसूसी तंवज्जुह की दख़्वास्त करें। (तब्लीगे रिसालत जिल्द ७ पृ. १६)

क्या अंग्रेज़ लफ्टीनेंट गवर्नर की ख़िदमत में भेजी हुई मिर्ज़ा जी की इस अ़र्ज़ी के सामने आने के बाद इस के बताने की भी ज़रूरत बाक़ी रह जाती है कि मिर्ज़ा के बाप दादा बल्कि उन का सारा ख़ान्दान अंग्रेज़ों का पूरा ग़ुलाम और उन का जी हुजूरिया था और आज़ादी की जंग लड़ने वालों और ख़ासतौर पर उ़लमाए इस्लाम और मुसलमानों के मुक़ाबले में अंग्रेज़ी हुकूमत की बक़ा व सलामती के लिए जान लड़ाए हुए था और बाद में ख़ुद मिर्ज़ा जी अंग्रेज़ हुक्काम से अपने बाप दादा और अपनी वफ़ादारी का यह सिला (प्रतिकर्म) मांग रहे थे कि हुक्काम उन्हें और उनकी जमाअ़त को ख़ुसूसी नज़रे इनायत से देखें। हर आदमी समझ सकता है कि जी हुजूरियों और गुलामों को हुक्काम की जानिब से बनज़रे इनायत देखने का क्या मतलब होता है, यही कि उनको माल व दौलत से नवाज़ा जाए।

तो यह था झूठा नबी और यह थी झूठे नबी की औक़ात। क़ौम व मिल्लत से ग़द्दारी और दीन फ़रोशी की सज़ा यही होती है कि दीन फ़रोशों को ख़ुदा व रसूल के दुश्मनों के दर का भिखारी बना दिया जाता है।

## नुबुव्वते मुहम्मदी के ख़िलाफ़ मिर्ज़ा का एअ़लाने जंग

मिर्ज़ा गुलाम अहमद बखूबी जानते थे कि जब तक मुसलमानों के दिलों में हुजूर ख़ातमुन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की ज़ाते मुक़द्दसा की अ़ज़मत बाक़ी रहेगी उस वक़्त तक वह हरगिज़ अंग्रेज़ों की गुलामी पर राज़ी न होंगे और हरगिज़ कुर्आन व हदीस को सीनों से जुदा न करेंगे, इस हक़ीक़त का अन्दाज़ा कर के मिर्ज़ा जी ने सरकारे दोआ़लम के मुबारक व मुक़द्दस नाम "मुहम्मद" के ख़िलाफ़ एअ़लाने जंग कर दिया। मिर्ज़ा ने हुजूरे अकरम के इस्मे मुबारक "मुहम्मद" सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ जो कुछ लिखा उसे गौर से पढ़िये। मिर्ज़ा लिखते हैं :

"तुम खूब तवज्जुह कर के सुन लो कि अब इस्मे मुहम्मद की तजल्ली ज़ाहिर करने का वक़्त नहीं यानी अब जलाली रंग की कोई खिदमत बाक़ी नहीं क्योंकि मुनासिब हद तक वह जलाल ज़ाहिर हो चुका, सूरज की किरनों की अब बर्दाश्त नहीं, अब चान्द की ठण्डी रोशनी की ज़रूरत है और वह अहमद के रंग में होकर मैं हूं। (अर्बईन ४:१७)

इस तरह अंग्रेज़ की हिमायत के बल पर मिर्ज़ा जी ने अपनी इन्तिहाई मलऊ़नियत का इज़्हार और इन्तिहाई ख़तरनाक मन्सूबे का एअ़लान कर दिया कि अब हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की तजल्ली को नहीं चलने दिया जाएगा, क्योंकि अब दुन्या को उस तजल्ली की ज़रूरत नहीं अब मा बदौलत की (मेरी) तजल्ली दिखाई जाएगी। इस्मे मुहम्मद (स०) की तजल्ली सूरज की गर्म गर्म किरनें हैं जिन की अब दुन्या को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं रही और मेरी तजल्ली ठण्डी चान्दनी है, अब दुन्या में इसी से ठण्डक पहुंचाई जाएगी। यह था अंग्रेज़ी हुकूमत का खुदकाश्ता पौदा जो अल्लाह तआ़ला से बेख़ौफ़ होकर अंग्रेज़ी हुकूमत की हिमायत (सहयोग) के बल पर उस हस्ती के मुक़ाबले में खुद को ठण्डी चान्दनी बता रहा था जिस हस्ती को सारे जहां के लिए रहमत बना कर भेजा गया। उसी रहमते मुजस्सम (साक्षात दया) को अंग्रेज़ी हुकूमत का एजेन्ट सारी दुन्या के हक़ में ज़हमत (कष्ट) बता रहा था। हालांकि हुजूर ख़ातमन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ही की वह हस्ती है जिसकी बाबत अल्लाह तआ़ला ने सारी दुन्या के जिन्न व इन्स को ख़बर दी –

(क़द जाअकुम मिनल्लाहि नूरुंव्व किताबुम्मुबीन) बे शक तुम्हारे पास आ गया है अल्लाह तआ़ला की जानिब से एक (अ़ज़ीमुश्शान) नूर और आ गई है एक रौशन किताब। (अल्माइदा : १५)

यह है अल्लाह तआ़ला का इरशाद, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की हस्ती की निस्बत कि मुजस्सम नूर बना कर दुन्या में भेजे गये। उन्हीं के जरीअे दुन्या को रौशन किया जाएगा, मगर मिर्ज़ा का एअ़लान यह था कि अब मुहम्मद की तजल्ली दुन्या को बर्दाश्त नहीं, अब उनकी तजल्ली नहीं चलेगी अब हमारी ठण्डी तजल्ली से दुन्या जगमगाएगी। पढ़िये मिर्जा का नीचे लिखा बयान वह कहते हैं :

"मुबारक है वह जिस ने मुझे पहचाना, मैं खुदा की सब राहों में से आख़िरी राह हूं। बद क़िस्मत है वह जो मुझे छोड़ता है क्योंकि मेरे बिग़ैर सब तारीकी है।" (कश्तीये नूह : ५६)

इस तरह मिर्ज़ा ने एअ़लान कर दिया कि अब ख़ातमन्नबिय्यीन का ख़ातिमा है, अब ख़ातिमुन्नबिय्यीन हम हैं। हम ही आख़िरी नूर हैं, और हमारे बिग़ैर सब

तारीकी है, यानी अब न कुर्आन न हदीस बल्कि फ़क़त मिर्ज़ा पर बक़ौले खुद नाज़िल होने वाली वही से दुन्या जगमगाएगी। नऊज़ु बिल्लाहि मिन् हाज़िहिल्कुफ़्रियात वला हौल वला क़ुव्वतः इल्ला बिल्लाहि।

इस तरह की तअ़ल्लीयों (अहंकारों) से मिर्ज़ा जी की किताबें भरी हुई हैं। ऊपर के एअ़लानों की तरह मिर्ज़ा जी ने एक दअ़वा और एक एअ़लान यह किया कि :

"ख़ुदा ने मेरी वही और मेरी तअ़लीम और मेरी बैअ़त को नूह की कश्ती क़रार दिया और तमाम इन्सानों के लिए उसको मदारे नजात (मोक्ष प्राप्ति–आधार) ठहराया, जिस की आंखें हों देखे, और जिस के कान हों सुने।" (अरबईन ४:७)

मिर्ज़ा जी की इन दोनों तहरीरों (लिखित बातों) का साफ़ और कतई (पक्का) मतलब यही है कि जो लोग मिर्ज़ा पर ईमान लाएंगे और उनकी पैरवी करेंगे वह तो हलाकत से महफ़ूज़ रहेंगे और हमेशा की नजात के मुस्तहिक़ (अधिकारी) करार पाएंगे और अगर ऐसा न करेंगे तो कुर्आन और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पैरवी भी उन्हें हलाकत से न बचा सकेगी।

## हदीसें मिअ़यार नहीं बल्कि मैं मिअ़यार हूं

इसी तरह मिर्ज़ा जी ने निहायत बेबाकी और बेशर्मी के साथ एअ़लान किया कि दीन के मुआ़मले में हदीसें अस्ल हैसियत नहीं रखतीं बल्कि अस्ल हैसियत का मालिक मैं हूं लिहाज़ा तुम्हें चाहिए था कि मुझे हदीसों से न नापते बल्कि हदीसों को हम से नापते। पढ़िये मिर्ज़ा का बयानः

"तुम्हें चाहिए था कि मुझे क़बूल करते और बजाए इसके कि मुझे इन हदीसों के साथ नापते, हक यह था कि इन हदीसों को मेरे साथ नापते और जो अहादीस मेरे मुताबिक़ न उतरतीं उनकी तावील करते या ज़ईफ़ क़रार देकर छोड़ देते क्योंकि मैं खुदा की वही से बोलता हूं और हकम और अ़दल हो कर आया हूं। मुबारक है वह जो इस नुक्ते को पहचानता और हलाक होने से बच जाता है।" (तब्लीगे हिदायत पृ. ३०७ प्रकाशन–६)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तमाम हदीसें भी अल्लाह तआ़ला की वही से हैं मगर मिर्ज़ा कह रहे हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का कोई एअ़तिबार नहीं, एअ़तिबार हमारी वही का है लिहाज़ा हमारी वही से रसूले अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की वही को नापो और उनकी वही में जो हमारी वही के ख़िलाफ़ हो उसे बिल्कुल छोड़ दो।

## कुरआन व हदीस की मुराद मुझ से पूछो–

इसी तरह मिर्ज़ा ने कहा, "हदीस व कुर्आन की सहीह मुराद मुझ से पूछो क्योंकि वही भेज कर अल्लाह तआ़ला ने सब कुछ मुझे बता दिया है, पढ़िये मिर्ज़ा का एअ़लान –

"मैं बार–बार कहता हूं कि खुदा ने मुझे मसीहे मौऊ़द करके भेजा है, और मुझे बतलाया कि फुलां हदीस सच्ची है और फुलां झूठी है और कुर्आन के सहीह मअ़नों से मुझे इत्तिलाअ़ बख़्शी है तो फिर किस बात और किस ग़रज़ के लिए इन लोगों से मन्कूली बहस करूं। (अरबईन ४:२५)

कुर्आन शरीफ़ की तफ़्सीर हुजूरे अक्दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और सहाब–ए–किराम और हज़राते ताबिईन ने यह फ़रमाई है और हदीस शरीफ़ में यह इरशाद फ़रमाया गया है, और मुहद्दिसीन ने फुलां हदीस को सनदी लिहाज़ से यह दर्जा दिया है, दीन व शरीअ़त के हुक्मों के सुबूत का यही तरीक़ा है। मगर मिर्ज़ा कहते हैं कि यह सब कुछ नहीं, इन बातों का नाम भी मेरे सामने न लेना, अब तो बस मैं ही हूं। अल्लाह तआ़ला से बराह रास्त मेरा तअ़ल्लुक है। क्या सही है क्या ग़लत है यह सब कुछ अल्लाह तआ़ला ने मुझे बता दिया है पस जो कुछ मैं कहूं उसी पर ईमान लाओ और उसकी पैरवी करो। कुर्आन व हदीस और तफ़सीरों वग़ैरह का ज़िक्र भी मेरे सामने मत करो, इसी में तुम्हारी ख़ैरीयत है वरना ख़सारा ही ख़सारा और हलाकत ही हलाकत है।

इसी तरह मिर्ज़ा जी ने अपनी दानिस्त (समझ) में उन तमाम खिड़कियों को बिल्कुल बन्द कर दिया जिन से फूट फूट कर इस्मे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की तजल्ली दुन्या को मुनव्वर (प्रकाशित) कर रही थी। दाद दीजिए अंग्रेज़ की नज़रे इन्तिख़ाब को कि ऐसा फिट आदमी तलाश किया जो दीन व मिल्लत से ग़द्दारी में अपना सानी (द्वितीय) नहीं रखता था। जब मिर्ज़ा जी दीन व मिल्लत से ग़द्दारी की यह बातें लिखते होंगे तो इब्लीस और उसकी ज़ुर्रीयत (सन्तान) के घरों में घी के चराग़ जलाए जाते होंगे और वह सब के सब मारे ख़ुशी के तालियां बजा बजा कर नाचते होंगे कि शाबाश मिर्ज़ा तुम तो हम पर भी बाज़ी ले गये।

मिर्ज़ा जी ने जब नबी बनने का प्लान पक्का कर लिया तो उन्होंने किसी नबी का नाम इख़्तियार करने पर ग़ौर किया। इस मौक़िअ़ पर शैतान ने मिर्ज़ा साहिब की खुसूसी रहनुमाई की। उस ने कहा कि सच्चे नबी की हदीसों में आसमान से हज़रत ईसा के दोबारा दुन्या में तशरीफ़ लाने की ख़बर की गई है, लिहाज़ा मिर्ज़ा जी तुम यह काम करो कि कुर्आन का हवाला दे दे कर यह झूठ बोलो कि कुर्आन में यह पेशीन गोई की गई है कि इस उम्मत में एक आदमी ऐसा होगा जो पहले मर्यम कहलाएगा और मर्यम से ईसा बनाया जाएगा और लोगों को बताओ कि वह मर्यम और वह ईसा में ही हूं। मिर्ज़ा जी को शैतान का यह ख़बीस मशवरा बहुत ज़ियादा पसन्द आ गया, गोया यही उनके दिल की आवाज़ भी थी, इस लिए उन्होंने इस मशवरे को फोरी तौर पर अ़मली जामा पहनाते हुए लिखा कि :

इन्साफ़ और अ़क़्ल और तक़्वे से सोचो कि वह पेशीनगोई जो

सूर–ए–तहरीम में थी यानी यह कि इस उम्मत में कोई मर्द मर्यम कहलाएगा और फिर मर्यम से ईसा बनाया जाएगा। (कशतीये नूह पृष्ठ ४६)

मिर्ज़ा जी को इस की ज़रा भी शर्म न आई कि लोग सूर–ए–तहरीम को पढ़ेंगे और उसमें बच्चों को भी ज़ोर से हंसाने वाली वह बेहूदा पेशीनगोई (भविष्यवाणी) न पाएंगे तो उनकी निस्बत क्या राए क़ाइम करेंगे। मगर सच्ची बात यह है कि हम ही ग़लती पर हैं कि शर्म व हया का मिर्ज़ा जी के सिलसिले में सुवाल उठा रहे हैं क्योंकि मिर्ज़ा जी अगर शर्म व हया के चक्कर में पड़ते तो फिर झूठी नुबूवत का ढोंग ही क्यों रचाते, जिस दिन उन्होंने झूठी नुबूवत के दअ़वे का प्लान बनाया था, शर्म व हया जैसी चीज़ों का ख़याल दिल व दिमाग़ से ख़ुरच कर उसी दिन बाहर फेंक दिया था और यह सच है कि मिर्ज़ा साहिब के हिसाब से यह कोई शर्म की बात थी भी नहीं क्योंकि उन्होंने तो अपनी निस्बत ऐसे ऐसे शर्मनाक बयानात अपनी किताबों में दिये हैं कि दुन्या के नामी गिरामी औबाश और बदक़िमाश लोग भी ऐसे ख़यालात से ख़ुदा की पनाह मांगते होंगे।

बहर हाल आप सूर–ए–तहरीम की उस आयत को जिसकी जानिब मिर्ज़ा जी ने इशारा कर के यह शर्मनाक झूठ बोला है तर्जुमे के साथ मुलाहज़ा फ़रमाइये और सोचिये कि मिर्ज़ा जी झूठ बोलने में किस कदर जरी (साहसी) वाक़िअ़ हुए थे। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :

अनुवाद : और इम्रान की बेटी मर्यम जिस ने अपनी इस्मत (सतीत्व) की हिफ़ाज़त की फिर हम ने फूंक दी उसमें अपनी जानिब से एक ख़ास रूह और उसने तस्दीक की अपने रब के कलिमात की और उसकी किताबों की और थी वह फरमाबरदारों में। सूर–ए–तहरीम की आख़िरी आयत सूरे नम्बर (७७)

आपने आयत का तर्जुमा (अनुवाद) देख लिया, कुर्आन शरीफ खोल कर अरबी भी देख लीजिए। इस आयत में न इस उम्मत का ज़िक्र है न इसका कि एक आदमी ऐसा होगा जो पहले मर्यम कहलाएगा और फिर ईसा बनाया जाएगा, बल्कि इस में तज़किरा (वर्णन) है, उन मुक़द्दस हज़रते मर्यम का जो साहिबजादी (पुत्री) थीं हज़रत इम्रान की जब कि मिर्ज़ा बेटी नहीं बेटा थे गुलाम मुर्तज़ा के और मर्यम नहीं उनके वालिद ने उन का नाम रखा था गुलाम अहमद। मगर मिर्ज़ा कहते हैं कि नहीं साहिब इस आयत में वही कुछ फ़रमाया गया है जो मैं बता रहा हूं। इससे अन्दाज़ा लगाइये कि मिर्ज़ा झूठ बोलने में किस क़दर माहिर और किस क़दर जरी (साहसी) थे।

आयतों के हवाले से मिर्ज़ा का खुद को ईसा बताना।

मिर्ज़ा साहिब कुर्आन की आयतें पेश करके दअ़वे किया करते थे कि इनमें मेरी बाबत मसीहे मौऊ़द बन कर आने की ख़बर दी गई है। उलमा ने उनको समझाया कि मिर्ज़ा जी खुदा से डरो और कुर्आन शरीफ़ की बाबत इतना खुला झूठ न बोलो लेकिन मिर्ज़ा कच्ची गोलियां खेले हुए नही थे इस लिए शरमाने के बजाए उन्होंने कहा कि आप लोगों का यह कहना अपनी जगह बिल्कुल दुरूस्त है कि जो आयतें मैं खुद के मसीह होने की दलील के तौर पर पेश करता हूं वह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के हक़ में नाज़िल हुई थी; उन्हीं के दोबारा तशरीफ़ लाने की ख़बर दी गई थी लेकिन आप लोगों को इस बात की बिल्कुल ख़बर नहीं कि बाद में अल्लाह ने हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को दोबारा भेजने का अपना फ़ैसला बदल दिया और इन आयतों का मिस्दाक़ उनके बजाए मुझे करार दे दिया अल्फ़ाज़ मिर्ज़ा जी के यह हैं :

"ख़ुदा तआ़ला ने बराहीने अहमदीया के पिछले भागों में मेरा नाम ईसा रखा और जो कुर्आन शरीफ़ की आयतें पेशीनगोई के तौर पर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की तरफ़ मन्सूब थीं वह सब आयतें मेरी तरफ़ मंसूब कर दीं।" (बराहीने अहमदीया पंजुम : ८५)

गोया अल्लाह तआ़ला को मिर्ज़ा जी के चाल चलन कुछ इतने ज़ियादा पसन्द आ गये कि उसने आसमान से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को दुन्या में दोबारा लाने का अपना फैसला बदल दिया और जो आयतें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बाबत कुर्आन में थीं उन्हें मिर्ज़ा जी की तरफ़ फेर दिया।

मिर्ज़ा जी की इन्तिहाई ख़बासत और उनके इन्तिहाई खुले हुए झूठ –

अब आख़िर में हम मिर्ज़ा जी के दो बयान नक़्ल करते हैं इन दो में से एक बयान में मिर्ज़ा ने अपनी कामिल ख़बासत का सुबूत देते हुए लाखों बेगुनाह बच्चों के इन्तिहाई ज़ालिमाना क़त्ल का ज़िम्मेदार फ़िरऔन के बजाए मूसवी शरीअ़त को क़रार दिया है। देखिये मिर्ज़ा की ज़ालिमाना तहरीर वह लिखते हैं :

मूसवी शरीअ़त अगर्चि जलाली थी और लाखों खून इसी शरीअ़त के हुक्मों से हुए यहां तक कि चार लाख के क़रीब बच्चा, शीर ख़्वार (दूध पीने वाला) मारा गया। (शहादतुल कुर्आन पृष्ठ : २६)

कुर्आन शरीफ में फिरऔन का कौल नक़्ल किया गया है। अनुवाद :

कहा अब हम क़त्ल करेंगे उन के लड़कों को और ज़िन्दा छोड़ेंगे उनकी औरतों (बच्चियों) को। (अअ़राफ़ : १२७)

चुनांचि उसने ऐसा ही किया भी। अल्लाह तआ़ला फ़िरऔनियों की बाबत फ़रमाता है, अनुवादः

फिरऔन के लोग तुम्हारे लड़कों को क़त्ल करते थे और तुम्हारी औरतों (लड़कियों) को ज़िन्दा छोड़ते थे।

चूंकि कुर्आने शरीफ़ में कई जगहों पर साफ साफ फ़रमाया गया है कि फ़िरऔन के लोग इस्राईल के लड़कों को क़त्ल करते थे इस लिए मुसलमान यक़ीनी तौर पर बेगुनाह बच्चों का क़ातिल फ़िरऔन ही को जानते हैं सिर्फ मिर्ज़ा पहले आदमी हैं जिन्होंने कुर्आन शरीफ़ के खुले हुए

बयान के खिलाफ इस्राईली बच्चों के क़त्ल का जिम्मेदार मूसवी शरीअ़त को क़रार दिया है और ज़ाहिर है कि शरीअ़त का नाज़िल करने वाला अल्लाह तआ़ला और उसके नाफ़िज़ (प्रचलित) करने वाले हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम थे तो फिर इस तरह़ मूसवी शरीअ़त पर क़त्ल का इल्ज़ाम लगाने का मतलब हुआ अल्लाह तआ़ला और मूसा अ़लैहिस्सलाम को बेगुनाह बच्चों के क़त्ल का मुल्ज़म क़रार देना। यह है मिर्ज़ा जी की किज़्ब बयानियों (झूठे बयानों) और बुहतान तराज़ियों (मिथया दोषारोपणों) की कैफीयत, ह़ैरत की बात है कि ऐसे बुहतान तराज़ों को भी नबी और रसूल मानने वाले लोग इस दुन्या में पाए जाते हैं। (फअ़तबिरू या उलिल् अब्सार) पस ऐ दिल की आंख रखने वालो सबकलो।

अब दूसरा इन्तिहाई ज़ालिमाना व बद बख़्ताना मिर्ज़ा जी का झूठ ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की बाबत सुनिये और सोचिये कि कैसी ख़बीस रूह़ मिर्ज़ा जी के बदन में घूसी हुई थी और इब्लीस मलऊ़न उन से क्या क्या कहलवाता चला जाता था। ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की बाबत मिर्ज़ा ने लिखा :

यूरोप के लोगों को जिस क़दर शराब ने नुक़्सान पहुंचाया है उस का सबब तो यह था कि ईसा अ़लैहिस्सलाम शराब पिया करते थे, किसी बीमारी की वजह से या पुरानी आ़दत की वजह से। (कशतीये नूह़ : ५६ ह़ाशिया)

कोई इन्तिहा है मिर्ज़ा की किज़्ब बयानी (झूठ) और बुहतान तराज़ी (मिथ्यादोषारोपण) की कि यूरोप के करोड़ों बेदीनों की शराब ख़ोरी का ज़िम्मेदार उन्होंने अल्लाह के रसूल ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को ठहराया, कहते हैं कि ह़ज़रत ईसा शराब पिया करते थे इस लिये यूरोप के लोग शराब पिया करते हैं।

तो यह थे मिर्ज़ा गुलाम अह्मद क़ादियानी जिन्हें शैतान और अंग्रेज़ों ने नबी बनाकर खड़ा किया था वह लाखों बेगुनाह नव निहालों के बे दर्दाना क़त्ल की ज़िम्मेदारी ह़ज़रत मूसा पर नाज़िल होने वाली शरीअ़त पर डालते हैं, और यूरोप के करोड़ों बे दीन शराबियों की शराबनोशी का ज़िम्मेदार ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को क़रार देते हैं और क़ुर्आन के हवाले देदेकर इन्तिहाई खुला हुआ झूठ बोलते हैं।

एक अहम सुवाल :

अब सुवाल यह है कि जब मिर्ज़ा ऐसे ईमान फ़रोश और दीन व मिल्लत के ऐसे ग़द्दार थे जिस की गवाही उनकी हज़ारों तहरीरें दे रही हैं तो इस के बावजूद बहुत से लोग उनके बहकाने में क्यों आए और उनके जाल में क्यों फंसे हुए हैं तब तो एक मुसलमान को भी मिर्ज़ा से अ़क़ीदत न होनी चाहिए थी मगर देखा यह जा रहा है कि क़ादियानियत फैल रही है बहुत से मुसलमान उसका शिकार होते जा रहे हैं आख़िर इस की वजह क्या है?

जवाब में हमारी गुज़ारिश यह है कि इसके दो ख़ास सबब हैं जिन पर फ़ोरी तौर पर खुसूसी तवज्जुह देने की ज़रूरत है – पहला सबब तो यह है कि आ़म तौर पर लोग क़ादियानियत की अस्लीयत से लाइ़ल्म (अपरिचित) हैं और उसका सिर्फ़ यही एक इलाज है कि तह़रीर व तक़रीर के जरीअ़े मुसलमानों को और ख़ास तौर पर अनपढ़ मुस्लिम अ़वाम को क़ादियानियत की अस्लीयत से बाख़बर (अवगत) कराया जाए।

और दूसरी जानिब नबीये अक़रम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के ख़ातमन्नबिय्यीन यानी आख़िरी नबी होने के तफ़सीली दलाइल (तर्क) की आ़म इशाअ़त की जाए (खूब फैलाया जाए) इस काम के लिए क़सबात और दीहात के दौरे भी किये जाएं और लिट्रेचर भी छाप कर अ़वाम (पब्लिक) में पहुंचाया जाए।

दूसरा सबब क़ादियानीयत फैलने का यह है कि क़ादियानियों ने अपने बातिल दीन की तब्लीग़ व इशाअ़त (प्रसारण) के लिए ईसाई मिशनरियों वाला तरीक़–ए–कार (कार्य पद्धति) अपनाया है इस तरह़ कि वह स्कूल खोलते हैं जिनमें ग़रीब बच्चों के लिए मुफ़्त तालीम का इन्तिज़ाम करते हैं, मुफ़्त ड्रेस मुहैया करते हैं दुन्यवी तालीम के साथ कल्मा, नमाज़, और आ़म तौर से पढ़ी जाने वाली दुआ़एं सिखाते और क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ाते हैं। बच्चों के सरपरस्त और आस पास के मुसलमान देखते हैं कि बच्चों को दुन्यावी तालीम के साथ दीन की तालीम भी दी जा रही है तो इस गिरोह से उनके दिल में अ़क़ीदत क़ाइम हो जाती है । इसी तरह़ क़ादियानी ग़रीबों के लिए मुफ़्त या बहुत ही कम क़ीमत पर दवा व इलाज का बन्दोबस्त भी करते हैं। ज़ाहिर है यह सब वह तरीक़े हैं जिन के ज़रीअ़े लोगों को अपना मुअ़तक़िद बनाना आसान हो जाता है। पस अगर हम क़ादियानीयत के कुफ़्र से मुसलमानों और ख़ासतौर पर ग़रीब मुसलमानों को महफ़ूज़ रखना अपना फ़र्ज़ जानते हैं तो यह सब काम हम को भी करने होंगे इसी के साथ यह भी ज़रूरी है कि जो अहले ह़क़ अपनी जगह क़ादियनीयत की तर्दीद व इब्ताल का फ़र्ज़ अंजाम दे रहे हों उनको और उनके काम को क़द्र की निगाह से देखा जाए और जहां और जिस मह़ले पर उनकी मदद की ज़रूरत हो मुम्किन हद तक उन का तआ़वुन किया जाए, अल्लाह हम सब को इस काम के लिए खुसूसी तौर पर फ़िक्रमन्दी की निअ़मत से नवाज़े और सलीक़ा और इख़्लासे नीयत के साथ दीनी ख़िदमत अंजाम देने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

●●●

# इस्लाम का अक़ीद-ए-रिसालत

और

# हिन्दू हज़रात का अवतारवाद

अबू मर्गूब

इस्लाम का अक़ीद-ए-रिसालत बहुत ही वाज़िह (स्पष्ट) है। यह किसी फ़ल्सफ़े का ताबिअ़ (आधीन) नहीं है। यह तो किताब (कुर्आन) और सुन्नत (रसूल के कथन) से साबित है। जिस की समझ में आजाए मान कर अपना भला चाहे न समझ में आए और न माने तो इस्लाम एअ़लान (घोषित) करता है कि उस जैसा कोई घाटा नहीं अब अगर न मानने वाला कहता है कि कोई घाटा नहीं बल्कि मान लेने वाला ही घाटे में रहेगा तो वह जाने और उसका काम जाने। टकराव उस वक़्त होता है जब रिसालत पर ईमान लाने वाले के कामों में ईमान न लाने वाला रूकावटें डालता है, ऐसी सूरत में ईमान वाला अपने को, अपने सम्बन्धियों को, अपने समाज को हमेशा की तबाही से बचाने के लिये जान पर खेल जाता है लेकिन उस दाइमी (स्थायी) घाटे पर राज़ी नहीं होता।

यह बात किताब व सुन्नत से साबित है कि रसूलों का काम अल्लाह की मआ़रिफ़त (ज्ञान) और उस के अहकाम व हिदायत (आदेश तथा उपदेश) *अल्लाह के बन्दों* तक पहुंचाना है और बन्दों का काम रसूलों को रसूल मानकर और उन के सन्देशों को अपना कर फ़लाह (कल्याण) हासिल करना है। रसूल और नबी इस्तिलाही अल्फाज (पारिभाषिक) (शब्द) है, इन का तर्जुमा (अनुवाद) मुम्किन (सम्भव) नहीं बस समझनें के लिये सन्देष्ट या ईशदूत कह सकते है। यह भी किताब व सुन्नत से साबित हैकि सब से पहले नबी पहले इन्सान हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम और सब से आख़िर में हज़रत मुहम्मद (सल्ललाहु अ़लैहि व सल्लम) रसूल हो कर आए।

बीच में अन गिनत नबी और रसूल आए, कुछ के नाम किताब व सुन्नत में बताए गये और बहुतो के नाम नहीं बताए गये जिन के नाम बताए गये उन को अल्लाह का रसूल और नबी मानना अनिवार्य है। जिन के नाम नहीं बताए गये उन को इसी तरह मानना आवश्यक है कि जो भी नबी और रसूल हुए हैं हम सब को मानते है।

यह बात भी किताब व सुन्नत से साबित है कि मानना आदर करना तो सब का ज़रूरी है लेकिन इत्तिबाअ़ (अनुकरण) अब सिर्फ़ आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का है और बिना किसी इख़्तिलाफ़ के सारे मुसलमान इस बात को मानते है कि अब नजात (मोक्ष) सिर्फ़ और सिर्फ़ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी में है।

अब ध्यान दीजिए हिन्दू हज़रात के अवतार वाद पर, वेदों में अवतार का ज़िक (उल्लेख) नही मिलता, हिन्दू पंडित हज़रात वेदों को ईशवाणी (खुदा का कलाम) मानते है। पंडितों का अक़ीदा है कि धर्म सम्बन्धी सभी ज़रूरी बाते वेदों में आ चुकी, जिन को वेद के विद्वानों ने बड़े विस्तार से बयान कर दिया, जो ब्राहमण, उपनिशाद अर्णियक वगैरह में महफ़ूज़ है। विद्वानों का बस इतना काम है कि वह वेद के मुताबिक उन लोगों को धर्म पर चलाते रहे। अस्ल में वैद पर चलना सिर्फ़ पंडितो का काम है या किसी हद तक घत्री और वेश भी और शूद्रों और औरतों के लिये तो वेद है ही नही। वेदों में इस्लामी रिसालत व नुबुव्वत का ज़िक्र नहीं है।

आर्य समाजियों के सिवा सनातन धर्मियोंका अवतार वाद का अक़ादी है। लेकिन इन का यह अक़ीदा इतनी तफ़्सील से बयान हुआ है और उस के जो गीता पुराण से दलाइल (तर्क) बयान हुए है, और अवतारो के जो क़िस्से बयान हुए हैं उन की मौजूदागी में यह कहने की बिल्कुल मुंजाइश नही है कि यह रिसालत की बिगड़ी हुई शक्ल है।

कछुवा अवतार, मछली अवतार, सुअर अवतार, नृसिंह अवतार, वग़ैरह पर रिसालत का तसव्वुर ही बे अदबी हे। रामा अवतार और कृष्णा अवतार में गुजांइश थी कि कहा जाता कि वह रसूल रहें होगें लेकिन उन कीजो तफ्सीलात रामायण, महाभारत और गीता में बयान हुई है। उन सब को नज़र अन्दाज कर के कैसे कह दें कि वह रसूल रहें होगें । न किसी शरीअ़त का ज़िक है न वहूये इलाही का पता है, न क़ियामत की ख़बर है, न हिसाब किताब के दिन की इत्तिलाअ़ है, न दाइमी जन्नत व दोज़ख का जिक है फिर किस तरह उन को रिसालत से जोड़ा जा सकता है।

फिर हिन्दुओं का एक मुअ़तबर तब्क़ा यानी आर्य समाजी इन सब अफ़्सानवी बातों की तस्दीक़ नहीं करता

उसका खयाल है कि यह सब महज़ तख़य्युलात हैं।

जिन लोगों ने अवतार वाद को माना है उनके नज़दीक सारे अवतार गुज़र चुके हें बस एक कल्कि अवतार बाकी है जिस के आने में अभी लाखों साल बाक़ी है। इस अवतार में भी इतने इख़्तिलाफ़ात (मत भेद) हुए है कि सच्ची बात यह है कि एक हिन्दू पूरे यक़ीन के साथ काल्कि के इन्तिज़ार में नज़र नहीं आता । बे शक गीता में आया है।

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम् सजाम्यहम् ।।

अर्थातः जब कभी धर्म –न्याय का पतन होता है और अधर्म प्रधानता प्राप्त कर लेता है तो मै जन्म लेता हूँ।

हम यहां हिन्दू फल्सफ–ए–इलाहियात पर बहस करना नहीं चाहते बस इतना कहेंगें कि हिन्दू धर्म की बुन्याद फ़लसफ़े (दर्शन) पर है। उनके फ़लसफ़े ने ख़ुदा के बारे में जो तसव्वुर दिया यह अवतार वाद और अवतारों का तख़य्युलाती बयान उसी की ताईद व तस्दीक़ में है वरना समुद्र मथन में कछवे का रोल, पूथ्वी को उबारने में सुअर अवतार का रोल वगैरह का साफ सुथरें अक़ीद–ए–रिसालत से क्या तअल्लुक ?

हमारे बहुत से भाई एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहे है कि वह हिन्दु भाइयों को समझांए कि तुम जिस काल्कि अवतार के इन्तिज़ार में हो वह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व वसल्लम) की शक्ल में ५७० ई० में हो चुका अब तुम उन पर ईमान लाओ। यह बात तो हर वाक़िफ़ कार मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि वह अपनी सकत व ताक़त भर दुन्या के हर फ़र्द तक इस्लाम पहुंचाए और बताए कि हमेशा वाली ज़िन्गदी में अल्लाह के ग़ज़ब और जहन्नम के अज़ाब से बचने के लिये और अल्लाह की रज़ा और जन्नत का दाइमी इनआम हासिल करने के लिये हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान लाना ज़रूरी है, लेकिन यह कि हम उन के सामने पहले अवतार वाद का इख़्तिलाफी मसअला रखें फिर कल्कि अवतार के अफ़साने पर नबीए आख़िरूज़्ज़मा की सीरत ज़बरदस्ती फिट करें यह दीन का काम नही बल्कि एक बातिल फल्स्फ़े की ताईद और हद दर्जे बे.दीनी है। फिर कल्कि अवतार के अफ़साने में कहीं भी कल्कि पर ईमान लाने और उन की शरीअत अपनाने की भूले से भी दावत नही है। तो जो शख़्स काल्कि अवतार का गीता, भविष्य पुराण, काल्कि पुराण के जरीअे इल्म रखता होगा अगर किसी मुसलमान के समझाने से मान भी लेगा तो वह यही कहेगाः

वही जो मस्तवीये अर्श था खुदा हो कर।

उतर पड़ा है मदीने में मुस्तफ़ा हो कर।।

अब हम ज़रूरी समझते है कि काल्कि अवतार के सफ़साने की कुछ झल्कियॉं कल्कि पुराण से आप के सामने रख दें फिर आप को इख्तियार है कि आप सीरते नबवीया अला साहिबि हस्सलातु व रसलाम को कल्कि फ़साने पर मुंतबिक करते फिरे या इसे बेदेनी समझते हुए इस से गुरेज़ करें और दूसरों को भी इस बे दीनी से रोकें।

## काल्कि अवतार काल्कि पुराण से (संस्कृत से अनुवाद)

सूतजी बोले– हे मुनीश्वरो ! वहां जाकर वे सभी देवता ब्रह्माजी की आज्ञा से उनके समक्ष बैठ गये। फिर उन्होंने कलि के दोषों से धर्म की जो हानि हुई थी, उसका सम्पूर्ण वृत्तान्त निवेदन किया। दुखित हृदय वाले देवताओं के वचन सुनकर ब्रह्माजी बोले– मैं भगवान विष्णु की आराधाना करके तुम्हारा सब मनोरथ सिद्ध करता हूं। यह कह ब्रह्माजी ने देवताओं को साथ लिया और गोलोक निवासी भगवान् श्री हरि की सेवा में जा पहुंचे। वहां उन्होंने स्तुति की और फिर देवताओं की कामना निवेदित की।

पण्डुरीकक्ष भगवान् ने देवताओं का दुखगाथा सुनकर ब्रह्माजी से कहा– हे विभो ! मैं शम्भल ग्राम में विष्णुयश के यहां, उनकी पत्नी सुमति के गर्भ से उत्पन्न हूंगा। ब्रह्मन् ! हम चारों भाई मिलकर उस कलि को नष्ट कर डालेंगे। अब–सभी देवताओं को अपने–अपने बांधवों सहित पृथिवी पर अवतार लेना है। मेरी प्रिया लक्ष्मी सिंहल द्वीप में महाराज वृहद्रथ की रानी कौमुद्री के गर्भ से उत्पन्न होगी, उसका नाम पद्मा होगा। मरू और देवापि नामक दो राजाओं को भी पृथिवी पर स्थापित करूंगा। हे देवगण। अब तुम भी शीघ्र ही अपने–अपने अंश के सहित भूमण्डल पर अवतार धारण करो।

हे विभो ! जब पृथिवी पर सतयुग का पुनः आविर्भाव कर दूंगा और धर्म की पूर्ववत् स्थापना तथा कलिकाल रूपी नाग को नष्ट कर डालूंगा, तब पुनः अपने इस लोक में आ जाऊंगा। देवताओं से घिरे हुए ब्रह्माजी ने भगवान की यह आज्ञा सुनकर ब्रह्मलोक को प्रस्थान किया और सब देवता अपने स्वर्णलोक को चले गये। हे ऋषियो ! अपनी महिमा से महिमान्वित भगवान् विष्णु इस प्रकार सम्भल ग्राम में स्वयं अवतार धारण करने के लिए प्रवृष्टि हुए।

भगवान् श्रीहरि विष्णुयश के

द्वारा उनकी पत्नी के गर्भ में प्रविष्ट होकर भ्रूण रूप हुए। यह जानकर कि विष्णु पृथिवी पर आ गये हैं। सभी सरिता, समुद्र, पर्वत, स्थावर जंगल प्राणी, ऋषिगण और देवगण आदि सभी प्रसन्न हो उठे। तथा सभी जीव विभिन्न प्रकार से हर्ष प्रकट करने लगे, पितर नाचने लगे और अप्सराएं नृत्य करने लगीं। वैशाख शुक्ल द्वादशी के दिन भगवान ने अवतार लिया। उनको प्रकट होते देखकर माता पिता पुलकित हो उठे।

भगवान् के प्रकट होने पर महाषठी धात्री हुई। अम्बिका ने बाल छेदन किया, गंगाजी ने अपने जल से गर्भक्लेद को हटाया और सावित्री ने भगवान् के शरीर पर मार्जन किया। कृष्ण जन्म के समान ही अनन्त भगवान के अवतार लेने पर बसुन्धरा की धारा प्रवाहित कर दी, मातृकाओं ने मंगलचार किया। सम्भल ग्राम में अवतरित होने का समाचार जानकर ब्रह्मा जी ने वायु को आज्ञा दी कि तुम सूतिकागार में जाकर भगवान से इस प्रकार कहा कि आपके चतुर्भुज स्वरूप का दर्शन तो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है, अतः हे नाथ ! इस चतुर्भुज रूप को छोड़कर मनुष्य रूप बनाए। सुशीतल, सुखद, सुगन्धित वायु ने यह वचन सुनकर द्रुतिगति से सूतिकागार में जाकर भगवान् से ब्रह्माजी की प्रार्थना को निवेदन किया।

ब्रह्माजी का सन्देश प्राप्त होने पर भगवान् ने अपना स्वरूप दो भुजाओं से युक्त बना लिया। यह लीला देखकर माता–पिता विस्मित रह गये। प्रभु की माया से मोहित हुए माता पिता ने समझा भ्रम से ही हमने अपने पुत्र को चार भुजा देखा था। फिर उस समय शम्भल ग्राम में सभी पाप नष्ट होकर नित्य नवीन मंगलाचार होने लगे। भगवान को पुत्र रूप में प्राप्त करके पूर्णकामा सुमति ने ब्राह्मणों को एक सौ गौयें दान कीं। पवित्र हृदय वाले विष्णुयंशजी ने अपने पुत्र की मंगल की कामना की ऋक् यजु और सामवेदी ब्राह्मणों को नामकराण के लिए नियुक्त किया। भगवान् के शिशु रूप का दर्शन करने के लिए परशुराम कृपाचार्य, वेदव्यास और द्रोणाचार्य जी के पुत्र अश्वत्थामा भिक्षुक वेश में वहां आए।

सूर्य के समान तेजस्वी उन ईश्वर आगन्तुकों को देखकर द्विवजर विष्णुगण ने उनका पूजन किया। भले प्रकार सुपूजित हुए वे मुनिगण श्रेष्ठ आसनों पर सुखपूर्वक विराजे तब उन्होंने अपने पिता की गोद में बैठे हुए भगवान् के दर्शन किए। उन ज्ञानी मुनीश्वरों ने मनुष्य रूप में शिशु स्वरूप भगवान् को नमस्कार किया और तब उन्होंने जान लिया कि उनका सत्कार करते हुए उनका कल्कि नाम रखकर प्रसन्न मन से वे मुनीश्वर चले गए। फिर कंसारि भगवान् माता सुमति के द्वारा भले प्रकार का पालितलित होते हुए शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त होने लगे।

भगवान् कल्कि के उत्पन्न होने से पहले माता पिता को प्रिय, गुरू ब्राह्मण का हित करने वाले उनके तीन भाई और उत्पन्न हो चुके थे। उनके नाम कवि, प्राज्ञ और सुमन्त्रक थे। भगवान के ही अंश से उनकी जाति में, उनके अनुगामी, साधु स्वभाव वाले तथा धार्मिक प्रवृत्ति वाले गर्ग्ग, भर्ग्य और विशाल आदि भगवान् से पहिले ही उत्पन्न हो चुके थे। विशाखयूप नरेश द्वारा परिपालित यह सभी ब्राह्मण भगवान् का दर्शन करके सम्पूर्ण पाप–ताप से छूटकर अत्यन्त हर्षित हुए। फिर अपने कमलनयन एवं सर्वगुण सम्पन्न पुत्रको अध्ययन करने के योग्य वल वाला हुआ देखकर विष्णुयश उनसे बोले । हे पुत्र मैं तुम्हारा श्रेष्ठ ब्रह्म संस्कार, उपनयन और सावित्री का श्रवण कराऊंगा, फिर तुम वेदाध्ययन करना।

(पृष्ठ ३० का शेष)

को उन पर एक दर्जा प्राप्त है और अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।

यह अतिरिक्त जिम्मेदारियां जो पुरूष को औरत पर एक दर्जा दे रही है, कुछ धार्मिक पहलुओं से हैं। यह मानवता या आचरण की दृष्टि से किसी श्रेष्ठता को नहीं दर्शाती, न इससे किसी का सम्प्रभुत्व या किसी का आश्रित होना ही सिद्ध किया जा सकता है। यह कार्य विभाजन का एक नक्शा है जिसे अल्लाह ने दिया है। जो स्वभाव का पैदा करने वाला है और वही जानता है जो औरत के हक में बेहतर है और मर्द के हक में बेहतर है। वही हक है जब वह घोषणा करता है–

"हे लोगो अपने पालनहार का डर रखो, जिसने तुम्हें एक ही जीव से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और उन दोनों में बहुत से पुरूषों और स्त्रियों को फैला दिया।" (अन–निसा)

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

# अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आजमी

### इस्लामी देशों को परमाणु तकनीक देने को तैयार है ईरानः अहमदीनेजाद

ईरान अन्य इस्लामिक देशों के साथ शांतिपूर्ण कार्यों के लिए परमाणु तकनीक देने के लिए तैयार है। ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद ने कहा कि उनका देश कभी भी देश व्यापक जनसंहार के हथियारों का निर्माण नहीं करना चाहता है लेकिन अन्य इस्लामिक देशों की जरूरतों के मुताबिक वह उन्हें परमाणु जानकारी देने के लिए तैयार है। न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्रकी महासभा के दौरान तुर्की के प्रधानमंत्री के साथ मुलाकात कें दौरान श्री अहमदीनेजाद ने यह बात कही।

### पाक में मदरसों का पंजीकरण कराने से इन्कार

पाकिस्तान के हजारों मदरसों ने सरकार के पंजीकरण कराने संबंधी आदेशों को मान ने से इन्कार कर दिया है। मदरसों ने सरकार के इस निर्णय को दमनकारी कदम करार दिया है। पाक में संचालित मदरसों के संगठन इत्तिहाद तंजीमाते मदारिस दीनिया के प्रवक्ता मौलाना मोहम्द हनीफ जालधंरी ने कहा कि यह कानून वर्तमान स्वरूप में उन्हें मंजूर नहीं है क्योंकि यह पूरी तरह से दमनकारी है। हमने इस कानून के तहत किसी भी मदरसे का पंजीकरण नही करने का निर्णय लिया है। नए नियमों के तहत सरकार ने इन मदरसों में पढ़ने वाले करीब १४ सौ विदेशी छात्रों को वापस जाने के आदेश दिए हैं लेकिन उन्हें देश छोड़ने क लिए अभी अंतिम तिथि निर्धारित नहीं की गई है। मौलवी जालंधरी ने कहा कि सराकर ने सिर्फ मदरसों को ये आदेश दिए हैं। जबकि निजी संस्थानों और स्कूलो के लिए ऐसे कोई नियम नहीं हैं।

### पचास साल में दस पुरुष पर रह जाएगी एक महिला

ई.पी.ओ.एस, हेल्थ कंसलटेन्ट इण्डिया द्वारा कुछ समय पहले किये गये सर्वेक्षण में बताया गया है कि हरियाणा में यदि महिला लिंगानुपात इसी प्रकार गिरता रहा तो अगले २५ सालों में राज्य में प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या घटकर ५०० पर आ जाएगी, ४० वर्षो में यह २५० होगी और ५० सालों में १०० रह जाएगी।

हरियाणा के स्वाथ्य विभाग तथा रीजनल रिसोर्स सेन्टर 'ममता' के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित इस कार्यशाला में बताया गया कि १९९१ के जनगणना के अनुसार प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या ८६५ थी जो कि २००१ में घट कर ६८१रह गई। इतना ही नहीं शिशुओं का लिंगानुपात ८७६से घट कर ८१६ पर आ गया है।पंजाब में स्थिति और भी खराब है। वहां शिशु लिंग अनुपात १९९१में ८७५ या जो कि २००१ में गिर कर ७९३पर पहुच गया। कार्यशाला में बताया गया कि महिलाओं की कम संख्या के कारण अब स्थिति यह हो गई है कि हरियाणा के कई जिलो में बहुपति प्रथा का चलन शुरू हो गया है। एक महिला कई भाइयों की पत्नी बन कर रह रही है। यह व्यवस्था एड्स जैसी बीमारियों का खतरा पैदा करती है। वर्ष १९७१के राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चे पैदा करने की दर प्रति महिला ७.१५ थी जो कि देश मे सर्वाधिक थी लेकिन १९९१ में यह घट कर ४.१७ पर आ गई है।

हरियाणा की स्वास्थ्य मन्त्री ने सारे हालात पर दुख व्यक्त करते हुए कहा कि सबसे बुरी बात यह देखने में आ रही है कि सबसे अधिक दुख महिलाओं से ही महिलाओं को मिलता है। दहेज को लेकर घरों में सबसे ज्यादा परेशानी सास,व नन्दें ही खड़ी करती हैं। उन्होने कहा कि यह भी हरियाणा के लिये शर्म की बात है कि यहां के तीन जिले आलम्बा, कुरूक्षेत्र व सोनीपत देश के उन दस जिलो में हैं जहां महिलाओं का लिंगानुपात सब से कम है। इनके अलावा इसं प्रकार के छह जिले पंजाब में तथा एक तमिलनाडु में है।

### हरियाणाः गिरता लिंग अनुपात

1– अगले 25 सालों में प्रति 1000पुरूषों पर केवल 500 महिलांए रह जांएगी

2– लिंग अनुपात अगले 40 सालों में 250 और 50 सालों मे केवल 100 रह जाएगा

3– 1991में लिंग अपुपात 865था जो 2001 में घटकर 861 हो गया है

4– शिशु लिंग अनुपात में पिछली जनगणना की तुलना में इस बार 60अंको की गिरावट, 1991 में 879 था जो 2001 में 819 हो गया है

5– वर्ष 1971 में राजय के ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चा पैदा करने की दर प्रति महिला 7.15 थी जा 1991 में घटकर 4.17 हो गई है

6– हरियाणा पंजाब के बाद दूसरा सबसे कम लिंग अनुपात वाला राज्य है